भारत सरकार
GOVERNMENT OF INDIA
राष्ट्रीय पुस्तकालय, कलकत्ता ।
NATIONAL LIBRARY, CALCUTTA.

वर्ग संख्या
Class No. H 920

पुस्तक संख्या
Book No. N 794

रा० पु०/N.L.-38.

GMGIP (Pub. Unit), Sant.—S20—8CRL/85—16-12-85—75,000.

रा० पु०-44
N. L.-44

भारत सरकार
GOVERNMENT OF INDIA
राष्ट्रीय पुस्तकालय
NATIONAL LIBRARY
कलकत्ता
CALCUTTA

अंतिम अंकित दिनांक वाले दिन यह पुस्तक पुस्तकालय से ली गई थी। दो सप्ताह से अधिक समय तक पुस्तक रखने पर प्रतिदिन 6 पैसे की दर से विलम्ब शुल्क लिया जायगा।

This book was taken from the Library on the date last stamped. A late fee of 6 P. will be charged for each day the book is kept beyond two weeks.

GMGIP (Pub. Unit), Sant.—S 7—4LNL/802—20-8-80—250,000.

बड़ाबाजार के कार्यकर्त्ता—
स्मरण एवं अभिनन्दन

सम्पादक :

राधाकृष्ण नेवटिया

सह-सम्पादक :

जुगलकिशोर जैथलिया

रमेश चंद जैन

प्रकाशक :

श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय
१५६ महात्मा गांधी रोड
कलकत्ता - ७०० ००७

NATIONAL LIBRARY
NO. 49249
DATE 5-6-86
CALCUTTA

□

सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रथम आवृत्ति :
२९ सितम्बर १९८२, बुधवार
मूल्य : १००)

□

मुद्रक :

जवाहिर प्रेस
१६१/१ महात्मा गांधी रोड
कलकत्ता - ७०० ००७

एसकेज
८ शोभाराम बैसाख स्ट्रीट
कलकत्ता - ७०० ०७०



सादर नमन !

हिन्दूत्व के प्रबल उद्घोषक

स्वामी विवेकानन्द

(जन्म-स्थल : जोड़ासाकू, बड़ाबाजार)

ॐ

प्रकाशकीय........

१९१८ ई० में स्थापित श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय की गौरवपूर्ण प्रकाशन की सारस्वत परम्परा में **"बड़ाबाजार के कार्यकर्त्ता — स्मरण एवम् अभिनन्दन"** ग्रन्थ का अभिनव पुष्प आप के हाथों में सौंपते हुए हमें अत्यन्त हर्ष की अनुभूति हो रही है।

एक-एक व्यक्ति को केन्द्रित कर रचे गए स्मृति एवम् अभिनन्दन ग्रन्थों की समाज में बहु-प्रचलित परम्परा है किन्तु प्रत्येक स्थान पर विकास के शिखरों से नींव तक जुड़े हुए एवम् अपने-अपने स्थान पर दृढ़तापूर्वक डटे हुए समर्पित कार्यकर्त्ताओं की एक लम्बी शृंखला अत्यन्त महत्वपूर्ण होते हुए भी बाह्य दृष्टि से ओझल रहती है। बड़ाबाजार क्षेत्र के विगत दो शताब्दियों के उज्ज्वल इतिहास एवं कार्यकर्त्ताओं की दीर्घ अनमोल परम्परा को सर्वसाधारण के समक्ष प्रकट करने की उत्कट इच्छा कुमारसभा पुस्तकालय के संस्थापक एवम् सुप्रसिद्ध समाजसेवी श्री राधाकृष्ण नेवटिया बहुत समय से अपने अन्तर में संजोये हुए थे। कुमारसभा के कार्यकर्त्ताओं के सामने उन्होंने अपनी योजना रखी। कार्यकारिणी समिति ने विचार-विमर्श के बाद इस ग्रन्थ के प्रकाशन की महती आवश्यकता को अनुभव करते हुए योजना को सहर्ष स्वीकार किया एवं इसे रूपायित करने का दायित्व श्री नेवटिया के सक्षम हाथों में सौंप दिया। श्री नेवटिया विगत ६६ वर्षों से बड़ाबाजार की सभी विकास गतिविधियों से एकरस रहे हैं, उन्होंने इस दायित्व को स्वीकार किया एवं प्राणपण से इसमें जुट गए।

ग्रन्थ के लिए आवश्यक एव प्रामाणिक सामग्री जुटाने का कार्य असंभव तो नहीं पर दुष्कर अवश्य था, जिसका प्रधान कारण था कार्यकर्त्ताओं की अपनी सेवाओं के प्रकाशन के सम्बन्ध में सहज उदासी। दिवंगत कार्यकर्त्ताओं की सेवाओं का विवरण एकत्रित करने का कार्य तो और भी ज्यादा कठिन था। हमारा अनुमान था कि इस कार्य में हमें कम से कम ३/४ वर्ष लग जायेंगे, किन्तु श्री राधाकृष्ण नेवटिया की लगन एवं अथक परिश्रम तथा श्री जुगलकिशोर जैथलिया, श्री रमेश जैन, श्री अमर कुमार झिगन, श्री सत्यनारायण त्रिपाठी 'मंगल' एवम् अन्य मित्रों के सहयोग से ग्रन्थ लगभग १८ मास में पूर्ण होकर आपके समक्ष प्रस्तुत है।

ग्रन्थ के प्रकाशन हेतु हम उन सभी सहयोगियों, परामर्शदाता समिति के सदस्यों तथा दानदाताओं के प्रति हृदय से कृतज्ञ हैं, जिनके सहयोग से ही यह ऐतिहासिक ग्रन्थ हम आपके समक्ष प्रस्तुत कर पाये हैं।

समाचार-पत्रों के संवाददाताओं, सम्पादकों एवं संचालक-वृन्द को भी मैं धन्यवाद देता हूँ, जिन्होंने ग्रन्थ प्रकाशन की सभी सूचनाएँ यथा-समय यथा-स्थान छाप कर सारे कार्य को पूर्णता की ओर अग्रसर कराया। साथ ही जवाहिर प्रेस एवं एसकेज भी बधाई के पात्र हैं, जिन्होंने इस बिजली के संकट काल में भी पूरा सहयोग कर इस ग्रन्थ की सुन्दर छपाई की है।

इस ग्रन्थ का विमोचन सुप्रसिद्ध साहित्यकार एवं उद्योगपति श्री लक्ष्मीनिवास बिड़ला के कर-कमलों से हो रहा है, यह हमारे लिए और भी हर्ष का विषय है। वन्दे मातरम्!

कलकत्ता,
बुधवार, २९ सितम्बर १९८२

शिवरतन आसू
मंत्री

अपनी बात ....

बहुत पहिले एक सपना देखा था मैं ने और उसे संजो रखा था वर्षों से। बड़ाबाजार के सार्वजनिक जीवन में कई ऐसे महत्वपूर्ण कार्यकर्त्ता हुए हैं, जिन्हें मैं ने समीप से देखा, समझा और उनका सहयोगी भी बना। आज उन में से कुछ नहीं है, कुछ हैं; किन्तु उन के कार्य आज भी मन को सन्तोष देते हैं। मेरा सपना था—उनमें से जो दिवंगत हो गए हैं, उन का स्मरण किया जाय और जो हमारे बीच मौजूद हैं, उन का अभिनन्दन किया जाए। इस सपने में न तो कोई औपचारिकता का पुट था और न ही कोई व्यक्तिगत आग्रह। मैं ने देखा था कि आए दिन लोगों के स्मरण अथवा अभिनन्दन में बड़े-बड़े ग्रन्थ निकलते रहते हैं, जिनमें से अधिकांश का आयोजन व्यक्तिगत स्तर पर या व्यक्तिगत व्यय से होता है। वैसे इस में भी मुझे हर्ष ही होता था, पर मन में बार-बार यह बात उठती थी कि ऐसे कार्यकर्त्ताओं का जो इतना व्यय नहीं कर सकते, न उनके उत्तराधिकारी ही इसका दायित्व वहन कर सकते हैं—उनकी सेवाओं की याद कैसे सुरक्षित होगी? उन प्रदीपों की यशोगाथा कौन कहेगा, जो जीवन भर जलते रहे ताकि उन का देश और समाज आलोकित रहे। तभी एक दिन भाई श्री भगवती प्रसाद खेतान ने भी ऐसी ही चर्चा चला दी। उत्साह जगा, उल्लास हुआ कि मैं अकेला नहीं, और भी लोग जो समाज में अग्रणी हैं, वे मेरे समान ऐसा ही स्वप्न संजोए हुए हैं।

स्वाभाविक ही मेरा सपना अब साकार होने के लिए मचल उठा। सर्वश्री भाई भगवती प्रसाद के साथ-साथ अभिमन्यु मुवालका, पुरुषोत्तम दास हलवासिया, प्रभुदयाल हिम्मतसिंहका, रामचन्द्र दम्मानी एवं प्रो० रामलगन सिंह आदि ने भी सहयोग का हाथ बढ़ाया एवं सब के सम्मिलित उत्साह से ग्रन्थ प्रकाशन के लिए एक समिति का गठन हुआ। आज आप के हाथों में ग्रन्थ की प्रतियाँ देख कर मुझे बड़ा सन्तोष है।

बड़ाबाजार कलकत्ते का एक भौगोलिक अंश मात्र ही नहीं है, वस्तुतः यह सारे देश की हिन्दी भाषी जनता का मर्मस्थल है, इसका इतिहास भी वैसा ही महिमा मंडित है। केवल व्यवसाय का ही नहीं, वरन् हिन्दी-हिन्दू-हिन्दुस्थान की एकता के साधना चक्र का भी यहीं से प्रवर्तन हुआ। हिन्दी का पहला पत्र 'उदन्त मार्तण्ड' भी १८२६ ई० में यहीं से प्रकाशित हुआ। जब भारत के हिन्दी प्रदेशों में अभी नवचेतना का सुप्रभात ही हुआ था, तब बड़ाबाजार में चेतना रूपी सूर्य मध्याह्न पर आज्वल्यमान था। यहाँ कैसे-कैसे दिग्गज साहित्यिक महारथी हुए हैं, उनका वर्णन इस ग्रन्थ के प्रथम खंड में पढ़ कर आप आनन्द विभोर हुए बिना नहीं रह सकेंगे। भारत के प्रथम महिमामय राष्ट्रपति राजेन्द्र बाबू, ज्वलन्त विद्रोही एवं मौलिक चिन्तक डॉ० राममनोहर लोहिया, राष्ट्रकवि माधव शुक्ल, पद्मराज जैन 'रानीवाले', धर्मप्राण 'भाईजी' हनुमान प्रसाद पोद्दार आदि की प्रारंभिक कार्य-भूमि यही बड़ाबाजार ही तो थी। हिन्दी प्रदेशों में स्वतंत्रता के पूर्व क्रान्ति का जो बिगुल बजा था, उसे बड़ाबाजार ने ही अपने सबल कन्धों पर उठाया था। क्रान्तिकारियों के हाथों में जो माउजर (पिस्तौल) चमकता था, वह बड़ाबाजार की देन था और उन निर्भीक योद्धाओं में से आज भी सर्वश्री भाई प्रभुदयाल हिम्मतसिंहका एवं कन्हैयालाल चितलांगिया हमारे बीच मौजूद हैं।

अतः ऐसे सब व्यक्तियों एवं संस्थाओं की चर्चा केवल विगत इतिहास की दृष्टि से ही नहीं, भविष्य की पीढ़ी के योग्य मार्गदर्शन एवं प्रेरणा के लिए भी नितान्त आवश्यक है। प्रस्तुत ग्रन्थ इसी दिशा संकेत का सशक्त प्रतीक है। इसको हमने चार खंडों में संजोया है। यथा—साहित्यकार एवं कलाकार, संस्कृति के उन्नायक, लोकतन्त्र के सजग प्रहरी और कर्मठ समाजसेवी। कुल मिला

कर लगभग ८०० कार्यकर्त्ताओं का सचित्र परिचय दे पाए हैं। प्रायः ३५० से अधिक कार्यकर्त्ताओं के परिचय अपूर्ण रह जाने के कारण इसमें देने में हम असमर्थ रहे, अभी भी परिचय-पत्रकों का आना जारी है। यह इस बात का संकेत है कि इसके लिए एक और खंड की आवश्यकता है, सभी का सहयोग एवं उत्साह बना रहा तो शायद इसकी भी कोई रूपरेखा भविष्य में बने।

बंगाल में हिन्दी भाषियों का इतिहास काफी पुराना है। कृतिवास से लेकर राजा मानसिंह, जगत सेठ और न जाने कितने साहित्यकार, सैनिक, उद्योगपति, व्यवसायी, श्रमिक आदि नामी और अनामी लोग यहाँ आए और अपने-अपने क्षेत्र में साधना की। सेवा, धर्म, संस्कृति, समाज, साहित्य और कला—कोई भी क्षेत्र इनसे अछूता नहीं था। बड़ाबाजार में स्थापित मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी, काशी विश्वनाथ सेवा समिति, अखिल भारतीय मारवाड़ी अग्रवाल महासभा, वैश्य सभा, माहेश्वरी सभा, डीडू माहेश्वरी पंचायत, अपर इंडिया एसोसियेशन, बजरंग परिषद, हिन्दी नाट्य परिषद आदि सेवा एवं सामाजिक संगठन तथा अनेकों व्यावसायिक एवं औद्योगिक संगठन जिनका परिचय हमने "बड़ाबाजार : इतिकथा" में दिया है—इस का प्रमाण हैं। सामाजिक क्रांति में एवं राजनैतिक दृष्टि से भी इस क्षेत्र का इतिहास कम महत्वपूर्ण नहीं रहा है, इसकी भी थोड़ी-सी झलक 'इतिकथा' में दी गई है, जिसके अन्तर्गत पिछली ५ शताब्दियों के इतिहास पर दृष्टिपात करने की मैं ने चेष्टा की है।

इस सारे प्रयत्न में मेरे स्नेह-भाजन दार्शनिक-साहित्यकार मंगलजी ने बहुत सहयोग दिया। ग्रन्थ के सम्बन्ध में सलाह के साथ-साथ बड़ाबाजार के इतिहास पर दृश्य-श्रव्य कार्यक्रम स्लाइडों के माध्यम से तैयार करने के कार्य को भी रूपायित करने का दायित्व उन्होंने वहन किया और अपने साथी चित्रकार श्री उमाशंकर, स्लाइड निर्माता श्री फूलचन्द जैन, संयुक्त निर्देशक श्री काशीनाथ मिश्र एवं संगीतकार श्री कुमारनाथ के साथ इसमें दिन-रात जुट गए। इन सभी को मैं हार्दिक धन्यवाद देता हूँ।

ग्रन्थ के लिए प्राप्त सम्पूर्ण सामग्री का पुनर्लेखन एवं मुद्रण जैसा गुरुतर कार्य अत्यन्त निष्ठा से पूर्ण करने का श्रेय श्री रमेश चंद जैन को है, उन्हें मैं किन शब्दों में बधाई दूँ। कुमारसभा के उपाध्यक्ष श्री जुगलकिशोर जैथलिया एवं मंत्री श्री शिवरतन जासू तो मेरे सारे ही कामों में हाथ बँटाते रहे। उपमंत्री श्री महावीर प्रसाद बजाज ने प्रूफ संशोधन जैसा महत्वपूर्ण कार्य सँभाल कर ग्रन्थ की गरिमा बढ़ाई। सामग्री संग्रहीत करने के कार्य में श्री राजीव पूरे डेढ़ वर्ष तक मेरे साथ लगे रहे। श्री विजय सिंह नाहर एवं श्री अमर कुमार झिगन ने दुर्लभ महत्वपूर्ण सामग्री जुटाने में काफी सहयोग किया। इन सब के सहयोग से ही यह ग्रन्थ इतने सुन्दर रूप में आप के सामने आ पाया है, सभी को मैं आन्तरिक रूप से धन्यवाद देता हूँ।

अन्त में मैं श्री लक्ष्मीनिवास बिड़ला, श्री प्रभुदयाल हिम्मतसिंहका एवं श्री विष्णुकान्त शास्त्री को भी हार्दिक धन्यवाद देता हूँ, जिन्होंने अपना अमूल्य समय देकर ग्रन्थ विमोचन के समारोह को महिमा मंडित किया है।

कलकत्ता,
बुधवार, २९ सितम्बर १९८२

—राधाकृष्ण नेवटिया
प्रधान सम्पादक

श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय

के गौरवशाली ६४ वर्षों की उपलब्धियां

राष्ट्रीय एवम् अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति-प्राप्त प्रकाशन

ग्रन्थ

- 'यंग इण्डिया' में प्रकाशित महात्मा गांधी की लेखमाला का दो खण्डों (१२५० पृष्ठ) में हिन्दी में प्रकाशन (१९२३ ई०)।
- फ्रेंच लेखक अनातोले की नोबल पुरस्कार प्राप्त कृति 'थाया' का उपन्यास-सम्राट मुंशी प्रेमचन्द द्वारा हिन्दी अनुवाद 'अहंकार' का प्रकाशन।
  (यह मुंशीजी की प्रथम हिन्दी रचना थी, इससे पूर्व वे उर्दू में ही लिखा करते थे।)
- 'सूरदास : विविध सन्दर्भों में' का प्रकाशन (१९७८ ई०)।

स्मारिकायें

- छत्रपति शिवाजी राज्यारोहण त्रिशताब्दी स्मारिका (१९७५ ई०)।
- हल्दीघाटी चतुःशती स्मारिका (१९७६ ई०)।
- 'वन्दे मातरम्' शतवर्ष-पूर्ति स्मारिका (१९७७ ई०)।
- सूर पंचशती एवं पुस्तकालय की हीरक जयन्ती स्मारिका (१९७८ ई०)।
- अन्तर्राष्ट्रीय बाल वर्ष स्मारिका (१९७९ ई०)।
- समर्थ गुरु रामदास की ३००वीं पुण्य तिथि पर 'सन्त जिन्होंने देश जगाया' स्मारिका (१९८२ ई०)

ऐतिहासिक कार्यक्रम

- स्वतन्त्रता-सेनानियों पर पुलिस के अत्याचारों का मिट्टी के मॉडलों के माध्यम से प्रदर्शन एवं स्वदेशी प्रदर्शनी, जिसका उद्घाटन नेताजी सुभाष चन्द्र बोस ने किया (१९२८ ई०)।
- कुमारसभा राष्ट्रीय विद्यालय की स्थापना (१९३४ ई०)।
- स्वदेशी प्रचार हेतु चरखा प्रशिक्षण केन्द्र आरम्भ।
- मृत्यु भोज एवं परदा प्रथा के विरोध में जन-आन्दोलन।
- विभिन्न धार्मिक मेलों में व्यवस्था कार्य।
- बिहार के भूकम्प में सेवा कार्य (१९३४ ई०)।
- नमक सत्याग्रह, करो या मरो एवम् असहयोग आन्दोलन में महत्वपूर्ण भूमिका।
- गया-सर्वोदय सम्मेलन में भोजन-व्यवस्था का दायित्व (१९५४ ई०)।
- आपात-काल (जून १९७५ ई० से मार्च १९७७ ई०) के विरोध में हल्दीघाटी चतुःशती के कार्यक्रम में नागरिक स्वतन्त्रता का उद्घोष (१९७६ ई०)।
- जातीय जागरण हेतु मनीषियों एवं विद्वानों के व्याख्यानों का समय-समय पर आयोजन।



सादर नमन !

कवि - कुलगुरु

रवीन्द्र नाथ टैगोर

(जन्म-स्थल : जोड़ासाकू, बड़ाबाजार)

ग्रन्थ प्रकाशनार्थ आर्थिक सहयोगी

श्री रघुमल चैरिटी ट्रस्ट

श्री रायबहादुर विश्वेश्वरलाल मोतीलाल हलवासिया ट्रस्ट

श्री राधाकृष्ण कानोड़िया

श्री भुवालका जनकल्याण ट्रस्ट

श्री रामचन्द्र दम्माणी

श्री श्यामसुन्दर कानोड़िया

श्री नारायण प्रसाद माधोगढ़िया

श्री बाल सेवा सदन ट्रस्ट

श्री तोलाराम जालान

श्री रामनिवास बांगड़

श्री राधेश्याम सराफ

श्री गिरधर दास कोठारी

श्री हरिकृष्ण चौधरी

श्री रमाशंकर बागड़ी

श्री सत्यनारायण बांगड़

श्री सत्यनारायण सोमाणी

श्री ओमप्रकाश सराफ

श्री जनार्दन प्रसाद कानोड़िया

श्री शिवभगवान बगड़िया

श्री गौरीशंकर बिहाणी चैरिटी ट्रस्ट

श्री नन्दलाल टांटिया

श्री घनश्यामदास सरावगी चैरिटी ट्रस्ट

मेसर्स ओमप्रकाश इन्द्रकुमार

श्री मानव कल्याण ट्रस्ट

श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय की कार्यकारिणी समिति

विनयकृष्ण रस्तोगी	सभापति	महावीर प्रसाद चौधरी	उपसभापति
जुगल किशोर जैथलिया	उपसभापति	शिवरतन जासू	मन्त्री
महावीर प्रसाद बजाज	उपमन्त्री	रामगोपाल सोनी	उपमन्त्री
सत्यनारायण होलानी	अर्थमन्त्री	विष्णुकान्त शास्त्री	सदस्य
राधाकृष्ण नेवटिया	सदस्य	सुखाराम शर्मा	"
नन्दलाल जैन	"	विमल कुमार लाठ	"
सुखलाल गनेरीवाल	"	सूरजमल सिंगी	"
रामावतार सरावगी	"	राजकुमार जैन	"
पतञ्जलि शर्मा	"	पवन कुमार धेलिया	"
ताराचंद पोद्दार	"	मोहनलाल पारीक	"
हनुमानमल बोरड़	"	गोपालदास डागा	"
भगवती प्रसाद जालान	"	गोविन्द नारायण काकड़ा	"

एस. एम. गुप्ता एण्ड कं० लेखा परीक्षक

●

बड़ाबाजार के कार्यकर्ता — स्मरण एवं अभिनन्दन ग्रन्थ के परामर्शदाता

प्रभुदयाल हिम्मतसिंहका	राधाकृष्ण कानोड़िया
भगवती प्रसाद खेतान	डॉ० हीरालाल चोपड़ा
राधाकृष्ण नेवटिया	मोहनलाल जालान
बजरंगलाल लाठ	ताराचन्द साबू
बैजनाथ सिंह	सत्यनारायण मिश्र
विष्णुकान्त शास्त्री	कन्हैयालाल सेठिया
पुरुषोत्तम हलवासिया	अभिमन्यु भुवालका
डॉ० प्रबोधनारायण सिंह	प्रो० रामलगन सिंह
पुष्करलाल केड़िया	रामचन्द्र दम्मानी
हरिराम कसैरा	बिहारी भाई शाह
जगदीश नारायण पाठक	सी० डी० ठक्कर
कृष्णचन्द्र अग्रवाल	रामअवतार गुप्त
विनयकृष्ण रस्तोगी	शिवरतन जासू

पुस्तकालय की वर्तमान कार्यकारिणी समिति



बायें से दायें –

अग्रिम पंक्ति : महावीर प्रसाद बजाज (उपमंत्री), पवन कुमार धेलिया, राजकुमार जैन, पतञलि शर्मा ।

मध्य पंक्ति : शिवरतन जासू (मंत्री), जुगलकिशोर जैथलिया (उपाध्यक्ष), विनयकृष्ण रस्तोगी (अध्यक्ष), राधाकृष्ण नेवटिया (संस्थापक), नन्दलाल जैन, सुखाराम शर्मा ।

पिछली पंक्ति : सूरजमल सिंगी, सागरमल गुप्ता, विंध्याचल पाण्डे (पुस्तकाध्यक्ष), विमल लाठ, रामगोपाल सोनी (उपमंत्री), सत्यनारायण होलानी (अर्थ मंत्री), सुखलाल गनेड़ीवाल ।

ग्रंथ परामर्शदातृ समिति



विचार - विमर्श में निमग्न सदस्यगण


बड़बाजार
इतिकथा

ब | ड़ा | बा | जा | र
इ | ति | क | था

इतिहास जितना आकर्षक शब्द है, उतना ही भ्रामक भी है। किसी भी जाति, देश और समाज की इतिवृत्ति इतिहास का विषय होती है, किन्तु बहुधा राजवंश और राजाओं के उत्थान-पतन के साथ ही इतिहास का आरोह-अवरोह का संगीत चलता रहता है और राजवंश या राजा का इतिहास उसके द्वारा नियुक्त लेखकों पर निर्भर करता है। कहना नहीं होगा कि ये इतिहास पूर्ण सत्य के दर्शन नहीं कराते क्योंकि वेतनभुक्त इतिहासकार राजाओं की यशोगाथा तो लिखते हैं, किन्तु उनके द्वारा पराजय, चारित्रिक पतन, सांस्कृतिक ह्रास और सामाजिक उतार-चढ़ाव में इनकी प्रतिकूल भूमिका का वर्णन नहीं होता। बाबरनामा या आईने अकबरी में बाबर और अकबर की खामियों को नहीं दर्शाया गया, बल्कि उनकी खूबियों को बढ़ा-चढ़ाकर बखाना गया है। अंग्रेजों के काल में भी इतिहास को खूब तोड़ा-मरोड़ा गया। आधुनिक इतिहास निष्पक्ष नहीं लिखा जा सका है क्योंकि प्रत्येक इतिहासकार या तो किसी के आश्रय में रहा है या किसी विशेष धारा से प्रभावित रहा है। इस प्रकार इतिहास भ्रमपूर्ण होता गया और केवल राजाओं के जन्म, राज्यारोहण, मृत्यु, युद्ध और सुधार के कार्यों में ही चक्कर काटता रहा।

किन्तु भारतीय इतिहास लेखन की प्राचीन प्रणाली इतनी भ्रमपूर्ण नहीं थी। पुराणों में राजाओं के गुण–दोष समान रूप से चित्रित हैं। जो राजा सांस्कृतिक चेतना के अनुकूल होकर इसके विकास के लिए प्रयत्न करता था, उसे देवता की संज्ञा दी जाती थी और जो प्रतिकूल धारा को लेकर इन मान्यताओं को तोड़ता था उसे राक्षस की संज्ञा दी जाती थी। इसका कारण यह था कि इतिहास-कार ऋषि होते थे और उन्हें किसी के आश्रय की अपेक्षा नहीं थी। पुराण, रामायण और महाभारत की कोटि का इतिहास-ग्रन्थ विश्व के किसी कोने में मिलने की सम्भावना नहीं है। यही कारण है कि हम उस इतिहास के दर्पण में सब कुछ साफ-साफ देख लेते हैं। हमारे गुण यदि वहां उजागर हैं तो मामूली से मामूली दोष भी उतनी ही शक्ति से उजागर हैं।

हमने केवल विजयी लोगों का ही जयकार किया हो ऐसा नहीं है, शिवाजी, राणा प्रताप और नेताजी सुभाषचन्द्र बोस की पराजयों और पलायनों को भी हमने श्रद्धा प्रदान की क्योंकि वह स्वतन्त्रता एवं देश के हित में थी। हम उन विजयों के पीछे कभी नहीं चले, जो हमारे सांस्कृतिक हितों के प्रतिकूल थी। उदाहरण के लिए रावण की सफलता को हमने अपनी सफलता नहीं माना एवं अकबर की विजय को हमने अपनी विजय नहीं माना। राम को हम इतिहास निर्माता और रावण जैसों को इतिहास भंजक ही मानते रहे। सन्तों के पीछे भी हमारा इतिहास इसीलिए भागता रहा क्योंकि उन्होंने जन श्रद्धा के अनुरूप एवं सांस्कृतिक परम्परा के अनुकूल सिद्धान्त सबके समक्ष

रखे एवं व्यक्ति और समाज की चेतना जगाते रहे। फिर भी आम आदमी का इतिहास आजतक नहीं लिखा गया। इसका तात्पर्य यह नहीं कि आम आदमी नगण्य था किन्तु इसमें केवल दृष्टि का ही अभाव था। कुछ तो वह कालखंड ही ऐसा था। किन्तु अंग्रेजी राज्य के देश में पैर जमने के बाद सभी मोर्चों पर संघर्ष की जिम्मेदारी परम्परागत बड़े लोगों की अपेक्षा सामान्य कार्यकर्त्ताओं ने ही अधिक सम्हाली। १८५७ के स्वाधीनता संग्राम के समय की बागडोर जो नाना साहब पेशवा, झाँसी की रानी आदि के हाथ में थी, १९वीं शदी के उत्तरार्ध से ही समाज के आम आदमी ने उसे अपने हाथ में लेकर राजनीति एवं समाज-सुधार के सभी स्तरों पर मोर्चा सम्हाला।

ऐसे आम आदमी के अवदानों का स्मरण करने के उद्देश्य से ही कलकत्ता के बड़ाबाजार के इतिहास का लेखन हो रहा है। यह अवश्य एक बहुत ही छोटी भूमिका का इतिहास है जो देश ही नहीं, शहर के अनेक हिस्सों में भी एक छोटा-सा हिस्सा है। किंतु इस छोटे हिस्से ने, जिसे व्यापारी हिस्सा या बाजार कहा जाता है, कभी वैसा ही बलिदान किया था इतिहास के आह्वान पर जैसा अन्य लोगों ने किया था। बड़ाबाजार ने केवल चन्दे ही नहीं दिये थे, हर किस्म की चुनौतियां भी दी थी और ली थी तथा इतिहास को अपना सक्रिय सहयोग दिया था।

बंगाल में हिन्दी भाषी

बड़ाबाजार के इतिहास को समझने के लिए बंगाल में हिंदी भाषियों के इतिहास पर विचार करना होगा, जिसके एक सदस्य कृतिवास ओझा ने बंगला की पहली रामायण लिखी। कृतिवास ओझा के पूर्वज उत्तर प्रदेश के बलिया के थे और गंगा के तट से होते हुए बंग भूमि में आये थे। ठीक वैसे ही अनेक परिवारों के लोग बिहार एवं उत्तर प्रदेश से आये जिनका उद्देश्य केवल रोजी-रोटी की खोज था। तत्कालीन बंगाल में सेन और पाल वंशीय राजाओं के राज्य थे और ये राज्य सारे पूर्व भारत के वाणिज्य को ताम्रलिप्ति (तामलुक) के पत्तनों से विदेश व्यापार को संचालित करते थे। व्यापार के सिलसिले में सुदूर मारवाड़ यानी राजपूताने के लोग भी पूर्व एवं दक्षिण की यात्राएं कर रहे थे।

बंगाल में हिंदी भाषियों के वास्तविक इतिहास का प्रारम्भ राजा मानसिंह के आक्रमण से तथा राजा टोडरमल की भूमि व्यवस्था से होता है। राजा मानसिंह के साथ आये बहुत से सैनिक भी यहाँ बस गये थे। यह आक्रमण अपने आप में एक इतिहास है। मूलत: राजनीतिक दृष्टिकोण से बंगाल में हिंदी भाषियों का इतिहास प्रारम्भ नहीं होता, यह व्यवसाय-वाणिज्य के रूप में ही होता है यद्यपि बंगाल के राज्यों में उत्तर प्रदेश एवं बिहार के सैनिक तथा कर वसूलने वाले प्यादे अधिक थे।

राजा मानसिंह अकबर के प्रधान सेनापति थे और बंगाल की अव्यवस्था को ठीक करने के लिए अकबर ने उन्हें भेजा था। मानसिंह अपने साथ सैनिक और व्यवस्था के लिए मारवाड़ की व्यवस्थापक जातियों को भी लाये थे जिन में से अधिकांश यहाँ रह गये थे और वे ही आगे चलकर व्यवसाय के क्षेत्र में 'मारवाड़ी' कहलाये। इस समाज का वर्चस्व धीरे-धीरे सम्पूर्ण भारत के व्यवसाय-वाणिज्य पर स्थापित हो गया जिसका आरम्भ कलकत्ते से, विशेषत: बड़ाबाजार क्षेत्र से ही हुआ था। वास्तव में बड़ाबाजार ही केन्द्र था उत्तर भारत की सम्पूर्ण गतिविधियों का। ऐसी बात नहीं है कि मारवाड़ी समाज के लोग बड़ी सहजता से यह प्रमुखता स्थापित कर सके थे। इसके पीछे उनकी एकता, लगन, प्रयत्न और आत्मयोग अन्य समाजों से अधिक था। इसके फलस्वरूप ही व्यवसायेतर सामाजिक संस्थाओं एवं संस्थानों की हम उसी अनुपात में वृद्धि पाते हैं। यही कारण भी था कि इस समाज के पृष्ठपोषण में साहित्य, पत्रकारिता, राजनीतिक आन्दोलन, सामाजिक युगान्तर

सेवाप्रतिष्ठान की प्रचुरता देखने में आती है। इतर समाज के लोगों को भी इस समाज ने आर्थिक एवं नैतिक सहयोग प्रदान कर प्रतिभाओं को अवसर प्रदान किया था।

इतिहास का गवाक्ष

मारवाड़ी समाज का बड़ाबाजार में वर्चस्व केवल संख्या या क्षेत्र के चलते नहीं बना। इसके लिए इन्होंने कठिन प्रतियोगिता का सामना किया है और रिक्त स्थान की पूर्ति को भी निष्ठा से भरा है। वैसे जहां अर्थ-प्रधान जीवनदिशा हो जाती है, वहां कुछ प्रतिकूल जीवन सिद्धांत या जीवन के आदर्श बन जाते हैं। यह सबसे महत्वपूर्ण है कि तत्कालीन मारवाड़ी समाज चतुर्मुखी संघर्ष कर रहा था –एक तो विदेशी व्यापारिक और सांस्कृतिक विकास के साथ अपना तालमेल, दूसरे स्वदेशी विलासप्रिय व्यापारियों की अकर्मण्यता, तीसरे अपनी अशिक्षा और सामाजिक रूढ़ियों तथा चौथे सर्वथा नये वातावरण में स्वयं को निम्नस्तर से ऊपर उठा ले जाने की प्रतियोगिता।

मानसिंह के बंगाल विजय के पहले से ही यहाँ के इतिहास में हिन्दी भाषियों की भूमिका प्रारम्भ हो चुकी थी। प्रसिद्ध पाल और सेन वंश राजस्थान की अग्रोहा जाति के ही साम्राज्य थे तथा हर्षवर्द्धन के समय गौड़ नरेश शशांक स्वयं ही बाहर के थे। गौड़ साम्राज्य की सीमा मगध के बाद ही पड़ती थी, अत: अंग-बंग, उत्कल, और असम ये सभी मिलकर बंगाल बनते थे। मुसलमानों के समय भी बंगाल का यही अर्थ था और अंग्रेजों ने भी मुहम्मदशाह से बंगाल, बिहार, उड़ीसा की दीवानी प्राप्त की थी। बहुत दिनों तक यानी १९१२ ई० तक बंगाल के भीतर ही उड़ीसा और असम अन्तर्भुक्त थे। बिहार से उड़ीसा तो १६३६ ई० में विलग हुआ। प्रशासनिक दृष्टि से यह सीमांकन 'पूर्व भारत' के नाम से मशहूर था। इसीलिए बंगाल में अबंगालियों का प्रवेश और बंगाल के बाहर बंगालियों का प्रवेश अबाध होता रहा है। उन्नीसवीं एवं बीसवीं शताब्दी में तो कलकत्ता ही पूर्व भारत का मुख्य केन्द्र था और ब्रिटिश भारत की राजधानी भी। देश की राजधानी का गौरव १८५७ के बाद १९१२ ई० में ही दिल्ली को प्राप्त हो सका। इसके कारणों में भौगोलिक के अलावा राजनीतिक कारण ज्यादा थे। बंगाल में अंग्रेजी राज्य के प्रति अबाध प्रतिरोध के चलते ही कलकत्ता से राजधानी हटानी पड़ी थी। प्रशासनिक असुविधा ही इसमें मुख्य थी। वैसे बंगला के पहले रामायणकार कृतिवास ओझा से यह सिद्ध होता है कि बंगाल के साहित्य और धर्म में आज से ५०० वर्ष पहले ही हिन्दी भाषियों का योगदान आरम्भ हो गया था, जिसकी परिणति सखाराम गणेश देउस्कर के बंगला व्याकरण रचना में हुई जो इसी शताब्दी के तीसरे दशक की घटना है। 'उदन्त मार्तण्ड' का प्रकाशन भी यही सिद्ध करता है कि हिंदी भाषियों ने अपनी पत्रकारिता का विकास बंगाल से प्रेरित होकर किया किन्तु राजा राममोहन राय की पत्रिका 'बंगवासी' या बंडिल ईसाई मिशन का समाचार भी इसके बाद ही प्रकाशित हुआ। कहना नहीं होगा कि बंगाल की पत्रकारिता के योगदान में उदन्त मार्तण्ड की अहम् भूमिका है।

शाहजहां के समय से बंगाल की राजनीति में एक नयी दिशा मोड़ लेती दिखलायी पड़ती है। उसने अपने बेटे शुजा को यहाँ का सूबेदार नियुक्त किया था। वह अपने साथ सेठ बालकृष्ण को लाया था। वे मारवाड़ी थे और शुजा के मित्र भी। सेठ बालकृष्ण अंग्रेजों और मुसलमान शासकों के बीच लेन-देन की व्यवस्था करते थे। इससे उन्हें भी लाभ हुआ, मारवाड़ी समाज के साथ अंग्रेजों की घनिष्ठता जो भविष्य में बढ़ी, उसमें सेठ बालकृष्ण की भूमिका ३०० वर्ष पहले पड़ चुकी थी।

व्यावसायिक कथा

बड़ाबाजार के व्यावसायिक कणधार मारवाड़ियों में व्यक्तिगत, व्यवसायगत और समाजगत ईमानदारी प्रचुर मात्रा में थी। जॉब चार्नक ने भी लिखा है कि "हिन्दुस्तान में एक मारवाड़ी जाति ही ऐसी है जो अन्य सभी जातियों की अपेक्षा वाणिज्य-व्यवसाय में विशेष दक्ष और ईमानदार है। कम्पनी चाहे तो मारवाड़ी जाति से सहयोग प्राप्त कर अपने व्यापार का भारत में अधिकाधिक प्रसार कर सकती है।" यहाँ मारवाड़ी जाति की प्रशंसा में चार्नक के शब्द न तो कूटनीतिक हैं, न इस वाक्य से मारवाड़ियों की राष्ट्रीयता पर प्रश्न चिन्ह ही लगता है। उस समय की दूसरी भारतीय जातियाँ विलासिता में फंस गयी थीं। विलासिता का सबसे बड़ा दोष होता है समय और कर्त्तव्य के प्रति लापरवाही। मारवाड़ी जाति के व्यवसाय में आगे बढ़ने का एक परिणाम यह भी हुआ कि अंग्रेजी कम्पनियों पर भारतीय हावी होते गये। इस ऐतिहासिक तथ्य को अदृश्य नहीं बनाया जा सकता। उस समय सेठ चूहड़मल लाखों रुपये कम्पनी को उधार देते थे। उस समय से ही बैंकिंग की यह अघोषित अलिखित प्रणाली आरम्भ हो गयी।

एक प्रकार से मौजूदा बैंकिंग की आधारशिला भारत में रखने का दायित्व जॉब चार्नक और सेठ चूहड़मल को है। कालान्तर में मारवाड़ियों तथा अन्य भारतीय जातियों ने इस ऋण संस्था का बैंकिंग के रूप में विकास किया और प्रथम भारतीय मारवाड़ी बैंक ओंकारमल सराफ के उद्योग का फल था जिसे बलदेवदास दुधवेवाला (नाथानी) परिवार का वरदहस्त प्राप्त था। तब पटना और मिर्जापुर व्यापार के प्रमुख केन्द्र थे तथा बंगाल के ताम्रलिप्ति से व्यापारिक नौ-परिवहन केन्द्र कलकत्ता की ओर तीव्रता से अग्रसर होता जा रहा था।

सत्रहवीं सदी का अन्त होते-होते कम्पनी का कारोबार और राज्य विस्तार भी होता जा रहा था और मारवाड़ी समाज भी विकास की ओर था। बंगाल के मुसलमान एवं अंग्रेज शासकों से मारवाड़ी व्यवसायियों का सम्बन्ध किसी व्यावसायिक आवश्यकता और औपचारिकता के लिए ही था जो प्रशासन से व्यवसाय चाहता है। शांति, सुविधा एवं सुरक्षा व्यवसाय के लिए आवश्यक हैं और इसे प्रशासन ही दे सकता है। यही कारण है कि व्यवसाय और प्रशासन में सर्वदा एक आन्तरिक अनुबन्ध हुआ करता है। यह अनुबन्ध जब भी टूटता है, तब प्रशासन और व्यवसाय दोनों ही प्रभावित होते हैं। इसका तात्पर्य यह नहीं है कि व्यवसायी देशभक्त नहीं होते थे। प्रशासन से उनका सम्बन्ध व्यावसायिक ही होता था, उनकी अन्तरात्माएं सर्वदा देशहित को देखती थीं। प्राचीन काल से अब तक यह व्यवहार ही चलता रहा है और जब भी देश को आवश्यकता हुई, व्यवसायियों ने प्रशासन का विरोध ही नहीं किया, उसे बदलने में भी देश का साथ दिया है।

जब नवाब अलीवर्दी खाँ से कुछ व्यवसायियों ने अंग्रेजों की शिकायत की, तब नवाब ने उन्हें पत्र लिखा कि केवल व्यापार की उन्हें छूट दी गयी है, लूट-खसोट और डकैती करने के लिए नहीं। यहाँ स्पष्ट परिलक्षित हो रहा है कि उस समय के व्यवसायी, जिनमें मारवाड़ी प्रमुख होते जा रहे थे, अंग्रेजों को अपना व्यावसायिक प्रतिद्वन्द्वी तो मानते ही थे, साथ ही वे उनकी राज्य-लिप्सा को भी जान गये थे। अतः जब भी मौका मिलता था, वे अंग्रेजों को नीचा दिखाने और उनकी शक्ति को कमजोर करने की चेष्टा करते थे। यह बात अलग है कि पीछे उन्होंने अंग्रेजों का साथ दिया क्योंकि व्यवसाय के लिए यही तकाजा था। जैसे विज्ञान के आविष्कार प्राकृतिक रहस्यों को प्रकट करते हैं और इसके उपयोग का उत्तरदायित्व उनका नहीं होता, वैसे ही व्यवसाय अपनी पूँजी की सुरक्षा चाहता है और जहाँ से यह मिलती है, वहीं से वह लेता है। यही कारण है कि निकम्मे

मुसलमान प्रशासन से व्यापारियों ने न केवल अपनी बल्कि देश की भी सुरक्षा चाही थी, भले ही यह माँग शुद्ध व्यावसायिक थी, राजनीतिक नहीं। तो हुगली के जिन सैयद, मुगल और आरमेनियनों के जहाज अंग्रेजों ने लूटे थे, उसकी चर्चा करते हुए तत्कालीन व्यवसायियों ने बंगाल के नवाब से शिकायत की थी जिस पर नवाब ने राजाज्ञा दी थी कि लूट के सामान से जो नजराना और भेंट मिली है उस तथ्य की उपेक्षा कर पाना असम्भव है और प्रभावित व्यापारियों को हर्जाना दिया जाय। जब अंग्रेजों ने हर्जाने नहीं दिये, तब नवाब ने उन्हें जो व्यवसाय की राजाज्ञा दी थी, उसे समाप्त कर दी। उस समय अंग्रेज जगत सेठ महताबचन्द के पास गये। महताबचन्द ने अंग्रेजों से १२ लाख रुपये हर्जाने के रूप में नवाब को दिलवाये। अंग्रेजों का व्यापार फिर चल पड़ा। जगत सेठ वास्तव में उस समय व्यवसाय ही नहीं, राजनीति और प्रशासन की भी मुख्य कड़ी थे। यद्यपि व्यवसाय के लिए उन्होंने जो भी राजनीति की, वह तो समझ में आती है, किन्तु जैसे ही व्यक्तिगत लाभ के लिए उन्होंने प्रशासन को प्रभावित करना चाहा, इतिहास ने पलटा खाया। इतिहास को बदलने में पूँजी का बहुत बड़ा हाथ होता है।

अंग्रेजी राज एवं जगत सेठ

लार्ड क्लाइव ने दिल्ली के बादशाह शाहआलम को २६ लाख रुपये सालाना देकर उनसे बंगाल, बिहार एवं उड़ीसा की दीवानी ले ली। यह दीवानी व्यापारिक लाभ के लिए नहीं, बल्कि भारत में अंग्रेजी राज्य की स्थापना की कड़ी थी जिसे मुगलबादशाह, जो निकम्मे और मूर्ख भी हो रहे थे, नहीं समझ पाये थे। वारेन हेस्टिग्स ने गवर्नर जनरल बनते ही कलकत्ते में सुप्रीम कोर्ट की स्थापना की और महाराज नन्द कुमार को जाली केस में फंसाकर फांसी की सजा दिला दी। इससे यह भी सिद्ध होता है कि अंग्रेज पूरी तरह प्रशासन पर छा गये थे और सर्वोच्च न्यायालय का आरम्भ ही उन्होंने प्रशासनिक प्रहसन के लिए किया था जिसकी शुरूआत महाराज नन्द कुमार के मामले से हुई। इसके बाद जगत सेठों का सफाया आवश्यक प्रतीत हुआ। अंग्रेज उन तमाम देशी ताकतों को मिटा देना चाहते थे जो उनके हित में व्यवधान डालते थे। न्यायालय मात्र एक प्रहसन की संस्था थे। जगत सेठों का भी सफाया हो गया और अंग्रेज अब अबाध गति से आगे बढ़ने लगे। उनका उद्देश्य था ब्रिटिश माल को भारत जैसे विशाल देश में खपाने के लिए प्रत्येक अवरोधक तत्व को मार्ग से हटा देना। इस क्रम में उन्होंने यहां के हस्तशिल्प को भी समाप्त कर दिया। भारतीय व्यापारी, विशेषतः मारवाड़ी व्यवसायी इस तथ्य से अनभिज्ञ नहीं थे। अतः उन्होंने भी प्रशासन से मुंह मोड़ लिया और अपने को व्यवसाय तक ही सीमित करना आरम्भ कर दिया। हेस्टिंग्स ने मारवाड़ियों को ही अपने उद्देश्य के लिए अनुकूल पाया। मारवाड़ियों का प्रसार भी सारे भारत वर्ष में, विशेषकर पूर्वी भारत में हो चुका था और वे उत्तर प्रदेश यानी अवध, बिहार, बंगाल, उड़ीसा, असम और भूटान तक फैल गये थे। असम में अंग्रेजी चाय बगानों को भी अब मारवाड़ी खरीदने लगे थे। १७२७ ई० के आस-पास देशी बैंकिंग का प्रचार आरम्भ हो चुका था। उस समय की इस प्रणाली के प्रधान नेता थे रामकृष्ण लक्ष्मीनारायण और नन्दराम बैजनाथ।

देशी बैंकिंग व्यवस्था

१७२७ ई० में आरम्भ हुई यह व्यवसाय की सहयोगी प्रणाली १७८८ ई० में अपने यौवन पर आ गयी। उस समय बंगाल में २४ सराफे के ऐसे फर्म विख्यात हो चुके थे जिनमें गोपालदास

मनोहरदास नामक मारवाड़ी फर्म सबसे अधिक विख्यात थी। आज भी बड़ाबाजार में मनोहरदास कटरा उसका स्मरण दिलाता है। मनोहरदास के वंशज व्यवसाय में ही नहीं, शिक्षा और राजनीति के क्षेत्र में भी बड़े विख्यात हुए। डा० भगवानदास जैसा दार्शनिक और श्रीप्रकाश जैसा राजनीतिविद् और प्रशासक इसी वंश में हुए। ये काशी में रहते थे। १८१३ में ईस्ट इण्डिया कम्पनी के संचालकों ने ब्रिटिश व्यापारियों को भारत में व्यापार करने की छुट दे दी थी। अंग्रेजों के स्वतंत्र कार्यालय यहां खुलने लगे। साथ ही यह भी ध्यान देने योग्य है कि उस समय यूरोपीय देशों के अधिकांश लोग भारत की ओर बढ़ रहे थे, जिनमें फ्रेंच और पुर्तगीज विशेष रूप से अंग्रेजों के प्रतिद्वन्दी थे। भारत में, विशेषकर बंगाल में, अंग्रेजों और दूसरे यूरोपीय देशों के साथ सम्बन्धों को लेकर यूरोप और भारत में युद्ध छिड़ जाते थे। क्लाइव और डूप्ले का युद्ध निर्णायक हुआ। फ्रेंच और पुर्तगीज व्यापारी एक-दो क्षेत्रों में सीमित हो गये और अंग्रेज हर ओर विजेता बनते चले गये।

अंग्रेज तथा यूरोप के प्रायः सारे देशों के लोग औद्योगिक क्रांति के बाद एशिया, अफ्रीका एवं लेटिन अमरीका के देशों में कच्चे माल की खोज, तैयार माल की खपत और इस सुविधा के लिए साम्राज्य स्थापनार्थ १७ वीं शताब्दी में ही इधर-उधर अपने जहाजी बेड़े लेकर निकल रहे थे। वास्कोडिगामा, कोलम्बस और टामस रो आदि इसी कोटि के नाविक थे। आज का सब से समृद्ध देश अमरीका कभी यानी आज से २५० वर्ष पहले विश्व के लिए अनजाना था। यह अलग बात है कि महाभारतीय सभ्यता के साथ इस पाताल लोक की कई पौराणिक गाथाएं हैं और स्पेनिश कोलम्बस अमरीका का पुनरन्वेषक होने का ही अधिकारी रह जाता है। इस पाताल लोक से हमारा सम्बन्ध था। राम के समय अहिरावण का यह देश था। बंधन के रूप में बलि का यहीं निर्वासन हुआ। लेटिन अमरीका की सभ्यता मात्र ४००० वर्ष पुरानी है। वह भी भारत की वैदिक सभ्यता की सह उपज थी। जिप्सी भारतीय आज भी इस देश में हैं जिन्हें रोमां भी कहा जाता है। यूरोप भारत को ललचाई दृष्टि से देख रहा था। पुर्तगीज ढीले पड़ गये। फ्रांस और ब्रिटेन ने समान रूप से भारत पर आक्रमण किया था। ब्रिटेन के भाग्य में उपनिवेश सब से अधिक था। व्यापार और साम्राज्य विस्तार ही यूरोपीय देशों का प्रमुख लक्ष्य रहा है और इस से तीसरी दुनिया के देश तबाह होते रहे हैं। आज भी व्यापार के माध्यम से पश्चिम के देश तीसरी दुनिया को पूंजीगत गुलामी से जकड़े हुए हैं। और तीसरी दुनिया के लोग भी मानसिक रूप से इस गुलामी से उबर नहीं पाये हैं।

अंग्रेजों की दोहरे लाभ की नीति

भारत में ब्रिटेन की नीति बनी थी यहां से सस्ती दर पर कच्चा माल ले जाना, अपने उपनिवेशों के लिए सस्ता श्रम भारत से ले जाना तथा अपने तैयार माल को महंगे रूप में अपने उपनिवेशों में बेचना। इसे ही दोहरा मुनाफा कहते हैं। मैनचेस्टर और बकिंघम के विलास और लार्डों का ऐश्वर्य तथा ब्रिटिश जनता का शानदार जीवन इसी नीति पर आधारित था। अपने इस दोहरे कारबार के लिए ब्रिटेन को मध्यस्थों की जरूरत थी। सब से पहले उनका ध्यान प्रशासन की ओर गया था, जिसे पाते ही उनका दूसरा ध्यान भारतीय कला कौशल पर गया। हथकरघे पर बुना हुआ एक थान मलमल अंगूठी में समा सकता था जिसकी बराबरी मैनचेस्टर और बकिंघम नहीं कर सकते थे। उन्होंने पहले इसी कौशल को बड़ी निर्दयता एवं अमानवीयता से समाप्त कर दिया। मध्यस्थों के लिए उन्होंने अच्छी दलाली का लालच दिया। अतः इस ओर भारतीय आकृष्ट हुए। यह उनकी विवशता थी जो बाद में आवश्यकता हो गयी। भारतीय व्यवसायी दलाली के व्यवसाय को

ही अच्छा समझने लग गये क्योंकि इसमें लाभ भी अच्छा मिलता था। पूंजी लगाने की उतनी आवश्यकता नहीं थी तथा लगी हुई पूंजी सुरक्षित रहती थी।

अंग्रेज व्यापारियों ने व्यापार करने के लिए एक और तरीका अपनाया मुसद्दीगीरी का, जिसे बेनियन कहा जाता था। इसके अनुसार माल अंग्रेज बेचते थे, पर खरीदने वाले व्यापारी को माल की डेलीवरी-आपूर्ति-दूसरा ही आदमी करता था। जो आपूर्ति करता था उसे ही मुसद्दी कहते थे। इसके लिए उसे १ प्रतिशत कमीशन दिया जाता था पर माल की सारी जिम्मेवारी उसी मुसद्दी पर रहती थी, फिर भी भारतीय व्यापारियों ने इसमें रुचि ली। उसी के नाम पर माल उधार भी जाता था क्योंकि माल की कीमत उन्हें ही देनी पड़ती थी। आज भी कुछ परिवर्तन के साथ यही रीति भारतीय व्यापार में चल रही है।

बंगाली, खत्री एवं मारवाड़ी व्यवसायी

सबसे पहले बंगालियों ने इस व्यवसाय को अपनाया और वे अंग्रेजी प्रतिष्ठानों में दलाली करने लगे। इसका मूल कारण था कि बंगाली अन्य लोगों से शिक्षित अधिक थे। उन में बैशाख और सेठ लोग ही वाणिज्य-व्यवसाय में अधिक अगुआ थे। वैष्णवदास सेठ और शोभाराम बैशाख नामी व्यापारी थे। पर बंगाली व्यापारी स्वभाव से ही कोमल और कम परिश्रम करनेवाले थे। अतः वे आवश्यकता के अनुसार कम समय ही काम करते थे और पूरा समय वे व्यापार में नहीं लगा पाते थे। उनकी भावुकता, आदर्शवादिता, शिक्षा और कोमलता ने उन्हें व्यापार से दूर ही रखा। वे पिछड़ते चले गये और एकाधिकार में प्रतियोगिता आरम्भ हो गयी थी ठीक उसी तरह जैसे जापान और जर्मनी ब्रिटेन औद्योगिक मामलों में प्रतियोगिता कर रहे थे। जापान ने तो कई जगह ब्रिटेन को पछाड़ दिया था।

बंगालियों के पिछड़ने पर खत्री समाज आगे आया। वे पश्चिम के थे, अत: उनमें कर्मठता अधिक थी, भावुकता कम थी। अंग्रेजी प्रतिष्ठानों के लिए बंगालियों की अपेक्षा खत्री ज्यादा सफल दलाल सिद्ध हुए। बंगाली पढ़े-लिखे होने से आफिसों में लिपिक और प्रशासनिक अधिकारी बनने लगे तथा खत्री अच्छे दलाल। दलाली का काम पूरी तरह खत्रियों ने बंगालियों से एक तरह से छीन ही लिया और अंग्रेज प्रतिष्ठानों में दलाल के रूप में खत्री प्रतिष्ठित हो गये। खत्री समाज के व्यापारी व्यापार में अधिक फले-फूले, किन्तु उसी अनुपात में उनमें विलासिता भी आ गयी। विलासिता ने अपव्यय को जन्म दिया। वे व्यापार से लापरवाह होने लगे। इससे अंग्रेजों के हित को क्षति पहुंचने लगी। तब अंग्रेजों ने इनके अवगुणों को समझा और वे इनका विकल्प सोचने लगे।

तीसरे विकल्प के रूप में मारवाड़ी व्यवसायी उभर कर सामने आये। स्वभाव से ही व्यवसायी, आलसहीन, ईमानदार और कर्मठ मारवाड़ी धीरे-धीरे अंग्रेज प्रतिष्ठानों के सम्पर्क में आने लगे। खत्री समाज के प्रसिद्ध दलालों में बाबू निक्कामल, बेसीजी मिश्र, जगन्नाथ टण्डन, ममोजी मिश्र, भगवानदास अरोड़ा, ललिता प्रसाद खत्री, खेटू बाबू और मुकुन्दी बाबू आदि थे। मारवाड़ियों में पहले पहल रामजीलाल अग्रवाल ने गिलण्डर के कार्यालय में प्रवेश किया। बाबूलाल अग्रवाल ने प्लाण्टर्स के तीन कार्यालयों के काम सम्हाले। युगल किशोर रुइया, रामकिशन दास सरावगी और गौरीदत्त सराफ पहले से ही काम कर रहे थे। इन लोगों ने अपने परिश्रम से इतना अच्छा काम किया कि वे आगे चलकर अंग्रेज आफिसों में स्वतंत्र दलाल बन गये। मारवाड़ी व्यवसाय के पुरोधाओं ने अपनी मेहनत सूझ-बूझ, ईमानदारी और कर्मनिष्ठा से मारवाड़ियों के लिए व्यापारिक भविष्य का पथ-प्रशस्त कर दिया। यहीं से मारवाड़ी व्यवसायी व्यवसाय में अग्रगण्य बनने लगे।

अग्रवाल जाति का विकास

मारवाड़ी-व्यापारियों की एक बहुत बड़ी विशेषता थी उनकी भीतरी एकता। एक का लाभ दूसरे का लाभ और एक की हानि दूसरे की हानि समझी जाती थी। वे अग्रोहा सिद्धान्त के पोषक थे कि एक ईंट और एक मोहर सभी दे दें, तो गरीब अग्रवाल साधनों में उनके बराबर हो जायेगा। इनमें अनन्तराम शिवप्रसाद फर्म बड़ा नामी सिद्ध हुआ। यह फर्म सराफा के साथ-साथ बीमा और अफीम का भी कारबार करता था। इनके गुमाश्ते फतेहपुर निवासी धर्मचन्द केजड़ीवाल थे। हम पहले ही कह आये हैं कि मिर्जापुर और पटना भी प्रमुख व्यवसाय के केन्द्र थे। अतः गंगा नदी परिवहन के लिए प्रधान भूमिका बन गयी थी। इसके द्वारा माल को नौकाओं से भेजा जाता था। एक बार मिर्जापुर के घाटों पर १५०० नौकाओं को ईस्ट इण्डिया कम्पनी के कर्मचारियों ने रोक दिया। उक्त फर्म के गुमाश्ते धर्मचन्द केजड़ीवाल ने नौकाओं को छुड़ाने के लिए कम्पनी पर दबाव डाला तो कर्मचारियों ने उनकी नौकाएं छोड़ दी पर वे दूसरी नौकाओं को भी मुक्त कराने के लिए दृढ़ प्रतिज्ञ थे। उन्होंने कहा, छुटेंगी तो सभी नौकाएँ एक साथ, अन्यथा सभी पड़ी रहेंगी। सभी व्यापारी एक हो गये थे। इसका कम्पनी पर बहुत प्रभाव पड़ा और सभी नौकाओं को छोड़ने के लिए इंगलैण्ड स्थित कम्पनी के संचालकों को आज्ञा देनी पड़ी। इससे ज्ञात होता है कि उस समय व्यापारिक एकता कितनी थी जबकि मारवाड़ी व्यापारी शक्तिशाली अंग्रेजों से संघर्ष पर उतर आये थे। आज वह एकता खण्डित दिखायी पड़ती है। कई व्यापारिक संघटन बने हैं पर व्यापारी व्यापारी में उस एकता की कड़ी टूटती दिखायी पड़ती है और प्रतिद्वन्द्विता एवं ईर्ष्या पनप रही है।

मारवाड़ी जाति विकासोन्मुख

खड़ग सिंह नाहर १७६६ ई० में बंगाल आये। उन्होंने अजीमगंज तथा कलकत्ता में व्यापार आरंभ किया। १७९७ ई० में उन्होंने कई जमींदारियां ले ली। उनके पोते पूर्णचन्द्र नाहर हुए जिन्होंने सब से पहले मारवाड़ियों में एम० ए० की परीक्षा उत्तीर्ण की और वकालत पढ़ी। वे कलकत्ता विश्वविद्यालय के परीक्षक भी बनाये गये थे। उन्होंने आदर्श पुस्तकालय की स्थापना भी की। मारवाड़ी समाज में अब उच्चशिक्षा की ओर रुचि जाग्रत होती जा रही थी। म्हालीराम जटिया बिसाऊ से कलकत्ता आये थे और उनके प्रपोता ओंकारमल जटिया बड़े व्यवसायी भी बने थे; साथ ही तत्कालीन रायबहादुर की लुभावनी उपाधि भी प्राप्त की थी और कलकत्ते के शेरिफ भी बने थे। वे एण्ड्रयूल के संचालक और भागीदार भी बने थे। मारवाड़ी अब अंग्रेजी कम्पनियों के भागीदार और संचालक भी बनने लगे थे, फिर भी अंग्रेजों की निकटता इनकी संस्कृति और वेशभूषा को परिवर्तित नहीं कर सकी थी।

दलाली के काम में भी अन्य वाणिज्यीय विकास के साथ एक परिवर्तन हुआ। खत्रियों के जमाने में निक्कामल अपने अधीनस्थ दलालों को दलाली देते थे पर वे छोटे या अधीनस्थ दलाल काम ठीक से नहीं कर पाते थे। नाथूराम सराफ ने सूतापट्टी में आकर घोषणा की 'किसल एण्ड घोष कम्पनी' का माल कोई भी मारवाड़ी बेच सकता है, सभी को आधी दलाली दी जायगी। इसका बड़ा प्रभाव हुआ। एक ओर मारवाड़ियों को बिना भेदभाव के काम मिला दूसरी ओर व्यापार में तीव्र गति से प्रगति होने लगी। किसल साहब नाथूराम सराफ से प्रसन्न हुए। नाथूराम सराफ मण्डावे से अपने सगे सम्बन्धियों को बुलाकर दुकानें खुलवाने लगे। इस प्रकार व्यवसाय का एक पक्ष उतरोत्तर

बड़ाबाजार में बढ़ता गया। शेखावाटी के शिवबख्श गोयनका ने रैली ब्रदर्स में बहुत परिश्रम से काम किया पर किसी कारणवश वे पुनः घर लौट गये। उनके भतीजे रामचन्द्र गोयनका के नाम आफिस का काम हो गया।

बंगाल में आये मारवाड़ियों के व्यापार का अपना एक विशेष ढंग था। वे लेन-देन का काम अपने नियम से करते थे और उनका पालन भी बड़ी तत्परता एवं कठोरता से करते थे। व्यक्तिगत साख उस समय चलती थी जिस पर उधार मिलता था और लोग काम करते थे। यह ढंग उनके साथ ही बंगाल आया और यहाँ भी सराफी चालू हो गयी।

सराफी का प्रचलन

सराफी आजकल की बैंकिंग-व्यवस्था की तरह ही थी। फिर भी दोनों व्यवस्थाओं में काफी अन्तर था। इस व्यवस्था की आवश्यक शर्त थी—व्यक्तिगत गुण तथा ईमानदारी। इसके लिए चल या अचल सम्पत्ति की जमानत के रूप में आवश्यकता नहीं होती थी जो आज की बैंकिंग प्रणाली की आवश्यक बात है। सराफे में व्यक्ति की ईमानदारी, कर्मठता और बाजार में उसका विश्वास आदि जमानती चीजें थीं। यह व्यवस्था आज भी समाप्त नहीं हुई है किन्तु इसमें त्रुटियाँ जरूर आ गयी हैं जिससे इसका महत्व कम हो गया है। यही वजह है कि एक ओर जहाँ बेरोजगारी बढ़ रही है, वहीं दूसरी ओर विकेंद्रित व्यवसाय-वाणिज्य किसी विशेष स्थिति या व्यक्ति में केन्द्रित होता जा रहा है और ईमानदारी की जगह पर चतुराई मात्र को साख समझ लिया गया है। इसके दूरगामी परिणाम होंगे और कर्मठ तथा ईमानदार व्यक्तियों का बाजार में अभाव हो जायेगा। यही कारण है कि सराफी में व्यक्ति को प्रधान माना जाता था, उसकी कार्यकुशलता को सम्मान दिया जाता था और व्यक्तिगत परिचय के आधार पर ही धन दिया जाता था।

सराफी प्रणाली से, जो मारवाड़ी व्यवसाय का मेरु-दण्ड थी और जिसका प्रचलन ही व्यवसाय का आधार था, बंगाल में मारवाड़ी समाज व्यवसाय में इतना आगे बढ़ सका कि दूसरी व्यावसायिक जातियाँ उनके सामने टिक न सकीं। साथ ही मारवाड़ियों की प्रतिष्ठा भी बढ़ी। ये अपनी कर्मठता से आगे बढ़े, धनकुबेर भी बने और इनके नाम आज भी सामाजिक सेवा संस्थानों के पट्ट पर दानवीरों के रूप में अंकित हैं। आज बैंकिंग की कई तकनीकी कठिनाइयों के चलते साधारण आदमी इस सुविधा से वंचित हो जाता है।

इस प्रकार सराफी प्रणाली बंगाल में चल पड़ी जिसका केन्द्र बड़ाबाजार ही रहा है। इस प्रणाली के अन्तर्गत मारवाड़ ही नहीं बल्कि राजस्थान के अन्य स्थानों और हरियाणा से आये अपरिचित और खाली हाथ लोगों को भी अच्छे अवसर प्राप्त हुए और वे आज करोड़पति हैं। कलकत्ता के व्यवसाय में एक समय सराफी के प्रतिष्ठान अग्रपंक्ति में खड़े थे, जो मारवाड़ियों के लिए वास्तविक बैंक और मार्गदर्शक दोनों ही थे। इनमें कुछ नाम इस प्रकार हैं— (१) लक्ष्मीचन्द राधाकृष्ण, (२) रामलाल बिहारीलाल शाह, (३) बहादुरसिंह प्रतापसिंह, (४) कल्लूबाबू लालचन्द, (५) माधोवनदास द्वारकादास, (६) चतुर्भुज गोविन्दनारायण, (७) दुलीचन्द बग्घीमल, (८) जोहरीमल रामलाल, (९) हरसामल रामलाल, (१०) ताराचन्द घनश्यामदास, (११) रामप्रसाद सरजूप्रसाद, (१२) शीतलप्रसाद खड़गप्रसाद, (१३) सूरजराम रामभान, (१४) दौलतराम किशनदास (१५) रामचन्द पूनमचन्द, (१६) शिवलाल मोतीलाल, (१७) हरगोपाल चिमनलाल, (१८) रामलाल बद्रीप्रसाद, (१९) सेवाराम कालूराम, (२०) बंशीलाल अबीरचन्द, (२१) फूलचन्द

मक्खनलाल, (२२) सेवाराम खुशालचन्द, (२३) हरसुखदास बालकृष्ण, (२४) मुल्तानचन्द कन्हैयालाल, (२५) मुल्तानचन्द डागा, (२६) हरसुखदास छोगमल, (२७) चैनरूप सम्पतराय, (२८) हरमुखराय रामचन्द्र, (२९) हजारीमल सागरमल और (३०) गणेशदास किशनचन्द।

ये प्रतिष्ठान एक ही दिन में नहीं खुले थे बल्कि ये क्रम थे मारवाड़ी व्यवसाय के बढ़ते चरण के। वे जैसे-जैसे यहां आते गये, वैसे-वैसे उनका काम बढ़ता गया। नवाबों के समय जगत सेठ भी इसी प्रकार बंगाल की अर्थ-व्यवस्था पर नियंत्रण रखते थे।

सार्वजनिक संस्थाओं की स्थापना

मारवाड़ी व्यवसायी जो अब बंगाल से आरम्भ कर सारे भारत पर छाते जा रहे थे, मुख्यतया बंगाल में सारे हिंदीभाषियों के प्रतिनिधि थे। इस एक जाति को केंद्र कर सारे अबंगलाभाषाभाषी लोग विकसित हो रहे थे। साथ ही हिन्दी साहित्य और भारतीय संस्कृति भी पनप रही थी तथा यह व्यावसायिक जाति पूरे रूप से इनके विकास में हृदय खोलकर आर्थिक सहयोग दे रही थी। यह एक अलग बात है कि कुछ सार्वजनिक प्रतिष्ठानों में मारवाड़ीपन की सक्रियता देखी गयी। कुछ अस्पतालों में केवल मारवाड़ी वैश्य और ब्राह्मण को ही लाभान्वित होने का प्रावधान रखा गया, यह केवल इसलिए था कि अन्य सार्वजनिक अस्पतालों के खान-पान एवं आचार-विचार से इनका खान-पान एवं आचार-विचार भिन्न था। इस पर आगे चलकर प्रकाश डाला जायेगा। तो अब देश से बाहर निकल कर विदेश में भी मारवाड़ी व्यवसाय-वाणिज्य की प्रसिद्धि बढ़ती चली जा रही थी। इसका प्रभाव बंगाल की सार्वभौम उन्नति और समृद्धि से जुड़ा हुआ था। अब ये अंग्रेजों के साथ व्यापार करने लग गये थे। कलकत्ता का बड़ाबाजार इसका केंद्र बनता जा रहा था। उसी समय की कठिन साधना का परिणाम है कि आज भी ये अट्टालिकाएं, कोठियां, बड़ी-बड़ी दुकानें, बाग-बगीचे—जो कलकत्ता के आस-पास ही नहीं, सुदूर दूसरे अंचलों में भी निर्मित हुये, उनमें धन लगा बड़ाबाजार का ही। इसके साथ ही गोशालाएं, धर्मशालाएं, अस्पताल, गंगाघाट, मन्दिर, दातव्य औषधालय, अन्न क्षेत्र, विद्यालय, पुस्तकालय एवं अन्य सभा-संस्थाएं भी पनपीं। यह सारी स्थिति १९०३ ई० तक पूर्ण स्वरूप ग्रहण कर चुकी थी।

राष्ट्रीय चेतना का जागरण

१८५७ ई० के स्वाधीनता संघर्ष के बाद महारानी विक्टोरिया ने कुछ ऐसी घोषणाएं की थीं जिसके चलते भारतीयों में उभरा आक्रोश एवं क्षोभ कुछ अंशों तक शांत हुआ, किन्तु यह कहना ठीक नहीं होगा कि विक्टोरिया की घोषणा से राष्ट्रीयता की तीव्र भावना समाप्त या शांत हो गयी थी। सम्पूर्ण देश के साथ-साथ कलकत्ता, मद्रास एवं बम्बई में वह आग एक दूसरे ही रूप में सुलग रही थी जो मंगल पाण्डे, लक्ष्मी बाई, तात्यां टोपे, नाना साहब और बहादुर शाह ने जलायी थी। १९०१ ई० तक भारतीय इतिहास पर शांति का एक झूठा साया छाया रहा, किन्तु भीतर ही भीतर कुछ ऐसे कार्य हुए जो बाद के इतिहास की पृष्ठभूमि थे। उदाहरण स्वरूप राजा राममोहन राय, केशवचन्द्र सेन, रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानन्द, महर्षि देवेन्द्रनाथ टैगोर, महात्मा ज्योतिबा फुले, ऋषि दयानन्द और श्रद्धानन्द तथा हिमालय की उपत्यका के संथाली—सभी उसी बीज का वपन कर रहे थे जो पूर्ण भारतीय राष्ट्र का स्वरूप धारण कर ले। १८५७ ई० से १९०५ ई० के बीच निरंतर

राष्ट्रीय-चेतना का जागरण होता रहा। इसी के फलस्वरूप एक प्रचण्ड संस्था का जन्म भी १८८५ ई० में हुआ जिसे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस या इण्डियन नेशनल कांग्रेस कहते हैं। वस्तुतः यह संस्था पहले उन लोगों से स्थापित हुई थी जो अंग्रेजों के मित्र थे। इसके प्रथम सभापति बंगाल के उमेशचन्द्र बनर्जी थे। किन्तु १८८६ ई० में ही फिरोज शाह मेहता, सुरेन्द्र नाथ बनर्जी आदि के चलते यह संस्था स्वाधीनता की चेतना से अनुप्राणित होने लगी थी और विभिन्न विचार वाले स्वतंत्रता प्रेमियों का एक विचार मंच बन गयी। शौकिया विरोध पत्र खिसका देने वाला यह अंग्रेज-परस्त क्लब वास्तव में उन्नीसवीं सदी के अन्तिम दशक तक स्वातंत्र्य चेतना से इतना मुखर हो उठा कि अंग्रेजी शासन को इस पर अंकुश लगाना पड़ा। कलकत्ता इस चेतना में अग्रणी था। स्वाभाविक है कि बड़ाबाजार के हिन्दी भाषा भाषियों पर इतिहास के इस बदलते क्षण का प्रभाव पड़ा और संगठन के लिए यहाँ का व्यापारी वर्ग भी प्रस्तुत होने लगा। १६०१ ई० में महारानी विक्टोरिया चल बसीं। उस समय तक व्यापार के क्षेत्र में मारवाड़ी एसोसियेशन स्थापित हो चुका था।

कलकत्ता ब्रिटिश भारत की राजधानी था। अंग्रेज व्यापारी और शासक दोनों थे। व्यापार के लिए उन्हें मारवाड़ियों पर सर्वाधिक भरोसा करना पड़ता था। लार्ड कर्जन का काल विकास की दृष्टि से महत्वपूर्ण कहा जा सकता है। इसी काल में मारवाड़ी व्यापारी अधिक से अधिक अंग्रेजों के सम्पर्क में आये और इसी काल में अधिक से अधिक राजनीति चेतना भी भारतवर्ष में जागी। प्रशासन की भेद-दृष्टि और कूट-दृष्टि में कर्जन का जबाब नहीं था। उसने १९०५ ई० में बंगाल का बँटवारा करने का फरमान जारी कर दिया। यह आदेश ही सुलगती आग में घी का काम कर गया। कांग्रेस खुलकर सामने आ गयी और सम्पूर्ण देश में विद्रोह और सशस्त्र क्रांति की लहर दौड़ गयी। सुरेन्द्र नाथ बनर्जी की अग्नि-वक्तृता ने सारे देश के रक्त को खौला दिया। १९०६ ई० में कलकत्ता में दादा भाई नौरोजी की अध्यक्षता में कांग्रेस का अधिवेशन हुआ, जिसमें चार प्रस्ताव पारित किये गये—स्वराज, स्वदेशी, विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार और राष्ट्रीय शिक्षा। युगान्तर और अनुशीलन पार्टियां अलग कहर मचाये हुए थीं। अंग्रेज अब घृणा की चीज बन रहे थे। इस दरम्यान मारवाड़ी एसोसियेशन की भूमिका राष्ट्रीय संज्ञा पाने लायक नहीं कही जा सकती थी। इसका एकमात्र लक्ष्य था, राजनीति से अलग रहकर व्यापार में पांव अधिक मजबूत करना। किन्तु दूसरी ओर अपनी रूढ़ियों के साथ ही एसोसियेशन सामाजिक एवं व्यापारिक शुद्धता के लिए सक्रिय कार्य कर रहा था। बंग-भंग का आदेश पंचम जार्ज ने १९१२ ई० में रद्द कर दिया था। १९१२ ई० में ही भारत की राजधानी कलकत्ता से दिल्ली स्थानान्तरित हुई। प्रशासनिक दृष्टि इसका मुख्य कारण था किन्तु एक और मुख्य कारण था कि बंगाल में अब अंग्रेजों को शासन चलाना कठिन हो रहा था क्योंकि क्रांतिकारियों ने उनके मन में मौत की दहशत भर दी थी। कांग्रेस के प्रस्ताव, प्रस्ताव भर रह गये। उन पर अमल नहीं के बराबर हुआ। इस बीच प्रथम विश्वयुद्ध छिड़ गया और विलायती माल का आना कम हो गया। फलस्वरूप भारत से विदेश जाने वाले भारतीय कच्चे मालों की मांग बढ़ गयी। युद्ध ने आर्थिक परिवर्तन किया। भारतीय व्यापारियों ने बहुत धन कमाया। कलकत्ता के बड़ाबाजार में भी धन बरसने लगा।

बड़ाबाजार में चेतना का ज्वार

किन्तु युद्ध समाप्ति के बाद अंग्रेजों ने कुछ ऐसी नीति अपनायी कि व्यापारियों का पैसा उनकी ओर खिसकने लगा। इसे समझकर जिन्होंने व्यापार से हाथ खींच लिया, वे ही बच गये,

किन्तु जो अंग्रेजी नीति से अनजान रहे और व्यापार करते रहे, उनका धन इंगलैण्ड चला गया और भारतीय व्यापारियों की स्थिति बदतर होती गयी। १९१८ ई० से ही व्यापार में ह्रास होने लगा। अंग्रेज सरकार ने युद्ध में मदद पाने के लिए भारतीयों को जो आश्वासन दिया था, युद्ध के बाद उससे वह मुकर गयी। १९२० ई० में लाला लाजपत राय की अध्यक्षता में कलकत्ता में कांग्रेस का अधिवेशन हुआ, जिसमें गांधीजी का असहयोग आन्दोलन का प्रस्ताव पास हुआ और विदेशी वस्त्र बहिष्कार आन्दोलन आरम्भ हुआ। इसमें भाग लेने से व्यवसायी एवं व्यापारी कतराये। फिर भी कुछ ने इस आन्दोलन में भाग लिया। कहना नहीं होगा कि आन्दोलन में भाग लेने वाले व्यवसायी तरुण थे। कुछ व्यवसायी तटस्थ भी हो गये। नयी पीढ़ी के लोग, जो भाग नहीं लेते थे, वे भी इस आन्दोलन के समर्थक थे। जिनमें राजनीतिक चेतना आ गयी थी, उनमें ज्वाला प्रसाद भरतिया भी एक थे, जिनकी दुकान सूतापट्टी में थी। १९२० ई० से ही जमनालाल बजाज ने अपना जीवन खद्दर के प्रचार-प्रसार में लगा दिया। वे आगे चल कर कांग्रेस के कोषाध्यक्ष बने और गांधीजी के पाँचवें पुत्र के रूप में विख्यात हुए। जमनालाल जी ने ही १९२० ई० में बड़ाबाजार में कांग्रेस की भी स्थापना की। इससे बड़ाबाजार के व्यापारी वर्ग में वाणिज्य के साथ-साथ राजनीतिक चेतना भी जाग्रत होने लगी।

व्यापारी और फाटका

फाटका व्यापार में धन शीघ्रता से आता है और जाता भी है। इस व्यापार को शुरू करने वालों में शायद पहले व्यक्ति थे हरिराम चमड़िया। उनके पिता नन्दराम चमड़िया फतेहपुर से कलकत्ता १८३३ ई० में आये थे। उनके पुत्र रामप्रताप चमड़िया थे जो कलकत्ता के दस बड़े फाटकेबाजों में एक सिद्ध हुए। वे अफीम का व्यापार करते थे जिसमें फाटके द्वारा करोड़ों रुपये उन्होंने कमाये। कलकत्ता में पाट, हेसियन, चांदी, रूई, गल्ले आदि में फाटके चलने लगे। हरदत्तरायजी ने ही अफीम चौरास्ते पर फाटका शुरू किया था और प्रति सप्ताह 'डिफरेंस' के भुगतान की व्यवस्था करवायी थी। इसी की देखादेखी अन्य फाटकों में भी यही व्यवस्था चालू हुई।

फाटके के कार्य में बिड़ला परिवार का भी विशेष योग रहा। शिवनारायण बिड़ला १९०० ई० में बम्बई से कलकत्ता आये और अफीम चौरास्ते पर काली गोदाम में बलदेवदास-जुगलकिशोर के नाम से व्यापार आरम्भ किया था। सम्भवत: वे पहले अफीम का व्यापार करते थे। बलदेवदास बिड़ला ने फाटके के कारबार में अपने फर्म की उन्नति की। १९०२ ई० में बलदेवदास बिड़ला के बड़े पुत्र जुगलकिशोर बिड़ला कलकत्ता आये। २०-२२ वर्ष की उम्र से ही वे तीसी, गेहूं और चाँदी का काम करने लगे। उनके व्यवसाय का ढंग अधिकतर फाटका ही रहा। लाला लाजपत राय ने जुगलकिशोर बिड़ला को 'महान जुगलकिशोर' की उपाधि से विभूषित किया था। जब बिड़ला परिवार के व्यवसाय की बागडोर घनश्यामदास बिड़ला के हाथ में आयी, तो उन्होंने फर्म का नाम बदल कर 'बिड़ला ब्रदर्स' कर दिया। हालांकि उन्होंने फाटके का कारबार छोड़ा नहीं, पर आवश्यकतानुसार ही इसका सीमित उपयोग किया। यही घनश्यामदास बिड़ला पहिले-पहल मारवाड़ियों में उद्योग के प्रति रुचि-जाग्रत करने वाले पुरोधा हैं और इनके नेतृत्व में ही मारवाड़ी व्यवसायी आधुनिकता की ओर बढ़ने लगे।

मंगनीराम रामकुमार बांगड़ फर्म ने बड़ी उन्नति की। युद्ध के समय इसका विकास जोरों पर हुआ। दोनों भाई शेयर बाजार में दलाली करते थे और अपना निजी व्यापार भी करते थे।

सूरजमल जालान ने जूट मिलों की स्थापना की और जूट प्रेस बैठायी। इसमें उनके साथी थे नागरमल बाजोरिया। फर्म का नाम हुआ — सूरजमल नागरमल।

मारवाड़ी-समाज की जागरूकता

मारवाड़ी समाज व्यवसाय पर छाता जा रहा था। अब यह नवीन ढंग की सभा-संस्थाएं स्थापित करने लगा था। यह भी उल्लेखनीय है कि ओंकार मल सराफ ने बलदेवदास दुधवेवाला के साथ प्रथम मारवाड़ी भारतीय बैंक 'कलकत्ता इण्डस्ट्रियल बैंक' की भी स्थापना की थी। १८९९ ई० में रंगलाल पोद्दार ने 'मारवाड़ी एसोसियेशन' की स्थापना की। हरसुख राय चोखानी एवं तोलाराम गोयनका इसके पृष्ठपोषक थे। अन्य सहयोगियों में मोतीलाल चांदगोठिया, प्रह्लादराय डालमिया, शिवनारायण राय सेकसरिया, दयाचन्द सरावगी और रामगोपाल खेमका थे। इसके माध्यम से वे लोग समाज का हित साधन करना चाहते थे। इससे मारवाड़ी समाज में जागरण भी बहुत हुआ। इसी संस्था के माध्यम से मारवाड़ी वर्ग व्यापार के क्षेत्र में और भी प्रगति करता चला गया। यह संस्था व्यापार की शुद्धता पर भी बहुत ध्यान देती थी। घी के मिलावट के एक मामले में इस संस्था ने मिलावट करने वाले व्यापारी का सामाजिक और व्यापारिक रूप से बहिष्कार किया था। किन्तु धीरे-धीरे यह संस्था अंग्रेज-परस्त होने लगी और सरकारी उपाधियों 'सर', 'नाइट' अथवा 'रायबहादुर' के लिए लालायित रहने लगी। समाज की रूढ़ियों की भी यह कट्टर समर्थक हो गयी और अब यह बड़े-बड़े पूँजीशाहों की ही संस्था रह गयी। इसके लोग कॉरपोरेशन और कौंसिल में भी प्रतिनिधि हो कर गये। सर्वसाधारण का सम्बन्ध अब इस संस्था से समाप्त हो गया और वे निराश हो गये।

व्यापारिक संगठन

कलकत्ता के व्यापारिक क्षेत्र में बंगाल चेम्बर्स आफ कामर्स नाम की संस्था थी, जो अंग्रेज व्यापारियों का ही हित साधन करती थी। उसमें भारतीय व्यापारियों का कोई भी भाग नहीं था। अंग्रेज तथा भारतीय व्यापारियों के बीच झगड़ों को यही सुलझाती थी, जिसमें अंग्रेजों की ओर पक्षपात होता था। दोषपूर्ण शर्तों के बावजूद उसमें भारतीय व्यापारियों को लाचार हो जाना पड़ता था एवं उसका निर्णय भी मानना पड़ता था। सबसे बड़ी बात तो यह थी कि बड़ाबाजार के व्यापारियों के माध्यम से अंग्रेजों का व्यापार बढ़ता था और इन व्यापारियों को चारों ओर से अंग्रेजों के हित पर बलि चढ़ना पड़ता था। यह दुःखद स्थिति १८१३ ई० से १९०० ई० तक रही। १९०० ई० में बड़ाबाजार के व्यापारी इस ओर संगठित हुए और इसी साल इनलोगों ने मिलकर मारवाड़ी चेम्बर्स आफ कामर्स की स्थापना की जिसके अगुआ बने ऋद्धकरण सुराना। हाफाराम खेमका और गणपत राय खेमका इनके साथ थे। सभापति हाफाराम खेमका एवं प्रधानमंत्री ऋद्धकरण सुराना बने। इसका प्रभाव बंगाल चेम्बर्स आफ कामर्स पर पड़ा। मारवाड़ी चेम्बर्स आफ कामर्स ने झगड़े सुलझाने के लिए एक कमेटी बनायी। इस संस्था के अस्तित्व में आने से अंग्रेजों के कान खड़े हुए और ये लोग मनमानी की प्रवृत्ति छोड़ने लगे। फिर तो संस्थाओं का दौर आरम्भ हो गया।

मारवाड़ी एसोसियेशन में अब पर्याप्त दोष आ गये थे। अब इसमें पक्षपात एवं ठकुरसुहाती का पूरा साम्राज्य स्थापित हो गया। इस से क्षुब्ध होकर कुछ लोगों ने "वैश्य सभा" की स्थापना की जिसके पुरोधा रामकुमार गोयनका हुए। इसके पहले एसोसियेशन से खिन्न होकर कुछ लोगों ने

'वैश्य मित्र सभा' की स्थापना की थी। यही सभा 'वैश्य सभा' बन गयी। इसमें सभी व्यापारियों को बिना भेदभाव के समान समझा जाता था। धनी-गरीब का भेद तो कतई नहीं था। इसमें मारवाड़ियों के अलावे अन्य समाजों के व्यापारी भी सम्मिलित हुए। इस संस्था के कार्य क्षेत्र में व्यवसाय, वाणिज्य, राजनीति, समाज, संस्कृति, धर्म और सेवा सभी आते थे और यह सभी पर विचार करती थी। मारवाड़ी एसोसियेशन जहाँ सरकारी अधिकारियों के इशारे पर साँस लेता था, वहीं वैश्य सभा का अपना स्वतंत्र अस्तित्व बना। इसने उन सारी बातों की उपेक्षा की जिनसे इसकी नीति प्रभावित होती थी। इस संस्था ने व्यापारियों के अभाव और अभियोगों को दूर करने के लिए काफी प्रयत्न किया एवं रेलवे और जहाजी गोदामों में व्यापारियों को सुविधा दिलवायीं। सरकारी अधिकारियों पर दबाव डाल कर वैश्य सभा ने पोस्ट आफिस खुलवाया था।

उद्योग वाणिज्य की संस्थाएं

इस दौर में वाणिज्य और व्यवसाय सम्बन्धी निम्न सेवा संस्थाएं स्थापित हुईं — भारत चेम्बर्स आफ कामर्स (१८९५ ई०), मारवाड़ी एसोसियेशन (१८९९ ई०), मर्चेण्ट्स चेम्बर्स आफ कामर्स (१९०१ ई०), इण्डियन चेम्बर्स आफ कामर्स (१९२६ ई०), अखिल भारतीय मारवाड़ी सम्मेलन (१९३५ ई०), ओरियेण्टल चेम्बर्स आफ कामर्स (१९३२ ई०), टेक्सटाइल्स मर्चेण्ट्स एसोसियेशन (१९६१ ई०)।

जब मारवाड़ी समाज व्यवस्थित हो गया और यह एक संगठित समाज के रूप में बड़ाबाजार को केन्द्रित कर सारे उत्तर भारत में छा गया, तो स्वाभाविक तौर पर इसे कतिपय बाधाओं एवं असुविधाओं का सामना करना पड़ा। विदेशी सरकार की ओर से भी असुविधाएं पैदा कर दी जाती थीं। तब मारवाड़ियों द्वारा आवश्यक रूप से ऐसा अनुभव किया जाने लगा कि इन असुविधाओं के निराकरण के लिए उन्हीं क्षेत्रों में इस वर्ग के हित की रक्षा की जाय, जहाँ से ये उठती हैं। फलस्वरूप मारवाड़ी एसोसियेशन इसके लिए प्रयत्न करने लगा मारवाड़ी समाज के लोगों का बंगाल विधान परिषद और कलकत्ता नगर निगम में प्रतिनिधित्व हो — इसके लिए २३ नवम्बर १९०९ ई० को मारवाड़ी एसोसियेशन ने तत्कालीन बंगाल-सरकार के मुख्य सचिव के द्वारा गवर्नर के पास अपना प्रतिवेदन रखा। कुछ सुनवाई न होने पर १३ अप्रैल १९१२ ई० को इसने पुनः मुख्य सचिव के समक्ष अपना प्रतिनिधित्व किया। इसका समुचित उत्तर भी मिला और मारवाड़ी समुदाय को विधान परिषद तथा कलकत्ता नगर निगम में प्रतिनिधित्व प्राप्त हुआ। यह प्रतिनिधित्व बड़ाबाजार का ही था।

उस समय अंग्रेज प्रशासकों द्वारा हिन्दी को छोड़ कर प्रायः सभी आधुनिक भारतीय भाषाओं में सरकारी विज्ञप्ति तथा अन्य चीजें प्रकाशित की जाती थीं। ५ दिसम्बर १९१० ई० को इसके विरुद्ध मारवाड़ी एसोसियेशन द्वारा भारत सरकार के वित्त विभाग के सचिव को नागरी लिपि में सूचनाएं प्रकाशित करने के लिए प्रतिवेदन किया गया। इस प्रतिनिधि मंडल ने कहा कि भारतीय भाषाओं में नागरी लिपि सब से वैज्ञानिक, सुदृढ़, सुचारु एवं बहुमत द्वारा लिखी-पढ़ी जानेवाली महत्वपूर्ण लिपि है। अतः हिन्दी भाषा को सरकारी प्रकाशनों में उचित स्थान मिलना चाहिए।

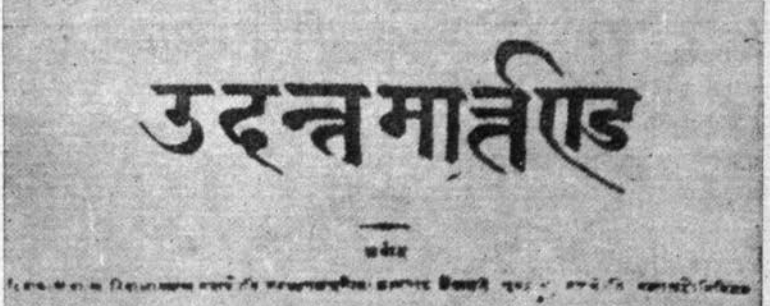
मारवाड़ी एसोसियेशन का वही महत्व व्यापार के क्षेत्र में था, जो राजनीति के क्षेत्र में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का था, किन्तु रूढ़िवादी चौधरीपन से ग्रस्त यह संस्था फिर राष्ट्रीय और सामाजिक दौर में अपनी पुराणपंथी नीति के कारण पिछड़ गयी और इसका स्थान लिया उपरोक्त संस्थाओं ने।

पत्रकारिता का प्रारम्भ

जॉब चार्नाक ने जिस कलकत्ता की नींव १६९० ई० में रखी थी, वह द्रुतगति से विकसित होता जा रहा था। हम पहले ही कह चुके हैं कि कलकत्ता-निर्माण का उद्देश्य उत्तर भारत की समृद्धि का दोहन था और यह साम्राज्यवादी कार्य व्यापार तथा उपनिवेशवादी प्रशासन द्वारा हो रहा था। कलकत्ता सम्पूर्ण विश्व का आकर्षण-केंद्र बनता जा रहा था और जनसंख्या भी बढ़ती ही चली जा रही थी। यातायात के साधन भी व्यापक होते जा रहे थे। व्यापारिक एवं औद्योगिक प्रसार के साथ-साथ सम्पर्क के साधन स्वरूप केवल अंग्रेजी समाचार पत्र और कतिपय मिशनरियों के बंगला-बुलेटिन-प्रपत्र कार्यरत थे।

हिंदी भाषियों के बड़ाबाजार क्षेत्र में इस सम्पर्क-साधन की कमी की आवश्यकता को सर्वप्रथम अनुभव किया कलकत्ता सिविल कोर्ट के एक व्यक्ति पं० जुगलकिशोर शुक्ल ने और उन्होंने १८२६ ई० में हिन्दी के प्रथम पत्र 'उदन्त मार्तण्ड' का प्रकाशन आरम्भ किया, जिसमें उन्होंने न्यायालय की सूचनाओं का अधिक महत्व दिया। यद्यपि उनका दावा था कि तब लोगों में अच्छी हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए इस पत्र का प्रकाशन उन्होंने आरम्भ किया था, पर भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के अनुसार हिंदी की नयी दिशा और नया रूप १९०३ ई० में जाकर निखरा।

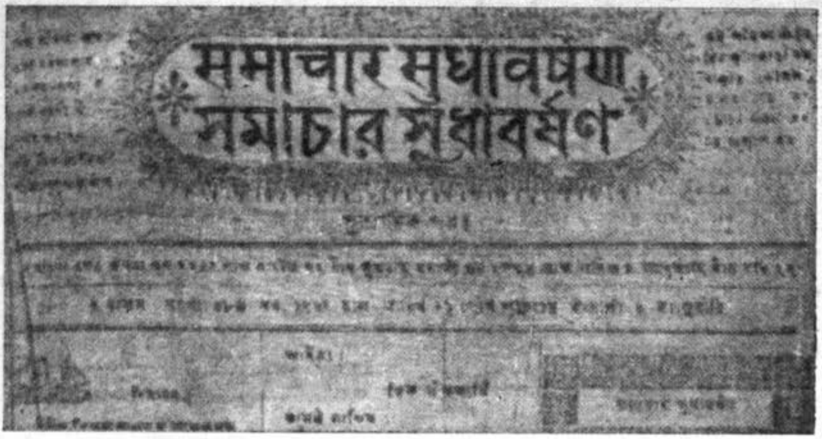
'उदन्त मार्त्तण्ड' के प्रथम अंक का प्रथम पृष्ठ



'उदन्त मार्तण्ड' हिंदी का प्रथम पत्र था जो बड़ाबाजार के अमरतल्ला स्ट्रीट से निकला और इसे ३० मई १८२६ ई० को आरंभ किया गया। अंग्रेज सरकार नहीं चाहती थी कि देशी लोगों में जागरण करवटें ले। उन्हें पलासी युद्ध का स्मरण था। यद्यपि १८५० ई० का स्वातंत्र्य विद्रोह अभी २४ वर्ष दूर था। दूरदर्शी अंग्रेज दूसरा नंद कुमार नहीं चाहते थे, उन्होंने देशी आत्मा के आलोक के स्रष्टा 'उदन्त मार्तण्ड' को कोई भी सुविधा नहीं दी बल्कि उनकी चाल यह रही कि पत्र कैसे भी बन्द हो जाय। 'उदन्त मार्तण्ड' को न डाक-व्यय में रियायत मिली और न अन्य सहूलियतें ही। फलस्वरूप 'उदन्त मार्तण्ड' बन्द हो गया। फिर १८५० ई० के ऐतिहासिक जागरण के काल में ही शुक्लजी ने

'सामदंत मार्तण्ड' का प्रकाशन आरम्भ किया, जिससे संकेत मिलता है कि १८५७ ई०की पूर्व भूमिका पर पनप रहे एकता और समता के प्रयास को हमारे चिंतक ठोस धरातल प्रदान कर रहे थे।

१८५७ ई० के प्रथम स्वातंत्र्य संग्राम के प्रवर्तक 'हिंदी बंग दूत', 'प्रजामित्र' और हिंदी का प्रथम दैनिक समाचार पत्र 'सुधा-वर्षण' कलकत्ते से प्रकाशित हो चुके थे। इस प्रकार सम्पूर्ण हिंदी


समाचार सुधावर्षण
समाचार सुधावर्षण

पत्रकारिता का जन्म आज से १५५ वर्ष पहले कलकत्ता के ही हिंदी भाषियों के क्षेत्र बड़ाबाजार में हुआ।

कलकत्ता में हिंदी विकास के कार्यों पर प्रशंसात्मक टिप्पणियाँ लिखते हुए 'माधुरी' में स्व० पं० विष्णुदत्त शुक्ल ने लिखा था—'कलकत्ता में जब हिंदी पत्रों के संबंध में इतना कार्य हो चुका था, तब तक अन्य किसी स्थान पर हिंदी का एक भी पत्र प्रकाशित नहीं हुआ था।' कलकत्ता का हिंदी क्षेत्र बड़ाबाजार ही था। यह गौरव निश्चय ही बड़ाबाजार को प्राप्त है कि जिसने व्यापार-वाणिज्य को ही केवल वर्चस्व नहीं दिया बल्कि हिंदी पत्रकारिता, भाषा और साहित्य को समृद्ध करने में भी अपनी भूमिका निभायी। यह अलग बात है कि बंगाल हिंदी भाषी क्षेत्र नहीं है। फिर भी हिंदी के प्रति इसका अवदान हिंदी भाषी क्षेत्रों से कई गुणा अधिक है। इस हिंदी-यात्रा में केवल हिंदी भाषी ही साथी हों, ऐसा नहीं था। हिंदी के निर्माण में जिन बंगालियों ने आहुति दी, उनका भी स्मरण करना हमारा धर्म है। इन नामों में राजा राममोहन राय अग्रणी थे, जिन्होंने 'बंगदूत' पत्र निकाला था।

राष्ट्रीय उत्थान में पत्रकारिता

कलकत्ता से प्रकाशित 'भारतमित्र' (१८७८ ई०), 'सारसुधानिधि' (१८७९ ई०) और 'उचित वक्ता' (१८८० ई०) समाचार-पत्र विशेष उल्लेखनीय हैं। पं० छोटूलाल मिश्र और पं० दुर्गादत्त मिश्र ने 'भारतमित्र' का प्रकाशन १७ मई १८८७ ई० को आरम्भ किया। इसके प्रथम सम्पादक पं० छोटूलाल मिश्र थे और प्रबन्धकर्त्ता थे पं० दुर्गाप्रसाद मिश्र। यद्यपि यह साप्ताहिक बनकर प्रकाशित हुआ, परन्तु १८९७ ई० में यह दैनिक हो गया और १८९८ ई० में ही बन्द भी हो गया। पुनः


दैनिक भारतमित्र।

दैनिक भारतमित्र

The Dainika Bharatamitra.

साप्ताहिक भारतमित्र।

Calcutta Friday the 20th February 1914

१८९९ ई० में सस्ते मूल्य में यह पत्र प्रकाशित हुआ। इसके प्रख्यात सम्पादकों में पं० छोटूलाल मिश्र, पं० दुर्गाप्रसाद मिश्र, पं० हरमुकुन्द शास्त्री, पं० रुद्रदत्त शर्मा, पं० अमृतलाल चक्रवर्ती, बाबू बालमुकुन्द गुप्त, पं० बाबूराव विष्णु पराड़कर, पं० अम्बिका प्रसाद वाजपेयी एवं पं० लक्ष्मी नारायण गर्दे थे। यह वह युग था, जब १८८५ ई० में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस राष्ट्रीय जागरण मंच के रूप में स्थापित हो चुकी थी एवं राष्ट्रीय चेतना करवटें लेने लगी थीं। स्वामी विवेकानन्द एवं ऋषि दयानन्द नव-जागरण के पुरोधा बन कर सामने आये। सम्पूर्ण भारत एक नये आलोक के लिए प्रस्तुत हो रहा था। ऐसी स्थिति में 'भारतमित्र' की पत्रकारिता बहुत प्रखर हो गयी थी और इसके सम्वादों की सूची से ज्ञात होता है कि बड़ाबाजार केवल कलकत्ता ही नहीं, सम्पूर्ण भारत की चेतना की रंगभूमि बनता जा रहा था। इसके सम्पादकों में बंगाली एवं मराठी के दिग्गज मनीषियों का होना इस बात का प्रमाण है।

१३ जनवरी १८७९ ई० में प्रकाशित 'सार सुधानिधि' के सम्पादक पं० सदानन्द मिश्र थे।


सार सुधानिधि

उनके सक्रिय सहयोगियों में पं० दुर्गाप्रसाद मिश्र, पं० गोविन्द नारायण मिश्र और पं० शम्भुनाथ मिश्र थे। यह पत्र ओज और तेज से समन्वित था। अतः सरकारी कोप के चलते १८९० ई० में बंद हो गया। हिंदी पत्रकारिता के उन्नायक पं० दुर्गाप्रसाद मिश्र ने 'उचित वक्ता' का प्रकाशन ७ अगस्त १८८० ई० को किया। यह उनका निजस्व प्रकाशन था। हिंदी का साप्ताहिक पत्र 'बंगवासी' १८८० ई० में प्रकाशित हुआ था। पं० अमृतलाल चक्रवर्ती के अलावा बाबू बालमुकुन्द गुप्त, पं० बाबूराव विष्णु पराड़कर, पं० अम्बिका प्रसाद वाजपेयी तथा लक्ष्मी नारायण गर्दे ने 'भारतमित्र' में शामिल होने के पूर्व हिंदी पत्र 'बंगवासी' में ही सम्पादन कार्य का प्रशिक्षण लिया, पर उदार एवं विनम्र नीति के


हिन्दी
बङ्गवासी।

कारण बाबू बालमुकुन्द गुप्त, पराड़करजी तथा वाजपेयी जैसे उग्र राष्ट्रचिन्तक पत्रकारों को इस पत्र से संबंध-विच्छेद कर लेना पड़ा।

बीसवीं सदी के आरम्भ में १९०३ ई० में पं० गोविंद नारायण मिश्र ने 'सारस्वत' तथा पं० कालीप्रसन्न काव्यविशारद ने राजनैतिक पत्र 'हितवार्ता' निकाले। हितवार्ता के सम्पादक पं० बाबूराव विष्णु पराड़कर थे तथा इसे आचार्य गोविन्द नारायण मिश्र का वरद्-हस्त प्राप्त था। १९०४ ई० में शिवचंद्र भरतिया के सम्पादकत्व में 'वैश्योपकारक' का प्रकाशन हुआ। इसका दृष्टिकोण संकुचित तथा वर्ग विशेष का हितसाधन था। इसमें लार्ड कर्जन की प्रशंसा छपी थी। इसमें पं० माधव प्रसाद मिश्र की रचनाएं भी कभी-कभी छपती थीं, पर भरतियाजी के अनुरोध पर मिश्रजी ने इसका सम्पादन-भार सम्हाला। बीसवीं सदी के प्रथम दशक में राजनीतिक चेतना के क्षेत्र में 'लाल-बाल-पाल' की लोकप्रियता का उत्ताप बढ़ रहा था और सारा देश इससे प्रभावित हो रहा था। तिलक युग की इस अग्नि-चेतना के प्रचारक कलकत्ता के पत्रों में 'भारतमित्र', 'मारवाड़ी बंधु' और 'नृसिंह' थे। 'नृसिंह' पण्डित अम्बिका प्रसाद वाजपेयी की राजनीतिक मासिक पत्रिका थी, जिसका प्रकाशन नवम्बर १९०७ ई० में आरम्भ हुआ था। आरम्भ में इसे पं० गोविंद नारायण मिश्र और पं० दुर्गाप्रसाद मिश्र का सक्रिय सहयोग मिला। इस पत्र ने स्वराज की आवश्यकता ध्वनित कर तिलक-युग की सिंह-गर्जना को बंगाल में प्रतिध्वनित किया। वास्तव में हिंदी पत्रकारिता मिश्र-बंधुओं की चिर-ऋणी रहेगी।

'एकलिपि विस्तार परिषद' के मुख पत्र के रूप में 'देवनागर' का प्रकाशन १९०७ ई० में बाबू यशोदानन्दन अखौरी और उमापतिदत्त शर्मा की देख-रेख में उक्त परिषद की ओर से हुआ था। इसका उद्देश्य देश की समस्त भाषाओं के लिए देवनागरी लिपि को सर्वमान्य लिपि के रूप में मान्यता दिलाना था। इसमें हर प्रकार से भाषा के प्रश्न को प्रधानता दी जा रही थी। 'एक लिपि

विस्तार परिषद' के संस्थापक एवं 'देवनागर' के संचालक बंगीय शलाका पुरुष न्यायमूर्ति श्री शारदा चरण मित्र थे। उन्होंने बंग साहित्य परिषद के अध्यक्ष पद से घोषणा की थी—'इंगराजी आमादेर साधारनेर भाषा हइते पारे ना। इंगराजी शिक्खा आमादेर साहित्यिक उन्नतिर आघातेर कानून। वर्तमाने हिंदी अनेक परिमानेई आमादेर राष्ट्रभाषार अभाव पूरन करिते पारे। हिंदी ते सहजेई शिक्खा करा जाय, सुतरां सहजेई आर्यावर्तेर राष्ट्रभाषा हइते पारे।'

पत्रकारिता में व्याकरण

'भारतमित्र' ही एक प्रकार से हिन्दी के प्रथम सर्वांगपूर्ण पत्र की संज्ञा पा सकता है, जिसका गठन, सम्पादन और प्रकाशन तत्कालीन स्थिति के परिप्रेक्ष्य में क्रांतिदर्शी कहा जा सकता है। भारतमित्र की पत्रकारिता का उद्देश्य राष्ट्रीय चेतना और भाषा साहित्य का उत्थान था। आज की तरह कोरी पत्रकारिता या सनसनीखेज लफ्फाजी उस उदयकाल की पत्रकारिता का लक्ष्य नहीं था। भारतमित्र ने व्याकरण की शुद्धि की तरफ भी ध्यान दिया और इस सम्बन्ध में उसमें प्रकाशन होने लगे। दूसरी तरफ इस पत्र ने सम्वादपत्रों का इतिहास १९०६ ई० में प्रकाशित किया। 'सरस्वती' के प्रख्यात सम्पादक आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने १९०५ ई० में अपने पत्र में 'व्याकरण तथा भाषा' शीर्षक लेखमाला प्रारम्भ कर हिन्दी साहित्य में शब्दानुशासन पर जोर दिया। बाबू बालमुकुन्द गुप्त ने 'भारतमित्र' में 'आत्माराम' के उपनाम से आचार्य द्विवेदी पर सशक्त व्यंगात्मक प्रहार किए। इस सन्दर्भ में 'अनस्थिरता' शब्द पर हुए अभूतपूर्व वाद-विवाद में बाबू बालमुकुन्द गुप्त का पक्ष प्रबल रहा। आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी की असहायावस्था को देख कर तत्कालीन दिग्गज साहित्यकारों के आग्रह पर आचार्य-प्रवर गोविन्द नारायण मिश्र ने 'हिन्दी बंगवासी' में 'आत्माराम की टें टें' शीर्षक बहुचर्चित लेखमाला द्वारा बाबू बालमुकुन्द गुप्त के आरोपों का खण्डन किया। पुन: विभक्ति का प्रयोग संयुक्त हो अथवा स्वतन्त्र—इस विषय पर भी आचार्य-प्रवर गोविन्द नारायण मिश्र ने 'हितवार्ता' पत्र में 'विभक्ति विचार' नामक अपनी प्रसिद्ध लेखमाला प्रकाशित कर व्याप्त भ्रांतियों का खण्डन किया। इन ऐतिहासिक वाद-विवादों से हिन्दी भाषा को व्याकरण का प्रबल अनुशासन मिला तथा तत्कालीन हिन्दी पत्रकारिता की तेजस्विता तथा जागरुकता सर्वसाधारण पर प्रकट हुई। यही कारण था कि महामना पं० मदनमोहन मालवीय द्वारा स्थापित 'हिन्दी साहित्य सम्मेलन' का द्वितीय वार्षिक सम्मेलन जब १९११ ई० में हुआ, तब सर्वसम्मति से आचार्य-प्रवर गोविन्द नारायण मिश्र को इसका सभापति चुना गया। यह प्रकारान्तर में अहिन्दी भाषी प्रान्त बंगाल के बड़ाबाजार अंचल के हिन्दी-प्रेमियों की गौरवमयी उपलब्धियों के प्रति सम्मान का द्योतक था।

स्वाधीनता संघर्ष अपने यौवन की ओर बढ़ रहा था। यह कहना अनुचित नहीं होगा कि उस समय की मूल धुरी स्वाधीनता की प्राप्ति थी जिसे हम राजनीति नहीं कह सकते हैं। इस धुरी ने जीवन के चतुर्दिक संगठन और परिमार्जन का ज्वार उठा दिया था। राजनीति इस धुरी पर घूमने वाली पुतलीमात्र थी एवं साहित्य इसका संवाहक था। प्रत्येक पत्र-पत्रिका द्वारा किसी न किसी रूप में स्वाधीनता प्राप्ति की चेतना जगायी जा रही थी। तिलक, अरविन्द, लाजपत राय, एनी बेसेंट, विपिनचन्द्र पाल आदि का गरम नेतृत्व नरमपंथी गोखले के हाथ में आ रहा था और सत्याग्रह, असहयोग तथा बहिष्कार का गांधी युग प्रारम्भ हो रहा था। बीसवीं शताब्दी का दूसरा दशक भारतीय जीवन का संक्रमण काल था। इसी दशक के पांचवें वर्ष में महात्मा गांधी का भारतीय राजनीतिक मंच पर उदय हो गया था और सातवें वर्ष में अचानक ही सम्पूर्ण देश का नेतृत्व इनके हाथ

में आ गया। इसका प्रभाव जीवन के हर क्षेत्र पर पड़ा। पत्रकारिता भी इससे पृथक नहीं रह सकी। बड़ाबाजार में तो १९२१ ई० में महात्मा गांधी स्वयं ५२, जकरिया स्ट्रीट में राधाकृष्ण नेवटिया के मकान में पधारे और सूतापट्टी में स्थित जमनालालजी बजाज की गद्दी स्वाधीनता संग्राम का केन्द्र बन गयी। इसी युग में विश्वमित्र' का प्रकाशन हुआ तथा पं० झाबरमल शर्मा के सम्पादन में 'कलकत्ता समाचार' अस्तित्व में आया। श्री घनश्यामदास बिड़ला की प्रेरणा से १९२१ ई० में सामाजिक क्रांतिकारी साप्ताहिक 'अग्रसर' प्रकाशित हुआ था।

पत्रकारिता में व्यंग्य

दूसरी ओर 'मतवाला' का प्रकाशन भी बड़े महत्व का रहा। इस साप्ताहिक की शुरूआत १९२४ ई० में हुई। इसके संचालक महादेव प्रसाद सेठ थे। इसके सम्पादक-मंडल में महाकवि निराला, आचार्य शिवपूजन सहाय, मुंशी नवजादिक लाल आदि थे। यह उग्रवादी चेतना का पत्र था।


मतवाला

अमिय-गरल, शशिशीकर-रविकर, राग-विराग भरा प्याला
पीते हैं जो साधक उनका प्यारा है यह 'मतवाला' ॥

कलकत्ता, श्रावणशुक्ल ... सं० १९८१, शनिवार। [संख्या ...

निरालाजी इसी के द्वारा हिन्दी साहित्य में प्रतिष्ठित हुए। इसके पूर्व वे रामकृष्ण मिशन के तत्वावधान में आध्यात्मिक पत्रिका 'समन्वय' के हिन्दी संस्करण का सम्पादन करते थे। उन्होंने 'रामकृष्ण कथामृत' का हिन्दी में अनुवाद भी किया था। 'समन्वय' के सम्पादक माधवानन्द थे। उनके साथ निरालाजी ने ढाई वर्षों तक कार्य किया। निरालाजी पर बालकृष्ण प्रेस के मालिक महादेव प्रसाद सेठ और उनके मित्र मुंशी नवजादिकलाल श्रीवास्तव की विशेष कृपा रहती थी। 'बालकृष्ण प्रेस' बालकृष्ण भट्ट के नाम पर खोला गया था और वहीं से 'समन्वय' भी छपता था।

आचार्य शिवपूजन सहाय के सम्पादकत्व में 'मारवाड़ी सुधार' भी उसी में छपने लगा। प्रेसवाले मकान में ही संन्यासियों के साथ निराला जी भी रहते थे। १९२३ ई० की श्रावण पूर्णिमा को 'मतवाला' का पहला अंक मतवाला मण्डल द्वारा प्रकाशित हुआ। सम्पादक महादेव प्रसाद सेठ थे। निरालाजी हास्य व्यंग्य स्तंभ 'चाबुक' लिखते थे, साथ ही गजराज सिंह वर्मा के नाम से शिवपूजन सहाय की सम्पादकीय टिप्पणियों में संशोधन भी निरालाजी करते थे। 'मतवाला' में बेचन शर्मा 'उग्र' द्वारा रचित कहानियों एवं कविताओं के प्रकाशन को 'विशाल भारत' के सम्पादक पं० बनारसीदास चतुर्वेदी ने 'घासलेटी साहित्य' कह कर ऐतिहासिक विवाद उठाया। निरालाजी 'मतवाला' छोड़कर 'सुधा' में गये पर १९३२ ई० में उसे भी छोड़कर पुन: पत्रकार के रूप में कलकत्ता आये और ४ जून १९३२ ई० को 'रंगीला' नामक साप्ताहिक पत्र का जन्म हुआ। सम्पादक के रूप में निराला का नाम छपा।



मतवाला में पं० रामगोविन्द त्रिवेदी भी थे। बाद में उनके सम्पादकत्व में 'सेनापति' का प्रकाशन ५ नवम्बर १९२६ ई० को हुआ। पुरानी पीढ़ी के पत्रकार पं० लक्ष्मी नारायण गर्दे के सम्पादन में 'श्रीकृष्ण संदेश' साप्ताहिक का प्रकाशन डा० एस० के० बर्मन ने २७ दिसम्बर १९२५ ई० को प्रारम्भ किया। मतवाला मण्डल के प्रमुख सदस्य मुंशी नवजादिकलाल के सम्पादकत्व में 'सरोज' का प्रकाशन साहित्यिक मासिक के रूप में १९२८ ई० में शुरू हुआ।

गाँधी युग के पर्याप्त प्रसिद्ध पत्र 'मौजी' और 'आदर्श' थे। दोनों के सम्पादक शिवपूजन सहाय थे। 'आदर्श' में गांधीवादी चेतना, हिन्दू मुस्लिम एकता, नारी समस्या, हिन्दी का प्रश्न आदि प्रमुख रूप में मुखर रहते थे। १९२५ ई० से १९३५ ई० के कालखण्ड में बड़ाबाजार क्षेत्र से अनेक

पत्र-पत्रिकाएं निकलीं। सचित्र साप्ताहिक 'हिन्दू पंच' १९२६ ई० में पं० ईश्वरी प्रसाद शर्मा



के सम्पादकत्व में प्रकाशित हुआ। शर्मा जी 'मतवाला' के सदस्य रह चुके थे। गांधी युग की प्रसिद्ध मासिक साहित्यिक पत्रिका 'विशाल भारत' १९२८ ई० में कलकत्ता से प्रकाशित हुई। इसके संचालक



प्रख्यात भारतीय पत्रकार पं० रामचन्द्र चट्टोपाध्याय और सम्पादक पं० बनारसीदास चतुर्वेदी थे

'विशाल भारत' का सम्पादन करने वालों में सच्चिदानन्द 'अज्ञेय', श्रीराम शर्मा एवं मोहन सिंह सेंगर भी थे। १९२९ ई० में बैजनाथ केडिया के सम्पादकत्व में 'सेवक' प्रकाशित हुआ। १९३१ ई०



में शिल्प व्यापार सम्बन्धी पत्र 'कलकत्ता इण्डस्ट्रीयल गजट' बद्रीप्रसाद बर्मन ने मछुआ बाजार



से तथा 'उद्योग धन्धा' (सचित्र मासिक) भोलानाथ बर्मन ने १ सरकार लेन से निकाले। साथही



कवेंरलाल बाकलीवाल के सम्पादकत्व में १९२९ ई० में 'रेलवे समाचार' मासिक प्रकाशित हुआ।



हिन्दी का पहला दैनिक पत्र 'समाचार सुधा वर्षण' १८५४ ई० में श्यामसुन्दर सेन के सम्पादकत्व में प्रकाशित हुआ। कलकत्ता के तेजस्वी साप्ताहिक 'भारत-मित्र' का व्यवस्थित दनिक संस्करण १९१२ ई० में प्रकाशित हुआ जिसमें बाबू विष्णुराव पराड़कर और पं० अम्बिका प्रसाद वाजपेयी का सक्रिय सहयोग मिला। पराड़करजी की गिरफ्तारी के बाद वाजपेयी जी को गर्दे जी ने सहयोग दिया किन्तु ७ अगस्त १९१९ ई० को 'भारत-मित्र' का सम्पादन भार गर्देजी को सम्हलाकर वे अलग हो गये। यह पत्र १९३५ ई० तक प्रकाशित होता रहा। १९१४ में पं० अमृतलाल चक्रवर्ती के सम्पादन में दैनिक 'कलकत्ता समाचार' प्रकाशित हुआ जिसकी पुरातनप्रियता पर पं० अम्बिका प्रसाद वाजपेयी ने व्यंग्य लिखे थे। 'कलकत्ता समाचार' में ही बाबू मूलचन्द्र अग्रवाल ने सम्पादन का प्रशिक्षण पाया था। उन्होंने १९१६ ई० में 'विश्वमित्र' को जन्म दिया तथा पं० अम्बिका प्रसाद



वाजपेयी ने १९२० ई० में 'स्वतंत्र' निकाला, जो राजनीतिक, सामाजिक एवं साहित्यिक गतिविधियों के प्रति जागरूक रहा।

१९३० ई० में पं० रामशंकर त्रिपाठी ने 'लोकमान्य का प्रकाशन प्रारंभ किया। १९३१ ई० में ललित कला सम्बन्धी 'रंगमंच' (सचित्र साप्ताहिक) नरोत्तम व्यास के सम्पादकत्व में तथा बैजनाथ



केड़िया के संचालकत्व में 'बांसुरी' प्रकाशित हुए। १८ नवम्बर १९३३ ई० को श्रीगोपाल डागा के



सम्पादकत्व में 'न्यू तूफान' निकला। श्री विशुद्धानन्द विद्यालय के छात्र भी 'आशा' नामक सचित्र



सम्पादक—श्रीगोपाल डागा।

मूल्य)॥

न्यू

तूफान

हलचल मची, हिले सिंहासन, गरुड़ा छोड़ दौड़ भगवान—
तुम्हें जगानेको दुनियांमें आया जोश भरा 'तूफान'॥

—कविवर 'गुलाब'

The New Tufan—The only Hindi Leading Paper in Commerce, sports, Races, amusement, wit and Humerurs published in India.

वर्ष—१ तारीख १८ नवम्बर १९३३ ई० संख्या—१

त्रैमासिक साप्ताहिक निकालते थे, जिसके सम्पादकों में थे ठाकुर विश्वनाथ सिंह, पं० भुवनेश्वर मिश्र 'भुवन' एवं पं० श्रीनिवास शास्त्री।

१९४२ ई० में शांतिनिकेतन से हिन्दी के प्रसिद्ध विद्वान पं० हजारी प्रसाद द्विवेदी के सम्पादकत्व में साहित्य, संस्कृति एवं प्राच्यविद्या प्रधान अप्रतिम त्रैमासिक पत्रिका 'विश्वभारती' का प्रकाशन हुआ। १९४४ ई० में समाजसुधार सम्बन्धी साप्ताहिक पत्र 'समाज सेवक' प्रकाशित हुआ जिसके सम्पादक राधाकृष्ण नेवटिया, गंगाप्रसाद भोतिका और बैजनाथ केड़िया थे। १९४८ ई० में राधाकृष्ण नेवटिया के सम्पादकत्व में 'मारवाड़ी अग्रवाल' मासिक पत्रिका का प्रकाशन हुआ, जो



अखिल भारतीय अग्रवाल महासभा का मुखपत्र था।

१८ अप्रैल १९४८ ई० को 'सन्मार्ग' कलकत्ता से प्रकाशित हुआ और धीरे-धीरे हिन्दी भाषी जनता में यह अपना स्थान जमाता गया। पं० अनन्त मिश्र के सम्पादन काल में इसका स्तर ऊंचा हुआ और इसमें हर क्षेत्र की सामग्री दी जाने लगी जिससे पाठक इसकी ओर अधिक आकर्षित हुए एवं हो रहे हैं। इधर 'रूपलेखा', 'छपते-छपते', 'प्रकाश', 'जनसंसार', 'सूत्रकार' आदि कई दैनिक प्रकाशित होने लगे हैं।

स्वातंत्र्योत्तर काल में 'नया समाज' और 'ज्ञानोदय' पत्रिकाएं कलकत्ता से प्रकाशित हुईं। 'नया समाज' के सम्पादक मोहन सिंह सेंगर एवं 'ज्ञानोदय' के सम्पादक लक्ष्मीचन्द जैन थे। पृथ्वीनाथ शास्त्री के 'सुप्रभात' और भोलानाथ 'बिम्ब' के 'विनोद' की भी चर्चा रही। श्री जगदीश ने 'ज्ञानोदय' से हटकर सुरुचिपूर्ण पत्रिका 'इकाई' का सम्पादन किया। लोहिया जी का 'जन' पहिले-पहल कलकत्ता से ही प्रकाशित हुआ था। आचार्य ललिता प्रसाद सुकुल की 'जनभारती' एवं परमानन्द शर्मा की 'सिद्धंजना' की भी चर्चा रही।

१९६० ई० के बाद पत्र-पत्रिकाओं की जो नयी पीढ़ी सामने आयी, जिसमें लघु पत्रिकाओं का भी एक समूह है। श्री अनय की 'समवेत' और 'विध्वंस' में संक्रिय भूमिका रही है। लघुपीढ़ी की पत्रकारिता में १९६२ ई० में 'स्वधर्म' का प्रकाशन एक महत्वपूर्ण घटना थी। इसके संचालक बाबू ओंकारमल सराफ थे। प्रधान सम्पादक विश्व-विश्रुत इतिहासकार डा० कालिदास नाग, सम्पादक राजस्थानी साहित्य-संस्कृति के उद्भट विद्वान बाबू रघुनाथ प्रसाद सिंहानिया, सहायक सम्पादक आचार्य हरीश शर्मा और प्रबन्ध सम्पादक पं० सत्यनारायण त्रिपाठी 'मंगल' थे। इस पत्र ने भारतीय आध्यात्मिक चेतना को एक प्रकार से झकझोर दिया था। 'संदेशवाहक' साप्ताहिक स्व० बद्रीप्रसाद शर्मा निकालते थे जिसके सम्पादक मंगलजी थे। १९७२ ई० में सांस्कृतिक चेतना से ओतप्रोत 'प्रेमाम्बरा' का भी प्रकाशन हुआ जिसके प्रधान सम्पादक मंगलजी थे। इसी काल में बलराम मिश्र की ज्योतिष पत्रिका 'भविष्यवाणी' भी निकली थी जो एक प्रकार से हिन्दी की प्रथम ज्योतिष पत्रिका थी।

विनोद, अणिमा, रागरंग संदर्भ, शनीचर, युयुत्सा, त्रिकोण, समवेत, अलकावली, रूपाम्बरा, संक्रान्त, विशेष, अ, अन्यथा, कहानियां, विध्वंस, प्रतिबद्ध, अप्रत्याशित, परिदृश्य, तरंगिणी, मुखौटा, लेखन, सामयिक, प्रतिरूप, समानान्तर, अक्षर, कैक्टस, कथा, बोध, गल्पभारती, मणिमय, अपर्णा, सूत्रकार, लोकरंजन, बहस, वृन्त, संसारमित्र, बीरजवान, बंगालमेल, कला संसार, आदि अनेक ऐसी पत्रिकाएं निकलीं जो किसी क्षेत्र, समाज या व्यक्ति का प्रतिरूप थीं और बन्द भी हो गयीं। कुछ चालू भी हैं, कुछ आगे भी बढ़ चुकी हैं। पत्रकारिता के इतिहास में इन पत्रिकाओं का विशेष महत्व नहीं है, किन्तु पत्रकारिता के विकास में ये ऐसे पदचिन्ह हैं जिनका उल्लेख आवश्यक है।

वाणिज्यिक एवं व्यावसायिक संस्थाएं

भारत चेम्बर आफ कामर्स—इसका कार्यालय मौजूदा समय में ८, ओल्डकोर्ट हाउस स्ट्रीट में है। इससे पहले यह हरीसन रोड एवं कलाकार स्ट्रीट के मोड़ पर १९५, हरीसन रोड पर था। इसकी स्थापना १८९५ ई० में मारवाड़ी चेम्बर आफ कामर्स के नाम से की गयी थी, जिसे १९५० ई० के पूर्व ही बदल कर 'भारत चेम्बर आफ कामर्स' कर दिया गया। इसके संस्थापकों में हाफाराम खेमका, ऋद्धकरण सुराना, दौलतराम चोखानी, फूसराज आंचलिया, जोधराज धानुका, भोलानाथ खत्री, आनन्दराम सराफ, कालूराम हीरावत, गुलाबचन्द राठी, गनपतराय खेमका, गणेशराम गडेहिया और सागरमल हरलालका थे। प्रथम सभापति जुहारमल खेमका थे। मूलतः कलकत्ता के प्रमुख वस्त्र-व्यवसायियों ने वस्त्र-व्यवसाय में आनेवाली विभिन्न कानूनी अड़चनों को दूर करने, ब्रिटिश सरकार के सम्मुख प्रतिनिधि मण्डल भेजने और मारवाड़ी समाज के हाथों अधिकाधिक वस्तुओं का व्यापार संचालित हो सके—इस हेतु इस चेम्बर का गठन किया था। चेम्बर ने बहुत सारी मुसीबतों को झेला है। आज व्यापार-उद्योग के क्षेत्र में मारवाड़ी समाज का जो वर्चस्व है वह इसी के चलते है। इसने अपने पोषकों एवं श्रमिकों के हितों की रक्षा के लिए अनेक स्तुत्य कार्य किये हैं। इसका सम्बन्ध न केवल कलकत्ता के व्यावसायिक संगठनों से है अपितु बाहर के अनेक सार्वजनिक एवं सरकारी संस्थाओं-संस्थानों से भी है। कहां किस चीज की जरूरत है तथा कहां की क्या स्थिति है—यह जानकारी सदस्य इसके माध्यम से प्राप्त करते हैं। चेम्बर के सदस्य सरकारी, सार्वजनिक और निजी क्षेत्र की ८० समितियों के लिए दोनों पक्षों का प्रतिनिधित्व करते हैं।

प्रत्येक वर्ष भारत चेम्बर आफ कामर्स की कार्यकारिणी समिति का चुनाव द्वारा गठन किया जाता है। अगणित समस्याओं एवं विषयों के कारण इसकी २४ उपसमितियां बनायी जाती हैं।

इस चेम्बर की सह-संस्थाओं के रूप में २१ संस्थाएं हैं जिनके कार्यकलाप, संगठन तथा चुनाव अलग से होते हैं। १९५४ ई० में चेम्बर ने अपनी स्वर्ण जयन्ती मनायी, उस अवसर पर चेम्बर के इतिहास के बारे में एक विशिष्ट स्मारिका प्रकाशित की गयी। अपने ८२ वर्ष के जीवन में चेम्बर ने दैवी प्रकोप—बाढ़, सूखा, अकाल, दंगा आदि के अवसरों पर पीड़ितों के लिए अपनी ओर से सेवा, बचाव एवं राहत कार्य किये हैं। भारत-चीन और भारत-पाक युद्ध के समय तथा बंगलादेश से आये शरणार्थियों की इसने सहायता की।

मारवाड़ी एसोसियेशन—इस संस्था की स्थापना १८९८ ई० में हुई थी। सम्प्रति इसका कार्यालय १६०, चित्तरंजन एवेन्यू के श्री विशुद्धानन्द सरस्वती विद्यालय में है। इसकी स्थापना का उद्देश्य मारवाड़ी जाति की नैतिक, बौद्धिक, व्यापारिक, आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक स्थिति में सुधार लाना उसे उन्नत करना तथा जातीय मर्यादा एवं परम्परागत अधिकारों की रक्षा करना है। यह इण्डियन चेम्बर आफ कामर्स एण्ड इण्डस्ट्री की सदस्य संस्था है। इसके संचालकगण प० बंगाल के प्रमुख उद्योगपति और बड़े-बड़े व्यवसायी हैं। स्वदेशी माल को निर्यात करने वाले व्यापारियों को इसी संस्था द्वारा प्रमाण-पत्र दिये जाते हैं। इसके द्वारा 'दि जर्नल आफ मारवाड़ी एसोसियेशन' नाम की मासिक पत्रिका प्रकाशित की जाती है। इसके प्रतिनिधि बंगाल विधान परिषद, विधान सभा, मूल्य सलाहकार समिति, काटन क्लाथ एण्ड यार्न कण्ट्रोल एडवाइजरी कमेटी, बोर्ड आफ इन्क्वायरी कमेटी, पूर्व एवं दक्षिण-पूर्व रेलवे वैगन सप्लाई एडवाइजरी कमेटी जैसी संस्थाओं में रहते आये हैं। १९०१ ई० में स्थापित श्री विशुद्धानन्द सरस्वती विद्यालय एवं उसके बाद श्री विशुद्धानन्द सरस्वती मारवाड़ी अस्पताल (अमहर्स्ट स्ट्रीट), श्री विशुद्धानन्द सरस्वती दातव्य औषधालय (बड़तल्ला स्ट्रीट), मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी, माहेश्वरी सभा, हिन्दू महासभा, अग्रवाल महासभा, मारवाड़ी छात्रसंघ, बड़ाबाजार लाइब्रेरी आदि संस्थाओं की स्थापना इसी एसोसियेशन के कर्णधारों द्वारा की गई है। भारत चेम्बर आफ कामर्स, मर्चेण्ट्स चेम्बर और इण्डियन चेम्बर आदि आज की सक्रिय वाणिज्य संस्थाएं भी इसी के कार्यकर्त्ताओं की देन हैं। इसी की नयी संस्था मारवाड़ी सम्मेलन है। वर्त्तमान में अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन मारवाड़ी एसोसियेशन की भूमिका निबाह रहा है।

स्व० रामदेव चोखानी ने १९०९-११ ई० की रिपोर्ट प्रकाशित कर इसे व्यवस्थित किया था और उनकी नीति के चलते इसे सरकारी सहानुभूति भी मिली। इसके प्रयासों से कई कानूनों में संशोधन हुए, कलकत्ता में फाटका का कारबार शुरू हुआ और कलकत्ता इम्प्रूवमेण्ट ट्रस्ट, बंगाल विधान परिषद एवं कलकत्ता कारपोरेशन में मारवाड़ी समाज को प्रतिनिधित्व मिला। १९११ ई० में राजस्थान में अकाल पड़ने पर इसके माध्यम से विपुल अनाज और भूसा भेजा गया। रेल विभाग से हिंदी में सूचना प्रकाशित कराने की व्यवस्था इसने करायी। कलकत्ता में सबेरे गंगा स्नान करने जानेवाली महिलाओं से छेड़छाड़ करनेवालों को इसने नियंत्रित किया। इस एसोसियेशन ने जितने भी कार्य किये, वे सभी मारवाड़ियों के हित के लिए होते थे पर संयोग से दूसरे वर्गों का भी हित हो जाता था। संयोग से मौजूदा समय में यह मारवाड़ी एसोसियेशन बिखरा-बिखरा है और सक्रिय नहीं है। वैसे होली-दिवाली पर प्रीति सम्मेलन के आयोजन होते रहते हैं, पर इनके अतिरिक्त कोई ठोस उपलब्धियाँ नहीं दीखतीं।

मर्चेण्ट्स चेम्बर आफ कामर्स—इस चेम्बर की स्थापना १९०१ ई० में मारवाड़ी एसोसियेशन द्वारा की गयी थी। इसका कार्यालय चीना बाजार के मोड़ पर है। इस चेम्बर की स्थापना का उद्देश्य भारत चेम्बर, इण्डियन चेम्बर और बंगाल नेशनल चेम्बर आदि से मिलता-जुलता है। सर्वप्रथम इसका गठन 'कपड़ा समिति' के रूप में किया गया था। इसमें जब कुछ

व्यापकता आयी तो इसका नाम बदलकर 'वैश्य मित्र सभा' कर दिया गया। बाद में इसका नाम वैश्य सभा और मर्चेण्ट्स कमेटी भी रखा गया। अन्त में १९५२ ई० में मौजूदा नामकरण हुआ।

इस चेम्बर का स्वर्ण जयन्ती समारोह २३ जनवरी १९५७ ई० को इण्डियन चेम्बर के हाल में किया गया, जिसका उद्घाटन कलकत्ता नगरपालिका के उपमहापौर डा० अमरनाथ मुखर्जी ने किया। स्व० कालीप्रसाद खेतान सभापति एवं स्व० ईश्वरदास जालान प्रधान अतिथि थे। १९६९ ई० में कला-मंदिर के सभागार में इसकी हीरक जयन्ती मनायी गयी, जिसका उद्घाटन तत्कालीन उप-प्रधान मंत्री श्री मुरारजी देसाई ने किया था। यह संस्था भी अन्य चेम्बरों की भांति देश पर हर प्रकार के दैवी एवं आकस्मिक संकटों के समय राहत-कार्य में अग्रणी रहती है। इस चेम्बर के सदस्य सरकारी एवं गैर-सरकारी समितियों एवं संगठनों में सक्रिय प्रतिनिधित्व करते हैं।

इण्डियन चेम्बर आफ कामर्स—इस व्यावसायिक संस्था की स्थापना ३० जनवरी १९२६ ई० को की गयी थी। इसके प्रथम सभापति श्री घनश्यामदास बिड़ला बनाये गये। सम्प्रति इसका कार्यालय इण्डिया एक्सचेंज बिल्डिग के ८, ९ और १०वें तल्ले पर है। इस चेम्बर के कार्यकलाप में राष्ट्र के विकास के लिए अधिक से अधिक उद्योग-धन्धों की स्थापना, संचालन और जनता के लिए तरह-तरह की चीजों के उत्पादन की योजना को कार्यान्वित करवाना शामिल है। १९५६ ई० में इसका अपना भवन बना। उस अवसर पर इसके कार्यकलापों के बारे में एक स्मारिका भी प्रकाशित हुई। उस साल श्री नन्दलाल कानोड़िया सभापति थे।

नयी दिल्ली स्थित फेडरेशन आफ चेम्बर आफ कामर्स एण्ड इण्डस्ट्रीज (फिक्की) एवं अन्य बड़ी-बड़ी संस्थाओं तथा चेम्बरों से इस चेम्बर का निकट का सम्बन्ध बना हुआ है। इसके सदस्य विदेशी चेम्बरों से भी संबद्ध हैं। इसके अतिरिक्त इसके सदस्य सरकारी एवं निजी संगठनों व सलाह-कार समितियों में शामिल होकर दोनों पक्षों के लिए काम करते हैं। १९७१-७२ ई० में जब भारत-पाक युद्ध के पूर्व, पूर्व पाकिस्तान (अब बंगलादेश) से १ करोड़ शरणार्थी आये, तब यह चेम्बर उनकी सेवा करने में सबसे आगे था। इसने १ लाख रुपये का सुरक्षा वाहिनी कोष बनाया, जिससे सरकार की सहायता की गयी। इसकी सहायक महिला संस्था 'लेडीज स्टडी ग्रुप' ने भी उस कार्य में सराहनीय योग दिया था। चूंकि इसका कार्यक्षेत्र व्यापक है, अतः इसलिए कार्यों के निष्पादन के लिए २४ समितियाँ बनायी गयी हैं। चेम्बर ने परिवार कल्याण के लिए प्रशंसनीय कार्य किया है।

बंगाल चेम्बर आफ कामर्स एण्ड इण्डस्ट्रीज—इस चेम्बर की गणना कलकत्ता के पुराने और सक्रिय चेम्बरों में होती है। यह देश के उद्योग तथा व्यापार की प्रगति में बहुत सहायक सिद्ध हुआ है। ६ नेताजी सुभाष रोड में इसका अपना भवन है, जहाँ इसके कामकाज होते हैं। कलकत्ता एवं बाहर के कुल ३१ औद्योगिक एवं व्यावसायिक एसोसियेशन इसमें शामिल हैं।

टेक्सटाइल मर्चेण्ट्स एसोसियेशन—कलकत्ता के प्रबुद्ध वस्त्र-व्यवसायियों ने इस संगठन की स्थापना १९६१ ई० में की थी। इसका कार्यालय १६०, जमनालाल बजाज स्ट्रीट के एक तल्ले पर है, जिसमें एक सभाकक्ष भी है। इससे वस्त्र व्यवसायी प्रतिष्ठान बहुत सहयोग पाते हैं। इसके द्वारा प्रत्येक वर्ष दीपावली पर प्रीति सम्मेलन का आयोजन किया जाता है। वस्त्र व्यवसाय में आनेवाली तरह-तरह की बाधाओं को दूर करने, बाजार की स्थिति समयानुकूल रखने, व्यापारिक प्रतिष्ठानों के आपसी झगड़ों को (पंचायत, अपीलेट बोर्डों एवं अपीलेट ट्रिब्यूनल द्वारा) सलटाने, नोटिसें प्रचारित करने, बाजार में शांति बनाये रखने, आदि उद्देश्यों के लिए यह कार्य करता है। इसके अतिरिक्त यह समाज सेवा का कार्य भी कर रहा है। राजस्थान में पड़े १९७३ ई० के अकाल के दौरान गायों की सेवा एवं अकाल पीड़ितों के सहायतार्थ इसने कार्य किया। सैनिक सहायता, राष्ट्रीय सुरक्षा कोष,

दवी प्रकोप से पीड़ित लोगों की मदद आदि में यह सदैव तत्पर है। इसका सम्पर्क फेडरेशन आफ इण्डियन चेम्बर आफ कामर्स एण्ड इण्डस्ट्रीज (फिक्की, नयी दिल्ली) एवं फेडरेशन आफ आल इण्डिया मर्चेण्ट्स एसोसियेशन (बम्बई) से है।

बंगाल नेशनल चेम्बर आफ कामर्स एण्ड इण्डस्ट्री—भारतीय उद्योग एवं व्यापार के उन्नयन में सक्रिय महत्वपूर्ण व्यावसायिक संगठनों में यह एक है। इसके अन्तर्गत २१ एसोसियेशन हैं तथा इसका कार्यालय मिशन रो में स्थित है।

शैक्षणिक संस्थाएं

श्री विशुद्धानन्द सरस्वती विद्यालय—सम्पूर्ण पूर्वी भारत में स्थापित यह प्रथम हिन्दी भाषी विद्यालय है। धर्म-वाचस्पति पं० दीनदयालु शर्मा तथा सम्पादकाचार्य पं० माधव मिश्र की प्रेरणा, 'भारत मित्र' के सम्पादक बाबू बालमुकुन्द गुप्त के सक्रिय सहयोग तथा शिक्षानुरागी समाजसेवकों के प्रयत्नों से १९ सितम्बर १९०१ ई० को इसकी स्थापना १०० और १०२ नं० हरीसन रोड (जहाँ आज गोविन्द भवन है) में हुई। इसका नामकरण तत्कालीन सुप्रसिद्ध संत श्री विशुद्धानन्द सरस्वती पर किया गया, जो १८९८ ई० में दिवंगत हुए थे। आरम्भ में विद्यालय में केवल दो विभाग थे—१. संस्कृत शिक्षा २. अंग्रेजी एवं अन्य विषयों की शिक्षा। संस्थापक अध्यक्ष माधोप्रसाद हलवासिया तथा मंत्री मोतीलाल चांदगोठिया बने। द्वितीय वर्ष में रामदेव चोखानी इसके मन्त्री बने, जिन्होंने स्थायी चंदे की योजना प्रारम्भ कर हरीसन रोड की उपरोक्त जमीन खरीद ली। इसी समय रामचन्द्र गोयनका ने संस्कृत विभाग के विकास हेतु ५०,००० रु० तथा जोहारमल खेमका ने भवन निर्माणार्थ २५,००० रु० दिए। रामजीदास बाजोरिया के अथक प्रयत्न से चित्तरंजन एवेन्यू में स्थित वर्त्तमान स्थान खरीद लिया गया। १९०८ ई० में विद्यालय में हाई स्कूल तक पढ़ाई होने लगी। १९१० ई० में विद्यालय के वार्षिकोत्सव की अध्यक्षता पं० मदनमोहन मालवीय ने की। उनकी तीव्र फटकार को सुनकर रुढ़मल गोयनका, रामकुमार गोयनका लक्ष्मीनारायण मुरोदिया, किशनदयाल जालान, फूलचन्द जैन एवं बैजनाथ केड़िया ने यह सार्वजनिक प्रतिज्ञा ली कि विद्यालय का नवनिर्मित भवन पूर्ण तैयार हो जाने पर ही वे सिर पर पगड़ी बाँधेंगे। अल्पकाल में ही ३ लाख रुपये एकत्र हो गए एवं विक्टोरिया मेमोरियल के वास्तुशिल्पी विंसेण्ट ऐश से विद्यालय भवन का नक्शा बनवा लिया गया। १९१२ ई० में सर आशुतोष मुखर्जी ने भवन की आधारशिला रखी और जून १९१४ ई० में बंगाल के तत्कालीन गवर्नर लार्ड कारमाइकल ने इसका उद्घाटन किया।

१९५१ ई० में इसका चतुर्दिवसीय स्वर्ण जयन्ती कार्यक्रम क्रमशः श्यामा प्रसाद मुखर्जी, चारुचन्द्र विश्वास, बद्रीदास गोयनका तथा रामदेव चोखानी की अध्यक्षता में मनाया गया। १९७५ ई० में विद्यालय की हीरक जयन्ती पर हरिकृष्ण झाझड़िया को अभिनन्दन ग्रंथ समर्पित किया गया।

वर्तमान समय में इसमें हायर सेकण्डरी तक पढ़ाई होती है, छात्रों की संख्या प्रायः २५०० तथा अध्यापकगण शताधिक हैं। वर्तमान प्रबन्धकारिणी के अध्यक्ष भगवती प्रसाद खेतान एवं मन्त्री परमेश्वरलाल केड़िया है।

श्री सनातन धर्म विद्यालय—इसकी स्थापना १९१५ ई० की बसन्त पंचमी के दिन ४ डी, मदनमोहन बर्मन स्ट्रीट में पं० रघुवीर त्रिवेदी काव्य वेदान्त तीर्थ द्वारा की गई। इसका संचालन

१९७१ ई० तक सरयूपारीण ब्राह्मण समाज द्वारा किया जाता रहा। तदुपरान्त पश्चिम बंग सरकार ने इसका प्रबन्ध सम्भाल लिया। वर्त्तमान में अतिरिक्त जिला विद्यालय निरीक्षक विभूतिभूषण चक्रवर्ती इसके प्रशासक हैं। इन्होंने विद्यालय का जीर्णोद्धार करवाया है तथा शिक्षकों व कर्मचारियों की सेवा शर्त्तों में भी सुधार किया है। वर्त्तमान में इसमें हायर सेकेण्डरी तक निःशुल्क शिक्षा दी जाती है।

मारवाड़ी बालिका विद्यालय—आज से ६२ वर्ष पूर्व १६ सितम्बर १९२० ई० को जब इसकी स्थापना की गई, तब रुढ़िवादी समाज में स्त्री-शिक्षा की कल्पना भी दुष्कर थी। इसके संस्थापकों में प्रमुख थे—पं० छोटूलाल मिश्र, सीताराम सेकसरिया, घनश्यामदास बिड़ला, भागीरथ कानोड़िया, रामकुमार गोयनका, बद्रीप्रसाद गोयनका, मोतीलाल लाठ आदि प्रबुद्ध जनसेवी। सीताराम सेकसरिया तथा भागीरथ कानोड़िया तब घर-घर जाकर अभिभावकों को समझाकर अपनी जिम्मेदारी पर छात्राओं को विद्यालय में प्रविष्ट कराते थे। आरम्भिक ३०-४० की छात्रा संख्या कालक्रम में बढ़ कर आज १५०० हो गई है। वर्त्तमान में यहाँ मैट्रिक तक शिक्षा दी जा रही है तथा यह आड़ी बांसतल्ला में निजी भवन में अवस्थित है।

१९७५ ई० में इसका नर्सरी विभाग खोला गया, जिसमें ४ से ६ वर्ष के बच्चों को शिक्षा दी जाती है। सम्प्रति इसकी प्रबन्धकारिणी के अध्यक्ष भगवती प्रसाद खेतान हैं तथा मंत्राणी सुशीला सिंघी। इसके ट्रस्टियों में लक्ष्मीनिवास बिड़ला एवं प्रभुदयाल हिम्मतसिंहका जैसे गणमान्य शिक्षानुरागी हैं।

अभिनव भारती बाल मन्दिर—इसकी स्थापना २० अगस्त १९४५ ई० को २॥ वर्ष से ६ वर्ष के बच्चों को माण्टेसरी प्रणाली से शिक्षा देने के लिए ३२ नं० सर हरिराम गोयनका स्ट्रीट में की गई। मोहनलाल लाठ, ज्ञानवती लाठ, सीताराम सेकसरिया, राधाकृष्ण नेवटिया आदि इसके संस्थापकों में थे। कालान्तर में इस विद्यालय को नर्मदा प्रसाद लाठ ने बड़ाबाजार में तथा बसन्तलाल मुरारका ने बालीगंज में अपने २ निवास-गृह स्थान हेतु प्रदत्त किए। हनुमान बक्स नेमानी तथा गोविन्द प्रसाद कानोड़िया के विशेष प्रयत्न से ११ नं० प्रिटोरिया स्ट्रीट स्थित इसकी वर्त्तमान भूमि प्राप्त हुई। १९५० ई० में अपने नवनिर्मित भवन में यह बड़ाबाजार से स्थान्तरित होकर आ गया। वर्त्तमान में ज्ञानवती लाठ तथा शान्ति खेतान बड़ी निष्ठापूर्वक इसका सुचारु संचालन कर रही हैं। इसी वर्ष इसमें एक आधुनिक प्रेक्षागृह 'ज्ञान मंच' भी बन गया है। वर्त्तमान में यह पाँचवी कक्षा तक शिक्षा प्रदान कर रहा है।

मानसिक रूप से अविकसित अथवा शारीरिक रूप से अपंग बच्चों की शिक्षा के लिए इसके संलग्न भवन में 'मनोविकास केन्द्र' नामक विद्यालय कार्यरत है। इस केन्द्र की निदेशक डॉ० शारदा फतेहपुरिया हैं।

१९५२ ई० में ललित कला शिक्षण हेतु इसकी सहयोगी संस्था 'संगीत श्यामला' स्थापित की गई। कालान्तर में साहित्यिक संस्था 'रचना' भी इसके तत्वावधान में स्थापित हुई।

श्री सरावगी बालिका विद्यालय—इसकी स्थापना १९५३ ई० में घनश्यायदास सरावगी ने अपने मकान ५१ नं० बड़तल्ला स्ट्रीट में की। वे जीवनपर्यन्त इसके उत्तरोत्तर विकास हेतु प्रयत्नशील रहे। मास्टर जमुना पांडे के सहयोग से उन्होंने इस विद्यालय की बालिकाओं को ललित कलाओं में विशेष निपुण बना दिया। उस समय यहाँ हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग के तत्वावधान में विद्या-विनोदनी तक शिक्षा दी जाती थी। वर्त्तमान में यह सातवीं कक्षा तक ही सीमित है। बजरंगलाल गोयनका इसके मन्त्री पद का दायित्व सँभाल रहे हैं।

सावित्री पाठशाला—कलकत्ता महानगर में बालिकाओं की शिक्षा हेतु स्थापित यह शायद सर्वप्रथम हिन्दीं भाषी विद्यालय है। १९०५ ई० में बड़ाबाजार के प्रबुद्ध नागरिकों ने ५-डी, मुक्ताराम बाबू स्ट्रीट में इसकी स्थापना हिन्दी तथा संस्कृत की शिक्षा प्रदान करने हेतु की। कालान्तर में मोहनलाल जालान आदि उदार समाजसेवियों के सहयोग से यह पूरा मकान खरीद लिया गया और प्रयाग विद्यापीठ के पाठ्क्रमानुसार 'विद्या विनोदनी' तक शिक्षा दी जाने लगी। वर्त्तमान में यहाँ पश्चिम बंगाल शिक्षा परिषद के अनुसार इण्टरमीडिएट तक शिक्षा दी जाती है। इसके प्राथमिक विभाग का संचालन सावित्री एजूकेशनल ट्रस्ट कर रहा है, जिसके सभापति सत्यनारायण टांटिया तथा मन्त्री परमेश्वर लाल केड़िया हैं। सेकेण्डरी विभाग के संचालन हेतु श्रीप्रसाद मोहन मेद्या प्रशासक नियुक्त किए गए हैं। यह विद्यालय निरन्तर विकासोन्मुख है, जिसका प्रभाव कुछ ही वर्षों पूर्व सावित्री गर्ल्स कालेज की स्थापना है।

हिन्दी हाई स्कूल (विद्या मन्दिर)—इसकी स्थापना लक्ष्मीनिवास बिड़ला ने १९४० ई० में की। द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान अंग्रेज शासन ने सैनिकों के आवास हेतु इसके भवन का अधिग्रहण कर लिया था। फिर १/१ बी, लोअर सर्कुलर रोड में यह पुन: प्रारम्भ किया गया। स्थानाभाव के कारण इसका विशाल नवीन भवन १, मोयरा स्ट्रीट में बना, जिसका उद्घाटन १९५५ ई० में तत्कालीन मुख्यमन्त्री डॉ० विधानचन्द्र राय ने किया था। १९५९ ई० में तत्कालीन प्रधान मन्त्री जवाहरलाल नेहरु तथा बाद में राष्ट्रपति वेंकट वराह गिरि ने इसका निरीक्षण किया। १९७२ ई० में इसकी रजत जयन्ती मनाई गई।

यह विद्यालय सेन्ट्रल बोर्ड से सम्बद्ध है। इसमें छात्रों के सर्वांगीण विकास हेतु सभी सुविधाएँ उपलब्ध हैं। इसमें एक अत्याधुनिक प्रेक्षागृह तथा स्केटिंग रिंक भी है। वर्त्तमान में इसमें प्राय: २००० छात्र अध्ययन रत हैं।

प्राथमिक शिक्षा हेतु जूनियर हाई स्कूल भी स्थापित हो गया है। साथ ही इसमें 'बिड़ला कालेज आफ साइन्स एण्ड एजूकेशन' महाविद्यालय भी प्रारम्भ हो गया जहाँ स्नातकीय शिक्षा प्रदान की जाती है।

सेठ सूरजमल जालान बालिका विद्यालय—इसकी स्थापना १९४१ ई० में १८६, चित्तरंजन एवेन्यू स्थित सेठ सूरजमल जालान स्मृति भवन में मोहनलाल जालान ने की। इसकी प्रबन्ध समिति के प्रथम अध्यक्ष तथा सचिव मनोनीत हुए वेणीशंकर शर्मा तथा नारायण चोखानी। वर्तमान में यहाँ इण्टरमीडिएट तक शिक्षा दी जाती है। इसके प्राथमिक विभाग में १००० तथा माध्यमिक कक्षाओं में १५०० बालिकाएं हैं।

प्रति वर्ष विद्यालय की ओर से १० प्रतिशत छात्राओं को नि:शुल्क शिक्षा दी जाती है। छात्राओं का एक रचनात्मक संघ भी है, जो जरूरतमन्द छात्राओं के लिए शिक्षण सामग्री एवं पोशाक की व्यवस्था करता है। सुदीर्घ काल से कृष्ण दुलारी सूद इसकी प्रिंसिपल हैं। सेठ सूरजमल जालान ट्रस्ट द्वारा इसका संचालन हो रहा है। वर्तमान में तोलाराम जालान इसके अध्यक्ष तथा विजय कुमार गाड़ोदिया सचिव हैं।

बालिका शिक्षा सदन—यह बालिका शिक्षा परिषद द्वारा संचालित है, जिसकी स्थापना ७ मई १९४६ ई० को हुई थी। १९४८ ई० में ५४, गरियाहाट रोड में यह विद्यालय स्थापित हुआ और फिर १ जनवरी १९५० ई० को यह ८७, विवेकानन्द रोड में आ गया। इसके संस्थापकों में प्रमुख थे—रघुनाथ प्रसाद खेतान, इन्द्रचन्द्र केजड़ीवाल, बैजनाथ तापड़िया, रावतमल नोपानी आदि समाजसेवी।

इसका प्राथमिक विभाग 'मुरारीलाल मोहता विद्या मन्दिर' कहलाता है एवं माध्यमिक विभाग 'बालिका शिक्षा सदन'। वर्त्तमान में इसमें इण्टरमीडिएट तक शिक्षा दी जा रही है तथा प्रायः १३०० छात्राएँ हैं। विभिन्न सांस्कृतिक आयोजनों द्वारा बालिकाओं का सर्वांगीण विकास करना इसका लक्ष्य है। यहाँ की बालिकाएँ अनेक अन्तर्विद्यालयीय वाद-विवाद प्रतियोगिताओं में विजयी रही हैं।

टाँटिया हाईस्कूल—टाँटिया बंधुओं ने ५ मार्च १९५२ ई० को 'शिक्षा सदन ट्रस्ट' स्थापित किया, जिसके ट्रस्टी थे—शिवप्रताप टाँटिया, रामेश्वर टाँटिया, सीताराम सेकसरिया, ओंकारमल सराफ तथा भागीरथ कानोड़िया। इस ट्रस्ट ने रघुनाथ प्रसाद खेतान, बजरंगलाल लाठ तथा राधाकृष्ण नेवटिया के सहयोग से २ सैयद साली लेन की जमीन 'बालिका शिक्षा सदन' से खरीद ली। १९५३ ई० की बसन्त पंचमी को ईश्वर प्रसाद जालान ने भवन की आधारशिला रखी। जनवरी १९५४ ई० को इसमें 'टाँटिया हाई स्कूल' की स्थापना हुई। स्थापना काल से जीवन पर्यन्त सीताराम सेकसरिया इसके सभापति तथा काशीप्रसाद मोदी मन्त्री रहे। वर्त्तमान में इसके सभापति सत्यनारायण टाँटिया तथा मन्त्री परमेश्वरलाल केड़िया हैं।

श्री शिक्षायतन—इस बालिका विद्यालय की स्थापना सीताराम सेकसरिया, भागीरथ कानोड़िया आदि मूर्धन्य समाजसेवियों ने ३ जनवरी १९५४ ई० को ११ लार्ड सिन्हा रोड में की। इसका उद्घाटन तत्कालीन राज्यपाल डॉ० हरेन्द्र कुमार मुखर्जी ने किया।

वर्त्तमान में इसमें नर्सरी से प्रारम्भ कर इंटरमीडिएट तक शिक्षा दी जाती है। इसमें छात्रावास, सन्तरणी (स्वीमिंग पूल) तथा आधुनिक प्रेक्षागृह की भी व्यवस्था है। बालिकाओं के भी सर्वांगीण विकास हेतु ललित कला शिक्षण, वाद-विवाद प्रतियोगिता, शारीरिक व्यायाम आदि पर विशेष ध्यान दिया जाता है।

श्री दौलतराम नोपानी विद्यालय—दौलतराम नोपानी की प्रेरणा से रावतमल नोपानी तथा रामेश्वरलाल नोपानी ने इसकी स्थापना ११ जनवरी १९५४ ई० को २-डी, नन्दो मल्लिक लेन में की। रामेश्वरलाल नोपानी इसके प्रथम सभापति बने तथा बी० एच० तापड़िया मन्त्री।

प्रारम्भ में इसमें पहली कक्षा से मैट्रिक तक शिक्षा दी जाती थी। कालान्तर में इसमें तीसरी कक्षा से ग्यारहवीं कक्षा तक पढ़ाई होने लगी। वर्त्तमान में यहाँ इण्टरमीडिएट तक शिक्षा दी जाती है। १९८० ई० में इसकी रजत जयन्ती मनाई गई।

राजस्थान के गणमान्य नेता जयनारायण व्यास, हीरालाल शास्त्री, मोहनलाल सुखाड़िया प्रभृति इसका निरीक्षण कर चुके हैं। १९५७ ई० में लोकनायक जयप्रकाश नारायण इस विद्यालय में आए और तभी से यहाँ 'यूनीफार्म' अनिवार्य हो गई। १९६५ ई० में राष्ट्रीय सुरक्षा कोष में इस विद्यालय द्वारा १,१०,१०१ रुपये प्रदान किए गए। इसका संचालन नोपानी ट्रस्ट द्वारा किया जाता है। सम्प्रति एम० नोपानी इसके सभापति तथा एस० पी० नोपानी मन्त्री हैं।

श्री शिक्षायतन कालेज—इसकी स्थापना सीताराम सेकसरिया ने ८ जुलाई १९५५ ई० को ११ लार्ड सिन्हा रोड में की। इसमें स्नातकीय शिक्षण के साथ बी० एड० कक्षाओं की व्यवस्था है। छात्राओं का सर्वांगीण विकास इसका आदर्श है।

इसमें छात्राओं के लिए रामकुमार भुवालका छात्रावास तथा हलवासिया सन्तरणी की भी व्यवस्था है। प्रतिवर्ष सर्वोत्तम छात्रा को सरस्वती ट्राफी प्रदान की जाती है। छात्राओं की अपनी यूनियन है। वर्त्तमान में इसकी प्रबन्ध समिति के अध्यक्ष भगवतीप्रसाद खेतान तथा सचिव भँवरमल सिंघी हैं।

श्री दिगम्बर जैन विद्यालय—श्री अहिंसा प्रचार समिति ट्रस्ट के अन्तर्गत दिगम्बर जैन समाज के गणमान्य व्यक्तियों ने इस विद्यालय की स्थापना १ जनवरी १९५६ ई० को की। ३४/३५ कॉटन स्ट्रीट में इसके लिए बहुमंजिले भवन के निर्माण की आधारशिला १३ अप्रैल १९५४ ई० को साहू शांति प्रसाद जैन ने रखी। २७ जनवरी १९५६ ई० को तत्कालीन मुख्यमन्त्री डॉ० विधान चन्द्र राय ने इसका उद्घाटन किया। विद्यालय प्रबन्ध समिति के प्रथम अध्यक्ष बने साहू शांति प्रसाद जैन तथा मन्त्री मदनलाल काला। द्वितीय मंजिल पर स्थित विशाल सभागृह इसकी विशेषता है। वर्त्तमान में इसमें मैट्रिक तक शिक्षा प्रदान की जाती है तथा १५०० छात्र अध्ययनरत हैं।

श्री बालकृष्ण बिट्ठलनाथ विद्यालय—इस विद्यालय की स्थापना ६ जनवरी १९५६ ई० को टैगोर कैसल, २६ नं० प्रसन्न कुमार टैगोर स्ट्रीट में की गई। संस्थापकों में प्रमुख थे—हरिदास मूंधड़ा, ग्वालदास मूंधड़ा एवं तुलसीदास मूंधड़ा। वर्त्तमान में इसमें मैट्रिक तक शिक्षा दी जाती है। अभी इसके सभापति मदनमोहन साहू तथा मंत्री तुलसीदास मूंधड़ा हैं।

जैन शिक्षा निकेतन—इसका प्रारम्भिक नाम 'पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन पाठशाला' था जो द्वितीय महायुद्ध के दौरान बन्द हो गई। घनश्याम सरावगी के प्रयत्नों से ११ अप्रैल १९५६ ई० को २५ बी मोहनलाल स्ट्रीट (श्यामबाजार) में इसे 'जैन शिक्षा निकेतन' के नाम से पुनः प्रारम्भ किया गया। उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता की भारतीय क्रिकेट कन्ट्रोल बोर्ड के अध्यक्ष अमरेन्द्रनाथ घोष ने। इसकी तत्कालीन कार्यकारिणी के अध्यक्ष बने नन्दलाल सरावगी, मन्त्री कैलाशचन्द जैन तथा कोषाध्यक्ष छोटेलाल जैन। पं० श्रीनिवास शास्त्री तथा पं० मक्खनलाल शास्त्री ने इसकी उन्नति में विशेष सहयोग दिया। १९६९ ई० में इसे हाई स्कूल के रूप में मान्यता मिल गई। प्रातःकाल में इसमें बालिकाओं को शिक्षा दी जाती है।

श्री जैन विद्यालय—श्री जैन श्वेताम्बर स्थानकवासी समाज ने इस विद्यालय की स्थापना १८-डी, सुकियास लेन में की। १९५८ ई० में इसे हाई स्कूल की मान्यता मिली, वर्त्तमान में यहाँ इण्टरमीडिएट तक पढ़ाई होती है। इसके बहुमंजिले भवन में एक विशाल सभागार तथा खेलने का मैदान भी है। प्रायः १५०० लड़के यहाँ शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। वर्त्तमान में जयचन्द लाल जयपुरिया इसके अध्यक्ष हैं तथा सरदारमल कांकरिया मन्त्री।

बालबाड़ी—माण्टेश्वरी प्रणाली से बच्चों को शिक्षा देने हेतु इस प्राथमिक विद्यालय की स्थापना मोतीलाल शर्मा द्वारा १ ए, मदनमोहन बर्मन स्ट्रीट (मछुआ बाजार) में १९५८ ई० में की गई। दानवीर सोहनलाल दूगड़ ने इसका उद्घाटन किया था। वर्त्तमान में शकुन्तला शर्मा इसकी मन्त्री हैं।

श्री दिगम्बर जैन बालिका विद्यालय—इसकी स्थापना अहिंसा प्रचार समिति द्वारा १ अप्रैल १९६० ई० को ३४/३५ कॉटन स्ट्रीट स्थित श्री दिगम्बर जैन विद्यालय में ही की गई। कालक्रम में विकसित हो २२१ महर्षि देवेन्द्र रोड के अपने नव-निर्मित भवन में यह स्थानान्तरित हो गया। वर्त्तमान में यहाँ नर्सरी से मैट्रिक तक शिक्षा दी जा रही है।

एस० बी० मॉडर्न हाईस्कूल—इस विद्यालय की स्थापना १९६१ ई० में १३ प्रसन्न कुमार टैगोर स्ट्रीट में भागवत तिवारी ने की। वर्त्तमान में यह सरकारी नियंत्रण में संचालित है—सभापति हैं हर प्रसाद चटर्जी एवं मन्त्री डॉ० अम्बिका दत्त। यहाँ प्रथम कक्षा से इण्टरमीडिएट तक की पढ़ाई होती है।

रानी बिड़ला गर्ल्स कालेज—अंग्रेजी भाषा के माध्यम से बालिकाओं को शिक्षा प्रदान करने के लिए १९६१ ई० में ३८ नं० शेक्सपीयर सरनी में इसकी स्थापना हिन्दुस्थान चैरिटी ट्रस्ट द्वारा

की गई। उस समय बृजमोहन बिड़ला इस ट्रस्ट के अध्यक्ष थे तथा उनकी धर्मपत्नी इसकी संचालिका समिति की अध्यक्षा थीं। इसका नामकरण उन्होंने अपनी माता के ऊपर किया।

वर्त्तमान में इसमें नर्सरी से स्नातकीय शिक्षण तक की व्यवस्था है। छात्राओं के सर्वांगीण विकास पर यहाँ पूर्ण ध्यान दिया जाता है। खेल-कूद के लिए इसके पास अपना विशाल मैदान है।

सेठ सूरजमल जालान गर्ल्स कालेज—इसकी स्थापना सूरजमल जालान शिक्षा न्यास के अध्यक्ष मोहनलाल जालान ने ८ एवं ९ बंकिम चटर्जी स्ट्रीट में की। यहाँ स्नातकीय शिक्षा की व्यवस्था है। छात्राओं की विशेष सुविधा हेतु इसमें एक 'बुक बैंक' स्थापित किया गया है। सुदीर्घ काल से डॉ० इन्द्रावती सिंह इसकी प्रिंसिपल हैं। इसकी वर्त्तमान प्रबन्धकारिणी समिति के अध्यक्ष तोलाराम जालान तथा सचिव हिम्मत सिंह जैन हैं।

सावित्री गर्ल्स कालेज—मोहनलाल जालान, हरिकृष्ण झाझड़िया आदि शिक्षानुरागियों ने बड़ाबाजार अंचल में बालिकाओं के स्नातकीय शिक्षण व्यवस्था हेतु 'सावित्री एजूकेशनल चैरिटेबुल ट्रस्ट' की स्थापना की। इसके तत्वावधान में १४ सितम्बर १९७२ ई० को इस कालेज की स्थापना १३ मुक्ताराम बाबू स्ट्रीट स्थित अपने बहुमंजिले भवन में हुई।

कालक्रम में अनेक मनीषी तथा राजनेता इसके निरीक्षण हेतु आए। वर्त्तमान में प्रोफेसर अर्चना शर्मा इसकी अध्यक्षा हैं।

सेठ आनन्दराम जैपुरिया कालेज—सुप्रसिद्ध औद्योगिक घराना 'जैपुरिया परिवार' द्वारा सेठ आनन्दराम जैपुरिया की स्मृति में कलकत्ता महानगर के इस प्रथम हिन्दी भाषा-भाषी कालेज की स्थापना १० नं० राजा नवकृष्ण स्ट्रीट में की गई। इसका उद्‌घाटन तत्कालीन प्रधान मन्त्री पं० जवाहरलाल नेहरु ने दिसम्बर १९४५ ई० में किया। वर्त्तमान में यहाँ प्रातः, दिवस एवं रात्रि कालीन—तीन सत्रों में प्रायः ४००० छात्र-छात्राएँ अध्ययन रत हैं। संस्थापक मंगतूराम जैपुरिया की स्मृति में सर्वाधिक अंक प्राप्त करनेवाले विद्यार्थियों को ३ स्वर्ण-पदक प्रति वर्ष प्रदत्त किए जाते हैं। इसकी वर्त्तमान प्रबन्धकारिणी समिति के अध्यक्ष हैं प्राध्यापक कल्याण मल लोढ़ा तथा सचिव हैं के० के० खेमका।

माहेश्वरी बालिका विद्यालय—१९४१ ई० में श्री माहेश्वरी सभा के अन्तर्गत इसकी स्थापना हुई। प्रारम्भ में यहाँ प्राथमिक शिक्षा ही दी जाती थी, फिर १९५० ई० में मिडल कक्षा तक पढ़ाई होने लगी। १९५३ ई० में ४ नं० शोभाराम बैशाख स्ट्रीट में इसका अपना भवन बना। १९५९ ई० से यहाँ मैट्रिक तक शिक्षा दी जाने लगी तथा १९६४ ई० में यह उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बन गया। वर्त्तमान में यहाँ प्रातः एवं दिवस—दो सत्रों में प्रायः २००० छात्राएँ अध्ययन रत हैं।

इसकी शाखा राजस्थान के बीकानेर में भी खुल गई है। वर्त्तमान में जयकिशन सादानी इसके सभापति तथा चन्द्रकान्ता बिन्नानी मन्त्री हैं।

सारस्वत-खत्री बालिका विद्यालय—१९११ ई० में स्थापित यह निःशुल्क बालिका विद्यालय सम्भवतः कलकत्ता महानगर का सर्वप्रथम हिन्दी माध्यम का स्त्री-शिक्षा संस्थान है। जिन स्थानीय सारस्वत एवं खत्री समाज के दूरदर्शी कर्मठ समाजसेवियों ने इस विद्यालय की स्थापना की थी, उनमें प्रमुख थे—पं० छोटूलाल मिश्र, केदारनाथ सेठ, मुन्नीलाल टण्डन आदि। १९२३ ई० में मदनमोहन बर्मन की माता के नेतृत्व में इस विद्यालय का संचालन समाज की महिलाओं ने सम्भाल लिया। प्रारम्भ से ही लक्खी बीबी (मेहरा) ने अपने भवन का कुछ भाग विद्यालय को निःशुल्क दे दिया।

दामोदर दास खन्ना (लाला बाबू), बृजमोहन दास कुमड़िया (मिश्र), रतनचन्द बर्म्मन, ठाकुरदास मेहरा, विश्वेश्वरनाथ मेहरोत्रा, कन्हैयालाल टण्डन, गोपीनाथ कपूर प्रभृति प्रबुद्ध व्यक्तियों

के प्रयास से १२ अगस्त १९४९ ई० को यह विद्यालय ३४ बलराम दे स्ट्रीट स्थित अपने निजी भवन में स्थानान्तरित हुआ। वर्त्तमान में यहाँ मैट्रिक तक पढ़ाई होती है एवं प्राय: ६०० छात्राएँ अध्ययन रत हैं। सम्प्रति गोपीनाथ कपूर सभापति, बाबूराम कपूर उपसभापति, किशनचन्द टण्डन सचिव तथा अमर कुमार भिगन सहसचिव हैं।

सारस्वत-खत्री विद्यालय—स्थानीय सारस्वत-खत्री समाज के प्रबुद्ध समाजसेवियों ने १९०२ ई० में बर्मन स्ट्रीट में कलकत्ता महानगर के इस सर्वप्रथम हिन्दी माध्यम के विद्यालय की स्थापना की। संस्थापकों में प्रमुख थे—डाबर डॉ श्रीकिशन बर्म्मन, सुन्दर लाल मिश्र (आनरेरी मैजिस्ट्रेट), दामोदर दास खन्ना (लाला बाबू), राजा बाबू (राजा कटरा) एवं लक्ष्मीनारायण खत्री। वर्त्तमान में यहाँ दो सत्र चलते हैं—प्रात: में शिशु कक्षाएँ तथा दिन में उच्चतर माध्यमिक कक्षाएँ। प्राय: १२०० छात्र यहाँ अध्ययन करते हैं।

वर्त्तमान में यहाँ के ट्रस्टी हैं—अमरनाथ मिस्सर, विश्वेश्वर नाथ मेहरोत्रा, देवेन्द्रनाथ कक्कड़, अशोक बर्म्मन एवं विमल कुमार बर्म्मन (अध्यक्ष)। विद्यालय के सचिव हैं—ज्ञाननेन्द्र नाथ खन्ना।

श्री माहेश्वरी विद्यालय—माहेश्वरी सभा के मूलाधार रामकृष्ण मोहता तथा दानवीर जुगलकिशोर बिड़ला के प्रयास से इस विद्यालय की स्थापना बैशाख शुक्ला ३ संवत् १९७३ (१९१६ ई०) को ८ नं० पगैया पट्टी में हुई। कुछ काल तक यह १८ नं० हमाम गली में भी रहा। वहाँ से यह अपने वर्त्तमान भवन ४ नं० शोभाराम बैसाख स्ट्रीट में आ गया।

इसके प्रथम सभापति जुगल किशोर बिड़ला तथा मन्त्री जीवनदास पुगलिया मनोनीत हुए। इसका प्रथम पारितोषिक वितरण समारोह महामना पं० मदनमोहन मालवीय की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। द्वितीय वार्षिकोत्सव 'भारत मित्र' के सम्पादक लक्ष्मीनारायण गर्दे की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ।

गंगाप्रसाद भोतिका इसके प्रथम प्रधानाध्यापक बने। दैनिक 'विश्वमित्र' के संस्थापक मूलचन्द अग्रवाल इसके अध्यापकों में उल्लेखनीय रहे। यह प्रथम हिन्दी भाषी विद्यालय है, जिसे कलकत्ता विश्वविद्यालय से मान्यता प्राप्त हुई।

वर्त्तमान में यह इण्टर कालेज बन गया है। साथ ही माहेश्वरी बालिका विद्यालय भी खुल चुका है जो स्त्री-शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय है। यहाँ प्रौढ़ों के लिए रात्रि शिक्षण, संगीत शिक्षण एवं आधुनिक व्यायामशाला की सुविधाएँ भी उपलब्ध हैं।

श्री रामरिछपाल झुनझुनवाला पुस्तकालय—कलाकार स्ट्रीट में सत्यनारायण पार्क के सम्मुख स्थित श्री अग्रसेन स्मृति भवन के संस्थापकों में रामरिछपाल झुनझुनवाला अग्रणी थे। उनकी पुण्य स्मृति में १३ अक्टूबर १९६२ ई० को इस भवन की द्वितीय मंजिल पर इस पुस्तकालय की स्थापना की गई। इसका उद्घाटन राधाकृष्ण कानोड़िया द्वारा किया गया। इसके प्रथम सभापति एवं मन्त्री रामप्रसाद राजगढ़िया तथा हरिकृष्ण भाभड़िया थे। वर्त्तमान में इसमें प्राय: ७००० पुस्तकें हैं।

माहेश्वरी पुस्तकालय—माहेश्वरी सभा के अन्तर्गत इस पुस्तकालय की स्थापना १९१५ ई० में की गई। संस्थापकों में प्रमुख थे—रामकृष्ण मोहता, जीवनदास पुगलिया, सिरेमल दूगड़, वासुदेव आचार्य, कन्हैयालाल चितलांगिया, किशनगोपाल बिहानी, नन्दलाल नाथानी, गोविन्द दास अजमेरा आदि। १९२३ ई० में इस पुस्तकालय को अलग प्रबन्ध-समिति बनी जिसके सभापति बालमुकुन्द डागा तथा मन्त्री शिवकृष्ण भंवर थे। १९४६ ई० में इसकी रजत जयन्ती मनाई गई। १९५५

ई० में यह माहेश्वरी भवन में लाया गया, तब इसका उद्घाटन तत्कालीन राज्यपाल हरेन्द्र कुमार मुखर्जी ने किया। १९६६ ई० में इसका स्वर्ण जयन्ती समारोह मनाया गया। निराला एवं महादेवी वर्मा का अभिनन्दन यह पुस्तकालय कर चुका है। कवि सम्मेलनों का भी यहाँ प्रायः आयोजन होता रहता है।

राजस्थान क्लब—मारवाड़ी नवयुवकों को व्यायाम तथा क्रीड़ा जगत में अनुरक्त करने हेतु घनश्यामदास बिड़ला, प्रभुदयाल हिम्मतसिंहका, देवीदत्त जालान आदि प्रबुद्ध समाजसेवियों ने १९११ ई० में चौरंगी में म्यूजियम के सामने 'मारवाड़ी स्पोर्टिंग' क्लब की स्थापना की। वहाँ एक टेण्ट बनवाया गया और संलग्न मैदान भी मिल गया। बड़ाबाजार के युवक इसमें बड़ी संख्या में आकृष्ट हुए। योग्य प्रशिक्षकों द्वारा लाठी, छुरा, लेजिम, फुटबाल आदि सिखाने की व्यवस्था की गई। महावीर प्रसाद पोद्दार तथा गंगा प्रसाद भोतिका वहाँ प्रातःकाल में अभ्यासार्थियों को शुद्ध हिन्दी सिखलाते थे। प्रतिवर्ष क्रीड़ा प्रतियोगिताएँ आयोजित होने लगी।

कालान्तर में फुटबाल, हाकी, क्रिकेट आदि आधुनिक खेलों ने जोर पकड़ा, तब व्यापक रूप देने के लिए इसका नाम 'राजस्थान क्लब' कर दिया गया। तब से यह क्लब फुटबाल एवं बाली-बाल में कलकत्ता एवं बाहर की अनेक प्रतियोगिताओं में विजयी रहा।

इस वर्ष १४ अगस्त को इसमें राधाकृष्ण नेवटिया के सहयोग से योग का प्रशिक्षण प्रारम्भ किया गया—उद्घाटन किया कृष्णकुमार बिड़ला ने। इसमें स्त्रियों को योगासन सिखाने की विशेष व्यवस्था है। वर्त्तमान में इसके अध्यक्ष कृष्ण कुमार बिड़ला तथा सचिव जगमोहन डालमिया है।

पोद्दार छात्र निवास—प्रवासी मारवाड़ी छात्रों के निवासार्थ प्रभुदयाल हिम्मतसिंहका ने १९१२ ई० में फूलकटरा में एक कमरा किराए पर लेकर 'मारवाड़ी लॉज' नाम से इस छात्रावास की नींव रखी। १९१३ ई० में यह ११ मित्रा लेन में ले जाया गया। १९२६ ई० के साम्प्रदायिक दंगों के उपरान्त पहिले वर्त्तमान सन्मार्ग कार्यालय वाले भवन में और फिर १९ ताराचन्द दत्त स्ट्रीट में इसे ले जाया गया।

इसी समय इसे गजानन्द पोद्दार से महत्वपूर्ण आर्थिक सहायता प्राप्त हुई। उनका अपने पुत्र दयाराम पोद्दार से इस छात्रावास के बारे में मतैक्य नहीं था। प्रभुदयाल हिम्मतसिंहका तथा देवीप्रसाद खेतान ने उन दोनों को सवा लाख रुपये सार्वजनिक कल्याणार्थ देने के लिए राजी कर लिया जिससे एक ट्रस्ट बना दिया गया। तब १९३२-३३ ई० में वह जमीन खरीद ली गई, जहाँ आज यह छात्रावास अवस्थित है। कालान्तर में वहाँ 'छात्र निवास' का भवन निर्मित हुआ। प्रभुदयाल हिम्मतसिंहका १९४७ ई० तक इसके सभापति रहे।

स्वाधीनता संग्राम के दौरान देश के अग्रगण्य नेताओं—जवाहरलाल नेहरु, श्यामा प्रसाद मुखर्जी, देशबन्धु चित्तरंजन दास, दीनबन्धु एनड्रूज आदि के यहां भाषण हुए। बनारसी दास चतुर्वेदी, हरिऔध, अयोध्या सिंह उपाध्याय आदि हिन्दी मनीषियों ने भी यहां के छात्रों को सम्बोधित किया।

हिन्दी नाट्य परिषद—इसकी स्थापना १९१८ ई० में राष्ट्रकवि पं० माधव शुक्ल ने भोलानाथ बर्म्मन आदि देशप्रेमियों के सहयोग से की। हिन्दी रंगमंच को पारसी नाटकों की रोमानियत से मुक्त कर अपने ओजस्वी एवं देशभक्तिपूर्ण नाटकों से इसने स्वाधीनता की अलख जगायी। नौजवानों में इसकी बढ़ती हुई लोकप्रियता विदेशी सरकार की कोपाग्नि का शिकार हुई और फलतः इसके कार्यकर्त्ताओं की रचनाएं बारम्बार जब्त हुईं एवं उन्हें कारावास का दण्ड भी सहना पड़ा।

परिषद ने जिन नाटकों का मंचन किया, उनमें प्रमुख हैं—भाभाशाह की देशभक्ति, भीष्म प्रतिज्ञा, चन्द्रगुप्त, शिवाजी, छत्रसाल, चाणक्य, भारत रमणी, आहुति, महानिशा (पुनर्मिलन), उस पार, कलाकार, गबन, शाहजहाँ, महात्मा ईसा आदि। परिषद के नाटकों में अभिनय करने वाले कुछ प्रमुख नाम हैं—माधव शुक्ल, भोलानाथ बर्मन, परमेष्ठीदास जैन, देवदत्त मिश्र, ईश्वरी प्रसाद भाटिया, ललित कुमार नटवर, राजनारायण चतुर्वेदी 'आवाद', अम्बाशंकर ठाकोर, जहूर अहमद, चन्द्रमोहन सिंह, मास्टर जमुनाप्रसाद पाण्डेय, हरिशंकर शर्मा, गिरीश चन्द्र जोशी, बद्री प्रसाद तिवारी तुलसीलाल श्रेष्ठ, श्यामबिहारी लाल 'बब्बन', रामचन्द्र पाण्डेय, भालचन्द्र शर्मा, छेदीलाल गुप्त, राजनारायण तिवारी, नन्दकिशोर भावसिंहका, देवेन्द्रनाथ सुकुल आदि। महिला कलाकारों में प्रमुख थीं—शान्ता फड़के, छाया देवी, सुभद्रा देवी, कल्याणी सेनगुप्ता, श्यामली चक्रवर्ती, गौरी सेनगुप्त, रेखा चटर्जी, गीताश्री, ममता मुखर्जी, परमेश्वरी ठाकुर आदि।

१९३० ई० में जब महात्मा गाँधी के नेतृत्व में आजादी की लड़ाई तीव्र हुई, तब देवदत्त मिश्र ने इसका संचालन भार सँभाला। १९३४ ई० में बिहार भूकम्प के पीड़ितों की राहत हेतु सहायता की। पुनः १९४४ ई० में कस्तूरबा कोष में ४००० रुपये तथा १९४५ ई० में आजाद हिन्द फौज के बंदियों को ४००० रुपये मुकदमा लड़ने में सहायतार्थ प्रदान किए।

आजादी के बाद इसकी गतिविधि बहुत सीमित हो गई है। वर्तमान में २०५, रवीन्द्र सरणी में इसका कार्यालय है। १९८१ ई० में इसकी हीरक जयन्ती मनाई गई।

बड़ाबाजार युवक सभा—प्रभुदयाल हिम्मतसिंहका की प्रेरणा से १९१८ ई० में कन्हैयालाल थरड़, रामचरन भरतिया, इन्द्रचन्द भुवालका, हरिचरन केड़िया एवं वासुदेव थरड़ ने 'बड़ाबाजार यंग मेन्स एसोसियेशन' की स्थापना की। १९२२ ई० में इसका नाम बदल कर 'बड़ाबाजार युवक सभा' रख दिया गया। रामकुमार रक्षित लेन में इसका अखाड़ा बना। कालक्रम में अनेक स्थान परिवर्तित हुए एवं १९६२ ई० में यह अपने १२, मित्रा लेन स्थित तिमंजले भवन में आया। यहाँ अखाड़ा, जिमनाशियम, बास्केटबाल, बालिबाल, टेबल टेनिस, बैडमिंटन, राइफल शूटिंग आदि की सुचारु व्यवस्था है। बॉडी-बिल्डिंग की अखिल भारतीय प्रतियोगिताओं तथा बालीबाल एवं बास्केट-बाल की राज्य स्तर की प्रतियोगिताओं में सभा की टीमों ने विजय प्राप्त कर बड़ाबाजार का गौरव बढ़ाया। १९७३ ई० में इसके स्वर्ण जयन्ती समारोह पर राधाकृष्ण कानोड़िया के सम्पादकत्व में एक अभिनव स्मारिका निकली एवं संस्थापकों का अभिनन्दन किया गया। वर्तमान में इसके संरक्षक-गण हैं—घनश्यामदास बिड़ला, राधाकृष्ण कानोड़िया, प्रभुदयाल हिम्मतसिंहका, इन्द्रचन्द भुवालका तथा वासुदेव थरड़।

बंगीय हिन्दी परिषद—हिन्दी भाषा एवं साहित्य के प्रचार-प्रसार तथा प्राचीन हिन्दी ग्रन्थों के उद्धार तथा प्रकाशन की व्यवस्था हेतु इसकी स्थापना कलकत्ता के प्रमुख हिन्दी सेवियों ने सितम्बर १९४५ ई० में की। इसके संस्थापकों में प्रमुख हैं—आचार्य ललितप्रसाद सुकुल, आचार्य अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी, प्राध्यापक कल्याणमल लोढ़ा, मोहन सिंह सेंगर, श्रीकान्त ठाकुर, रामकुमार केजरीवाल आदि।

इसके महत्वपूर्ण प्रकाशन हैं—मीरा स्मृति ग्रन्थ, मानस में रामकथा, प्रसाद, द्विवेदी ग्रंथ, ठाकुर जगमोहन सिंह ग्रंथावली, गाँधी शताब्दी ग्रंथ, तुलसीदास—आधुनिक संदर्भ में इत्यादि। अनेक महत्वपूर्ण साहित्यकारों पर परिषद के मुखपत्र 'जनभारती' के विशेषांक प्रकाशित हो चुके हैं, यथा—प्रेमचन्द, निराला, रवीन्द्र, आदि।

वर्त्तमान में इसका कार्यालय १५ बंकिम चटर्जी स्ट्रीट (कालेज स्क्वायर) में स्थित है। इसके पदाधिकारीगण हैं—प्रा० कल्याणमल लोढ़ा सभापति, प्रा० विष्णुकान्त शास्त्री उपसभापति, लालबहादुर सिंह मंत्री तथा प्रा० जगन्नाथ सेठ संयुक्त मंत्री।

यौगिक संघ—मैदान में सुबह टहलने वालों ने प्राणायाम हेतु 'प्रभात यौगिक संघ' की स्थापना दिसम्बर १९५१ ई० में की। कालान्तर में योग-शिक्षण एवं प्राकृतिक चिकित्सा का यह लोकप्रिय केन्द्र बन गया और १९५४ ई० में 'यौगिक संघ' के नाम से अपने वर्त्तमान स्थान ब्रिग्रेड ग्राउन्ड स्थित वृक्षों के झुरमुट (अमेरिकन एयरलाइंस) के सामने आ गया। इसका कार्यालय ४१ चौरंगी रोड में है।

यहाँ सुयोग्य प्रशिक्षकों द्वारा नवागन्तुकों को योगासन सिखलाया जाता है। साथ ही षट कर्म हेतु ठंडे-गर्म जल की व्यवस्था है। दमा, मधुमेह, मन्दाग्नि, अपच, वात आदि गम्भीर रोगों का उपचार अनुभवी प्राकृतिक चिकित्सकों द्वारा किया जाता है। प्रतिवर्ष सुप्रसिद्ध योगीराजों के कार्यक्रम यह संस्था आयोजित करती है। हरिभक्त ब्रह्मचारी, धीरेन्द्र ब्रह्मचारी, स्वामी सत्यव्रत, प्रो० चमनलाल कपूर, सी० बी० सुब्रमहण्यम, सूपायनाचार्य आदि यहाँ प्रशिक्षार्थ आ चुके हैं।

संघ का अपना एक छोटा-सा पुस्तकालय भी है जिसमें योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा सम्बन्धी पुस्तकें हैं। पिकनिक एवं तीर्थयात्रा का भी आयोजन इसके द्वारा प्रायः किया जाता है। अखिल भारतीय यौगिक सम्मेलन के अवसर पर १९६४ ई० में इसने एक विशेषांक प्रकाशित किया। १९७७ ई० में अपनी रजत जयंती पर संघ ने एक विशिष्ट स्मारिका प्रकाशित की। १९७८ ई० में फूलों की घाटी एवं हेमकुण्ड की सैर पर एक सचित्र पुस्तिका संघ की ओर से प्रकाशित की गई।

वर्त्तमान में लक्ष्मीनारायण तोदी इसके सभापति तथा जयदेव अग्रवाल उपसभापति हैं। इसके मंत्री बनवारीलाल शर्मा का देहान्त हाल में ही एक दुर्घटना में हो गया था।

अर्चना—इस सांस्कृतिक संस्था की स्थापना १९५२ ई० की बसन्त पंचमी को बजरंगलाल लोहिया, नथमल केड़िया आदि समाजसेवियों ने की। वर्त्तमान में गुलाब खण्डेलवाल इसके सभापति तथा नथमल केड़िया मंत्री हैं।

महानगर के प्रसिद्ध व्यवसायियों के सहयोग से यह संस्था निम्नलिखित साहित्यकारों में से प्रत्येक को २१००० रुपये प्रदत्त कर सम्मानित कर चुकी है—बशीर अहमद मयूख, नन्दकिशोर अवस्थी, विश्वनाथ मुखर्जी, पद्मावती झुनझुनवाला 'शबनम', किशोर कल्पना कान्त एवं केदारनाथ मिश्र।

साथ ही १० मौलिक एवं श्रेष्ठ काव्य-ग्रन्थ इसने प्रकाशित किए हैं, जिनमें से अधिकांश उत्तर-प्रदेश शासन द्वारा पुरस्कृत हो चुके हैं।

गत १८ वर्षों से यह संस्था 'ज्ञान भारती' विद्यालय भवन में संगीत एवं नृत्य का प्रशिक्षण दे रही है। सम्प्रति शताधिक बालिकाएँ इससे लाभान्वित हो रही हैं।

भारतीय संस्कृति संसद—भारतीय भाषाओं के साहित्य एवं साहित्यकारों में समन्वयात्मक दृष्टिकोण स्थापित करने हेतु इस संस्था की स्थापना सम्वत् २०१२ को की गई। इसका कार्यालय १० जवाहरलाल नेहरु रोड के एक तल्ले पर स्थित है। देश के अनेक गणमान्य विद्वानों, साहित्यकारों, राजनीतिज्ञों एवं धर्माचार्यों के भाषणों का आयोजन करना इसकी विशेष उपलब्धि है। संगीत तथा चित्रकला शिक्षण की भी यहाँ व्यवस्था है। इसका अपना एक लघु पुस्तकालय है, जिसमें प्रायः ५००० पुस्तकें हैं। १९६५ ई० में इस ने 'तीन दिवसीय कथा समारोह' का आयोजन किया।

इसके अन्तर्गत महिलाओं के लिए 'मनीषा' नामक संस्था स्थापित की गई है।

अनामिका—इस अभिनव नाट्य संस्था की स्थापना २४ दिसम्बर १९५५ ई० को हुई। संस्थापकों में प्रमुख थे—भँवरमल सिंघी, श्यामानन्द जालान, डॉ० प्रतिभा अग्रवाल, गोविन्द प्रसाद कानोड़िया, सुशीला सिंघी, सुशीला भण्डारी, दीवानचन्द रतेरिया आदि प्रबुद्ध साहित्यप्रेमी। प्रथम अध्यक्ष बने गोविन्द प्रसाद कानोड़िया तथा मंत्रीगण थे डॉ० प्रतिभा अग्रवाल एवं श्यामानन्द जालान। प्रारंभ में इसका कार्यालय १८६ चित्तरंजन एवेन्यू पर स्थित था। वर्त्तमान में ४ बिशप लेफ्राय रोड में इस का कार्यालय है एवं पूर्वाभ्यास आदि का आयोजन भी यहीं पर होता है।

सांस्कृतिक कार्यक्रम आरंभ हुए 'पन्त-प्रवाहिनी' से। फिर तो नाटक, एकांकी एवं नृत्य-नाट्य प्रदर्शन की अविरल परम्परा अनामिका ने स्थापित कर दी। मात्र ३ वर्ष बाद ही अनामिका ने संगीत नाटक अकादमी द्वारा दिल्ली में आयोजित हिन्दी नाट्य प्रतियोगिता में भाग लेकर 'नये हाथ' का मंचन किया और पुरस्कार स्वरूप स्वर्ण पदक प्राप्त किया। १९६४ ई० में सप्ताहव्यापी एतिहासिक हिन्दी नाट्य महोत्सव का आयोजन अनामिका ने किया। इस अवसर पर कृष्णाचार्य द्वारा सम्पादित 'हिन्दी नाट्य साहित्य' ग्रन्थ अनामिका ने प्रकाशित किया। १९७०-७१ वर्ष से अनामिका ने स्थायी हिन्दी रंगमंच की स्थापना हेतु दृढ़ निश्चय से प्रति सप्ताह नियमित नाट्य प्रदर्शन प्रारम्भ किया, जो आज भी अविरल रूप से चल रहा है। १९७६ ई० में श्यामानन्द जालान को संगीत नाट्य अकादमी की ओर से सर्वश्रेष्ठ निर्देशक का पुरस्कार मिला, जो प्रकारान्तर में संस्था का ही सम्मान था। १९७७ ई० से 'नाट्यवार्त्ता' त्रैमासिक पत्रिका का प्रकाशन भी आरंभ किया गया, जिसके सम्पादक हैं विमल लाठ। जनवरी १९८० ई० में अनामिका ने अपना वर्षव्यापी रजत-जयंती समारोह मनाया।

नये हाथ, आषाढ़ का एक दिन, छपते-छपते, एवं इन्द्रजित, आधे-अधूरे, स्टील फ्रेम, सुहाग के नूपुर, गोदान आदि इसके प्रसिद्ध नाटक रहे हैं। जिन निर्देशकों ने इसके मंच से नाट्य जगत में विशेष प्रतिष्ठा प्राप्त की, वे हैं—श्यामानन्द जालान, बद्री तिवारी, डॉ० प्रतिभा अग्रवाल एवं विमल लाठ। वर्त्तमान में प्राध्यापक विष्णुकान्त शास्त्री इसके अध्यक्ष हैं तथा मंत्रीद्वय हैं—विमल लाठ एवं किरण जालान।

संगीत ज्योत्स्ना—इसकी स्थापना २५ फरवरी १९५६ ई० में २, सैयदसाली लेन (टाँटिया हाईस्कूल) के प्राँगण में हुई। राधाकृष्ण नेवटिया, कालीचरण पोद्दार, बजरंगलाल लाठ, मदनलाल अग्रवाल तथा रामनिवास जाजू इसके संस्थापक थे। राधाकृष्ण नेवटिया इसके प्रथम सभापति मनोनीत हुए एवं मदनलाल अग्रवाल मंत्री।

इसमें बालिकाओं को शास्त्रीय संगीत एवं नृत्य सिखाने की सुचारू व्यवस्था है। कालक्रम में रामेश्वर नोपानी के सहयोग से श्री दौलतराम नोपानी विद्यालय में भी यह प्रशिक्षण प्रदान किया जाने लगा। सम्प्रति राधाकृष्ण नेवटिया इसके सभापति तथा पुरुषोत्तमलाल झुनझुनवाला मंत्री हैं।

हरियाणा छात्र परिषद—इसकी स्थापना १९६० ई० में कुछ सेवाभावी छात्रों ने की थी। वर्त्तमान में ४९ मुक्ताराम बाबू स्ट्रीट में इसका कार्यालय है।

बाढ़, तूफान, सूखा आदि दैवी विपत्ति हो अथवा चीनी आक्रमण आदि राष्ट्रीय संकट—इस संस्था के स्वयंसेवक देशसेवा के लिए सदैव तत्पर रहे। १९६२ ई० में इसके अन्तर्गत एक लघु पुस्तकालय तथा १९६३ ई० में 'छात्र सहायक समिति' का गठन कर जरूरतमन्द मेधावी छात्रों को पाठ्य-पुस्तकें उपलब्ध कराना आरंभ किया गया। इसके संरक्षकों में पुरुषोत्तमदास हलवासिया, कालीचरण केशान, गोविन्दराम हाडा आदि प्रमुख हैं।

राजस्थानी प्रचारिणी सभा—इसकी स्थापना १२ दिसम्बर १९६६ ई० को रतन शाह के नेतृत्व में की गई। इसका मूल उद्देश्य संविधान में राजस्थानी भाषा को मान्यता दिलवाना है। इस हेतु विचार-गोष्ठियाँ, कवि सम्मेलनों आदि का आयोजन तथा केन्द्रीय सरकार के समक्ष प्रतिवेदन करना इसकी मुख्य गतिविधि है। राजस्थानी भाषा के प्रचार हेतु एक पाक्षिक पत्र 'लाडेसर' का इसके द्वारा प्रकाशन किया गया था। १९७२ ई० से कुछ राजस्थानी भाषा में सर्वोत्तम गद्य व पद्य कृतियों के लिए—११०० रुपये का पुरस्कार भी दिया। राजस्थानी भाषा प्रचार समिति (जयपुर) के तत्वावधान में यह राजस्थानी भाषा की परीक्षाएं भी आयोजित कर रही है।

भारतीय भाषा परिषद—इसकी स्थापना २ अक्टूबर १९७४ ई० को ३६ शेक्सपीयर सरणी में की गयी। इसके संस्थापकों में प्रमुख थे—सीताराम सेकसरिया, बद्री प्रसाद पोद्दार, लक्ष्मीनिवास बिड़ला, नथमल भुवालका, पुरुषोत्तमदास हलवासिया, हरिप्रसाद माहेश्वरी, प्रदीप कुमार खेतान, परमानन्द चूड़ीवाल आदि। वर्त्तमान में डॉ० प्रभाकर माचवे इसके निदेशक हैं।

इसके बहुमंजिले भवन में ग्रंथालय, वाचनालय, सभागार, गोष्ठी कक्ष, कार्यालय एवं अतिथि आवास हैं। इसका उद्देश्य विभिन्न भारतीय भाषाओं की अनेकता में एकता स्थापित करना है। इसके तलकक्ष में साहित्य सूचना केन्द्र भी है।

बड़ाबाजार लाईब्रेरी—मूर्धन्य साहित्यकारों एवं राष्ट्रसेवियों—आचार्य गोविन्द नारायण मिश्र, पं० छोटूलाल मिश्र, पं० दुर्गाप्रसाद मिश्र, लक्खीनारायण बर्मन एवं पं० काली प्रसाद तिवारी प्रभृति की प्रेरणा से इस लाइब्रेरी की स्थापना पं० केशव प्रसाद मिश्र ने १९०० ई० में वसंतोत्सव पर मुरलीधर गोयनका के सहयोग से की। उस समय तक हिन्दी भाषा-भाषियों की कोई भी संस्था कलकत्ता में न थी। इसके उद्घाटन के अवसर पर तत्कालीन गवर्नर सर जोह्न वुडबर्न भी उपस्थित थे। यह उल्लेखनीय है कि इम्पीरियल लाइब्रेरी (सम्प्रति नेशनल लाइब्रेरी) की भी स्थापना इसके दो वर्ष बाद में हुई। इसके प्रथम पदाधिकारी थे—आर. डी. मेहता C.I.E. अध्यक्ष, दुर्गाप्रसाद खेतान एवं जगन्नाथ प्रसाद चतुर्वेदी उपाध्यक्ष, केशव प्रसाद मिश्र मन्त्री। बाबू यशोदानन्दन अखौरी इसके प्रथम पुस्तकाध्यक्ष बने और कालक्रम में वे इसके उपाध्यक्ष भी मनोनीत हुए।

शीघ्र ही यह संस्था बड़ाबाजार अंचल के साहित्यिकों, श्रीमंतों एवं राष्ट्रसेवियों के मिलन की केन्द्र बिन्दु बन गई। १९१३ ई० में जस्टिस शारदाचरण मित्र इसके अध्यक्ष तथा मदनमोहन बर्म्मन मन्त्री बने। १९२४-२५ ई० में जब घनश्यामदास बिड़ला इसके संरक्षक बने, तब उन्होंने उदारतापूर्वक १०/१/१ सैयद सालो लेन स्थित 'ब्राह्मण बाड़ी' भवन का एक अंश इसे निःशुल्क दे दिया। पुस्तकालय का प्रधान कार्यालय यहीं पर अवस्थित है। पुस्तकालय कुछ समय तक हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग की परीक्षाओं का केन्द्र स्थल रहा। पुस्तकालय ने महाकवि निराला का अभिनन्दन भी किया। पुस्तकालय के स्वर्ण जयन्ती समारोह का उद्घाटन २४ दिसम्बर १९५२ ई० को तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ० राजेन्द्र प्रसाद ने किया, तब उन्होंने पुस्तकालय के साथ एक पाठक के रूप में अपने घनिष्ठ सम्बन्धों का उल्लेख किया। उस वर्ष पुस्तकालय के अध्यक्ष थे डॉ० चम्पालाल गुप्त तथा मन्त्री महावीर प्रसाद अग्रवाल।

१७ अप्रैल १९६० ई० को राष्ट्रपति भवन (दिल्ली) में आयोजित एक विशेष समारोह में पुस्तकालय की ओर से राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त को 'अभिनन्दन ग्रंथ' समर्पित किया गया। इसके ६० वें स्थापना दिवस समारोह का उद्घाटन किया सेठ गोविन्ददास ने। १९६२ ई० में पुस्तकालय की हीरक जयन्ती समारोह का उद्घाटन किया नेशनल लाइब्रेरी के पुस्तकाध्यक्ष पद्मश्री बी० एस० केशवन ने। राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर कार्यक्रम के प्रधान अतिथि थे एवं उनकी

रचना 'उर्वशी' पर गीति-नाट्य का मंचन हुआ। १९६६ ई० में इसके अध्यक्ष काशीप्रसाद मोदी तथा मन्त्री बाबूलाल भरतिया के प्रयत्नों से लक्ष्मीनिवास बिड़ला ने ३० नं० आड़ी बांसतल्ला लेन स्थित विशाल सभाकक्ष पुस्तकालय को अपनी शाखा स्थापित करने के लिए निःशुल्क प्रदान किया।

पुस्तकालय की कौस्तुभ जयन्ती समारोह का उद्घाटन २६ दिसम्बर १९८१ ई० को लक्ष्मीनिवास बिड़ला ने किया। समारोह की अध्यक्षता की सुप्रसिद्ध साहित्यकार जैनेन्द्र कुमार ने तथा प्रधान अतिथि थे महामहिम राज्यपाल भैरव दत्त पाण्डेय।

लक्ष्मीनिवास बिड़ला के सौजन्य से पुस्तकालय के मुख्यालय की ब्राह्मण-बाड़ी का एक अंश और निःशुल्क प्राप्त हो जाने से पुस्तकालय के मुख्यालय का सभागार अब प्रायः दुगना हो गया है। साज-सज्जा एवं फर्नीचर का भी नवीनीकरण हो गया है। वर्त्तमान में इसके मुख्यालय में १२००० तथा शाखा में ६५०० पुस्तकें हैं। पदाधिकारीगण हैं—विष्णुकान्त शास्त्री अध्यक्ष, नन्दलाल जैन एवं सुरेश कुमार बगड़िया उप-सभापति, परमेश्वरलाल केड़िया मन्त्री, अशोक लखोटिया एवं पवन कुमार धेलिया सहमंत्री।

सेठ सूरजमल जालान पुस्तकालय—इसकी स्थापना १९४१ ई० में सेठ मोहनलाल जालान ने अपने पिता की पुण्य स्मृति में की। यह १८६ चित्तरंजन एवेन्यू स्थित सेठ सूरजमल जालान स्मृति भवन में अवस्थित है। इसमें प्रायः २४००० श्रेष्ठ ग्रंथ हैं जिनमें ३५०० पाण्डुलिपियाँ भी शामिल हैं। अनुसन्धानकर्त्ताओं के लिए यहाँ विशेष व्यवस्था है। यह पुस्तकालय प्रति वर्ष तुलसी जयन्ती के अवसर पर देश के मूर्धन्य रामकथा मर्मज्ञों के व्याख्यान का आयोजन करता है। वर्त्तमान में तोलाराम जालान इसके अध्यक्ष तथा सागरमल गुप्त मन्त्री हैं।

श्री महावीर पुस्तकालय—इसकी स्थापना १९०८ ई० में श्री दिगम्बर जैन युवक समिति के अन्तर्गत की गई। संस्थापकों में प्रमुख थे—बलदेव दास सरावगी, कस्तूरचन्द बैनाड़ा, दुलीचन्द परवार एवं छोटेलाल सरावगी। प्रारम्भ में यह ९४ लोअर चितपुर रोड (मियाँ कटरा) में स्थित था। अर्थाभाव के कारण अनेक बार इसका स्थानान्तरण होता रहा, फिर अन्त में १० ए, चितपुर स्पर स्थित श्री दिगम्बर जैन भवन में यह लाया गया।

स्थापना काल से ही यह पुस्तकालय 'श्री महावीर डिबेटिंग क्लब' के तत्वावधान में वाद-विवाद प्रतियोगिताएँ आयोजित करता रहा। अपने कर्मठ युवा मन्त्री बाबूलाल सरावगी की पुण्य स्मृति में १९५४ ई० से यह पुस्तकालय हिन्दी भाषाभाषी छात्रों के लिए एक अन्तर्विद्यालय वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन कर रहा है। १९७२ ई० में इसका स्वर्ण जयन्ती महोत्सव मनाया गया, उस समय इसके अध्यक्ष थे हिम्मतसिंह जैन तथा मन्त्री रमेश चंद जैन। वर्त्तमान में इसका सभागार दुमंजिला बन गया है एवं साज-सज्जा का भी नवीनीकरण हो गया है। सम्प्रति जुगराज जैन इसके सभापति तथा अनन्त कुमार जैन मन्त्री हैं।

बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय—श्री विशुद्धानन्द सरस्वती विद्यालय के प्राथमिक विभाग के अध्यापक गुलाब सिंह की प्रेरणा से उनके छात्रों—राधाकृष्ण नेवटिया, नानूराम सराफ, महादेव लाल झुनझुनवाला, मदनलाल टीबड़ेवाला, मदनलाल जाजोदिया, सागरमल जाजोदिया एवं सोहनलाल जाजोदिया ने मिलकर १९१६ ई० में "बाल सभा पुस्तकालय" की सूतापट्टी में स्थापना की। १९१८ ई० में इसका नाम थोड़ा-सा बदल कर "श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय" कर दिया गया। इसके प्रथम पदाधिकारी निर्वाचित हुए—पं० कन्हैयालाल शर्मा (सभापति), राधाकृष्ण नेवटिया (उप सभापति), चन्द्रमणि राय (मन्त्री), नानूराम सराफ (कोषाध्यक्ष), मदनलाल जाजोदिया (सहमंत्री) एवं महादेवलाल झुनझुनवाला (लेखा-परीक्षक)।

१९२० ई० के स्वदेशी आन्दोलन से कुमारसभा भी अछूता न रहा। जमनालाल बजाज के सहयोग से पुस्तकालय चरखा सिखाने का केन्द्र बन कर 'चरखेवाली सभा' के नाम से विख्यात हो गया। पाठकों की संख्या में निरन्तर वृद्धि के कारण पुस्तकालय को फूलकटरा (४०२ अपर चितपुर रोड) के नए एवं बड़े स्थान में ले जाया गया। १९२० ई० से इसे हिन्दी साहित्य सम्मेलन की परीक्षाओं के केन्द्र के नाते भी स्वीकृति मिली। पं० रमाशंकर त्रिपाठी एवं पं० विष्णुदत्त शुक्ल परीक्षार्थियों को निःशुल्क पढ़ाते थे।

कुमारसभा ने 'यंग इण्डिया' में प्रकाशित महात्मा गांधी के लेखों का पं० छविनाथ पाण्डेय से हिन्दी में अनुवाद कराकर उन्हें १९२२ ई० में दो खण्डों में प्रकाशित किया। प्रत्येक ग्रंथ की ३-३ हजार प्रतियाँ छापी गईं जो हाथों-हाथ बिक गईं। तत्पश्चात् नोबेल पुरस्कार विजेता अनातोले फ्रांस की कृति 'थाया' का उपन्यास-सम्राट मुन्शी प्रेमचन्द द्वारा हिन्दी रूपान्तर 'अहंकार' कुमारसभा ने प्रकाशित किया। १७ मई १९३४ ई० को 'कुमारसभा विद्यालय' की स्थापना १७१/१ए, महात्मा गांधी रोड में की गई, जिसका उद्घाटन शिक्षानुरागी शिवकृष्ण भट्टड़ ने किया। बाद में अर्थाभाव से इसे बन्द कर देना पड़ा। इस बीच कई बार पुस्तकालय का स्थान बदलना पड़ा, तब जाकर १९३३ ई० में यह वर्त्तमान स्थान 'सुराणा भवन' (१५६ महात्मा गांधी रोड) में आया। इसके पूर्व बड़ौदा पुस्तकालय के पुस्तकाध्यक्ष को बुला कर पुस्तकों का वैज्ञानिक वर्गीकरण कराया गया, जिसकी प्रशंसा करते हुए नागरी प्रचारणी महासभा ने इसे हिन्दी जगत में क्रांतिकारी प्रयास की संज्ञा दी। कुमारसभा पुस्तकालय के सदस्य सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध संघर्ष में भी सदैव अग्रणी रहते थे, साथ ही स्वाधीनता-संघर्ष में भी सक्रिय योगदान कर जेल भी गए। १९५४ ई० में गया में आयोजित सर्वोदय सम्मेलन की भोजन-व्यवस्था पुस्तकालय के सदस्यों ने सम्हाली। १९७५ ई० में आपात-स्थिति लगा कर जनता की स्वतन्त्रता पर जब कुठाराघात किया गया, तब भी कुमारसभा के मंच से हल्दीघाटी चतुःशती का आयोजन कर जनजागरण का ओजपूर्ण शंख फूंका गया। परिणामतः पुस्तकालय के कार्यकर्त्ताओं को शासन का कोपभाजन बन कर बहुत कष्ट सहने पड़े।

कुमारसभा ने सत्साहित्य संग्रह को सदैव प्राधान्य दिया। वर्त्तमान में इसमें प्रायः १८,५०० श्रेष्ठ ग्रंथ एवं पुस्तकें संग्रहीत हैं। १९७४ ई० में नन्दलाल जैन, जुगलकिशोर जैथलिया एवं शिवरतन जासू द्वारा कार्यभार सम्हालने के पश्चात् संस्कार-सक्षम प्रकाशनों का पुनः अविरल क्रम भी प्रारम्भ हुआ। १९७५ ई० में शिवाजी राज्यारोहण त्रिशताब्दी स्मारिका, १९७६ ई० में हल्दीघाटी चतुःशती स्मारिका, १९७७ ई० में वन्देमातरम् शतवार्षिकी स्मारिका, १९७८ ई० में हीरक जयन्ती एवं सूर पचशती स्मारिका तथा 'सूरदास: विविध सन्दर्भों में' ग्रंथ, १९७९ ई० में अन्तर्राष्ट्रीय बालवर्ष स्मारिका एवं इस वर्ष १९८२ ई० समर्थ रामदास की ३०० वीं पुण्य तिथि पर 'सन्त जिन्होंने देश जगाया' स्मारिका का प्रकाशन किया, जो उच्च-स्तरीय एवं बहु-चर्चित रहे हैं। वर्त्तमान में 'बड़ाबाजार के कार्यकर्त्ता—स्मरण एवं अभिनन्दन' ग्रंथ इसी के तत्वावधान में प्रकाशित हो रहा है। कुमार सभा पर साहित्यकारों की विशेष अनुकम्पा रही है एवं समय-समय पर वे इसके मंच से समाज के लिए ज्ञान-गंगा प्रवाहित करते रहे हैं। ऐसे मनीषियों में महादेवी वर्मा, रामधारी सिंह दिनकर, राजर्षि पुरुषोत्तम दास टण्डन, जैनेन्द्र कुमार, भगवती चरण वर्मा, अमृतलाल नागर, सोहनलाल द्विवेदी, निराला, वैद्य गुरुदत्त, आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी, भवानी प्रसाद मिश्र, कन्हैयालाल सेठिया आदि उल्लेखनीय हैं।

कुमारसभा के वर्तमान पदाधिकारीगण हैं—विनयकृष्ण रस्तोगी (सभापति), महावीर प्रसाद चौधरी एवं जुगलकिशोर जैथलिया (उपसभापति), शिवरतन जासू (मन्त्री), रामगोपाल सोनी एवं

महावीर प्रसाद बजाज (सहमन्त्री) तथा सत्यनारायण होलानी (अर्थ मन्त्री)। प्राचीन भारतीय संस्कृति तथा विभिन्न ज्वलन्त सामयिक समस्याओं पर अधिकारी मनीषियों के भाषणों का आयोजन इसके व्याख्यानों का वैशिष्ट्य है।

सामाजिक संस्थाएं

माहेश्वरी सभा—राजस्थान से कलकत्ता आए प्रवासी माहेश्वरियों ने अपने जातीय उत्थान एवं सांस्कृतिक प्रवाह को अक्षुण्ण रखने हेतु संगठित होने का निश्चय किया। ७८ क्लाईव घाट स्ट्रीट (सम्प्रति नेताजी सुभाष रोड) में माहेश्वरी समाज के १२ शीर्ष व्यक्तियों की बैठक हुई जिसमें माहेश्वरी सभा की स्थापना का निर्णय लिया गया। इनके नाम थे शिवकृष्ण भँवर, रामरतनदास करनानी, हरदेवदास डागा, रामप्रताप राठी, गोविन्द लाल डागा, रामचन्द्र लाखोटिया, भीष्मचन्द मूँधड़ा, सीताराम सोढ़ानी, कन्हैयालाल लखानी, माँगीलाल बिहानी, बिट्ठलदास कोठारी, तथा गणपतलाल मोहता।

१९१४ ई० में विधिवत् स्थापित यह संस्था बड़ाबाजार अंचल की सबसे पुरानी सामाजिक संस्था है। इसका कार्यालय ४ शोभाराम बैशाख स्ट्रीट में है। अपने कर्मठ एवं सेवाभावी कार्यकर्त्ताओं की लगन तथा प्रयास से आज यह एक विशाल वटवृक्ष का रूप ले चुकी है। इसके अन्तर्गत विभिन्न प्रवृतियों की दस संस्थाएं कार्यशील है—श्री माहेश्वरी पुस्तकालय (१८१५ ई०), श्री माहेश्वरी विद्यालय (१६१७ ई०), माहेश्वरी व्यायामालय (१९२२ ई०) माहेश्वरी संगीतालय (१९२७ ई०), माहेश्वरी क्लब (१९३५ ई०), माहेश्वरी वयस्क विद्यालय (१८४५ ई०), माहेश्वरी महिला समिति (१९६३ ई०) एवं माहेश्वरी समाजोत्थान समिति (१९५७ ई०)। सम्प्रति इसके अध्यक्ष श्रीचन्द दम्मानी एवं मंत्री कन्हैयालाल द्वारकानी हैं।

श्री हनुमान मन्दिर—करीब तीन सौ वर्ष पूर्व से ही सारस्वत ब्राह्मणों द्वारा स्थापित यह मन्दिर आज अपने धार्मिक एवं साहित्यिक गतिविधियों के लिए बहुत प्रसिद्ध है। जब स्वर्गीय मंगल मिश्र एवं अन्य पुजारियों द्वारा मन्दिर की व्यवस्था सुचारु रूप से नहीं हो पा रही थी, तब सारस्वत एवं खत्री समाज ने १६२८ ई० में एक न्यास के अन्तर्गत मन्दिर की व्यवस्था का भार इन ट्रस्टियों को सौंप दिया—शिवानन्द मिश्र, शम्भूनाथ सेठ, मदनमोहन बर्मन, बेणीमाधव खत्री, दीनानाथ सेठ एवं जगन्नाथ खन्ना प्रभृति। कालक्रम में लब्बूराम मेहरा, महेशप्रसाद खत्री, लक्ष्मीनारायण मिश्र एवं दामोदरदास खन्ना (लालाबाबू) प्रभृति न्यास के ट्रस्टी बने। १९६८ ई० तक मन्दिर में केवल धार्मिक अनुष्ठान ही होते थे किन्तु उसी वर्ष दामोदरदास खन्ना के अथक परिश्रम से साहित्य सेवा हेतु 'श्री हनुमान मन्दिर साहित्यानुसंधान' संस्था की स्थापना की गई एवं आचार्यप्रवर गोविन्द नारायण मिश्र की प्रस्तर मूर्ति को भी इसके सभा कक्ष में स्थापित किया गया। वर्तमान में तो मन्दिर अनेक साहित्यिक गतिविधियों का केन्द्र हो गया है। हिन्दी साहित्यवर्द्धन हेतु प्रतिवर्ष पाँच-पाँच हजार की 'विद्यावृतियां' के तीन विभिन्न पुरस्कार दिए जाते हैं। यहाँ स्नातकोत्तर एवं शोधरत विद्यार्थियों को निःशुल्क शिक्षा देने की व्यवस्था है। इसका अपना निजी भवन एवं पुस्तकालय है। साथ ही उच्चकोटि के प्रकाशन एवं मूर्धन्य साहित्यसेवियों के चित्रों का भी यहाँ विपुल संग्रह है। सम्प्रति न्यास रक्षक हैं महेशप्रसाद खत्री, डॉ० हीरालाल चोपड़ा, अमरनाथ मिश्र, ज्ञानेन्द्रनाथ खन्ना एवं सरदारीलाल कपूर।

अपर इण्डिया एसोसियेशन—१९०५ ई० में हिन्दी सेवियों ने इस संस्था की स्थापना मदन मोहन बर्मन स्ट्रीट में की। कालान्तर में यह ४०२ अपर चित्तपुर रोड स्थित वर्त्तमान कार्यालय में

स्थानान्तरित कर ली गई। इस संस्था का उद्देश्य मुख्यतः हिन्दी भाषियों की आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति सुधारना है। इसके संस्थापकों में मदनमोहन बर्मन, मूलचन्द अग्रवाल, भोलानाथ बर्मन इत्यादि गणमान्य व्यक्ति थे एवं दीर्घकाल तक कार्यों का संचालित करते रहे। १९३५ ई० में बर्मा से आए प्रवासी भारतीयों की सहायतार्थ इस संस्था ने लाखों रुपये लगाए। वर्तमान में इसका नेतृत्व युवकों के हाथ में है। एसोसियेशन का अपना एक वाचनालय भी है।

कलकत्ता लोहाणा महाजन—महाजन बाड़ी के नाम से प्रसिद्ध इस संस्था की स्थापना गुजराती समाज द्वारा १९१५ ई० में की गई। इसका उद्देश्य अपने समाज के छात्रों की आर्थिक सहायता करना है। संस्था के पास निजी बहुमंजिला भवन है जहाँ महिलागृह उद्योग प्रतिष्ठान एवं औषधालय आदि की व्यवस्था है। इसका कार्यालय ५१ एवं ५२ राधाबाजार लेन में है।

बजरंग परिषद—इसकी स्थापना १९१८ ई० में हुई। इसके संस्थापकों में प्रमुख थे राधेमोहन चतुर्वेदी, रमनलाल तैनानी एवं जीतमल व्यास इत्यादि गणमान्य व्यक्ति। इसका कार्यालय महात्मा गाँधी रोड स्थित सदासुख कटरा में है, वहीं पर पुस्तकालय, संगीत शिक्षण, टेबल-टेनिस आदि की व्यवस्था है। इसका मुख्य लक्ष्य धार्मिक सेवा ही है। १९७१ ई० में बंगलादेश से आए शरणार्थियों की इसने सेवा की एवं दैवीप्रकोप और बाढ़ के समय भी यह संस्था राहत कार्य करती है। इसकी एक शाखा जगदल में है।

दरिद्र बान्धव भण्डार—इस संस्था की स्थापना बंगाली समाज द्वारा नयनचन्द्र दत्त स्ट्रीट में १९२२ ई० में हुई। चन्द्रशेखर गुप्त इसके संस्थापक थे। इसका अपना निजी भवन ६५/२ बीडन स्ट्रीट है। सम्प्रति इस संस्था के संरक्षकों में प्रमुख भूतपूर्व मुख्यमंत्री श्री प्रफुल्लचन्द्र सेन भी हैं। १९२२-२३ ई० में इसने 'बालक पाठागार' पुस्तकालय सम्प्रति 'सच्चिदानन्द ग्रंथागार' की स्थापना की। इसके अन्तर्गत किए गए विभिन्न सेवा कार्यों में प्रमुख हैं—१९२४ ई० में चित्तरंजन दातव्य की स्थापना, १९३६ ई० से निःशुल्क दूध वितरण व्यवस्था, १९४१ ई० में बालानन्द ब्रह्मचारी स्मृति सेवायतन सम्प्रति टी० बी० सेनीटोरियम की स्थापना, १९५७ ई० में निःशुल्क सिलाई स्कूल एवं काकुरगाछी में मोहनानन्द ब्रह्मचारी सेवायतन प्रसूतिगृह और शिशु कल्याण केन्द्र की स्थापना इत्यादि। इसके अतिरिक्त दक्षिणेश्वर में बालानन्द आरोग्य भवन, गोपीकिशन खेमका चेस्ट क्लीनिक एण्ड हॉस्पीटल और डायबिटीज क्लीनिक आदि भी इसके द्वारा खोले गये हैं।

सर्वोदय विचार परिषद—इस संस्था का गठन आचार्य विनोबा भावे के अनुयायियों द्वारा १३२/१ महात्मा गाँधी रोड में किया गया। इस संस्था के मुख्य कार्य भूदानयज्ञ को सफल बनाना, खादी प्रचार, हरिजन एवं वनवासी जातियों का उत्थान, कुष्ठ रोगियों की सेवा एवं साम्प्रदायिकता का उन्मूलन करना है।

ओसवाल नवयुवक समिति—कलकत्ता के ओसवाल समाज की एकमात्र पुरानी एवं सक्रिय इस संस्था की स्थापना १९२६ ई० में हुई। अपने ही समाज में फैले अंधविश्वास एवं कुरीतियों को हटाने, बाल विवाह एवं वृद्धविवाह का विरोध करने आदि समाज सुधार कार्य इसके मुख्य उद्देश्य हैं। इसके अतिरिक्त राष्ट्रीय सुरक्षा कोष एवं सहायता कोष में अनुदान, दैवी प्रकोपों से पीड़ितों की मदद आदि कार्य भी यह संस्था करती है। १९४७ ई० में इसने बालिका विद्यालय की स्थापना की। इसका मुख्य कार्यालय निजी भवन ४१ ब्रजदुलाल स्ट्रीट में है, एवं २ नन्दो मल्लिक लेन स्थित ओसवाल भवन विवाह आदि समारोहों के उपयोग में आता है। 'ओसवाल नवयुवक' इस समिति का मासिक मुख-पत्र है।

कलकत्ता युवक संघ—इस संघ की स्थापना गाँधी एवं नेताजी सुभाषचन्द्र बोस की प्रेरणा से स्वयंसेवक दल के रूप में १९३५ ई० में की गई। धार्मिक एवं सार्वजनिक सेवाकार्य ही इसका लक्ष्य

है। इसने स्वाधीनता संग्राम के दौरान १९४६ ई० में कलकत्ता एवं हावड़ा में शिविर लगाकर गरीब विस्थापितों की मदद की एवं १९४८ ई० से १९५३ ई० तक पूर्वी पाकिस्तान से भारत आये हिन्दुओं के पुनर्वास में भी सहयोग किया। १९५५ ई० में इसके अन्तर्गत लक्ष्मीदेवी टण्डन ने महिला विभाग की स्थापना की जिसमें महिलाओं को सिलाई, नर्सिंग एवं गृहउद्योग की शिक्षा दी जाती है। इसका अपना एक लघु पुस्तकालय भी है।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन—इसकी स्थापना २५ दिसम्बर १९३५ ई० में समाजसुधार एवं जनसेवा हेतु की गई। इसके मंच से दहेज व पर्दाप्रथा का तीव्रतम विरोध, बालविवाह की समाप्ति एवं विधवा विवाह का डटकर समर्थन किया गया। इसने राजनैतिक एवं सामाजिक क्षेत्रों में मारवाड़ी समाज के प्रतिनिधित्व के लिए अथक प्रयास किया। विभिन्न प्रान्तों में इसकी शाखाएँ हैं किन्तु अखिल भारतीय समिति का कार्यालय कलकत्ता ही है।

१९६० ई० में 'भाषा-विवाद' सम्बन्धी गौहाटी एवं अन्य शहरों में हुए दंगे एवं उपद्रवों में सम्मेलन ने मारवाड़ी समाज का प्रतिनिधित्व कर सरकार को जाँच आयोग गठन करने को बाध्य किया। बंगलादेश से आये विस्थापितों के लिए इसके द्वारा किए गए राहत कार्य भी उल्लेखनीय है।

मित्र परिषद—इस संस्था की स्थापना १९५८ ई० में हुई। ११५ ए चित्तरंजन एवेन्यू में इसका निजी भवन है जो विविध समारोहों एवं अनुष्ठानों के उपयोग में आता है। परिषद द्वारा यौगिक प्रशिक्षण, फर्स्ट एड ट्रेनिंग, खेल-कूद व व्यायाम, औषधालय, रात्रि शिक्षण आदि संचालित किए जाते हैं एवं छात्रवृतियाँ भी दी जाती है। राष्ट्रीय सुरक्षा कोष एवं बाढ़ पीड़ितों की सहायतार्थ इसके द्वारा समय-समय पर आर्थिक सहायता दी जाती है।

हरियाणा नागरिक संघ—इस संस्था की स्थापना १९५८ ई० में हुई। इसकी स्थापना का उद्देश्य हरियाणा के नागरिकों में सोहार्दभाव को दृढ़ करना है। इसके संस्थापकों में बैजनाथ केशान, नवलकिशोर गुप्त, काशीराम गुप्त, जगन्नाथ बेरीवाल एवं अभयराम आर्य आदि प्रमुख रहे हैं। इसका निजी भवन ४० विवेकानन्द रोड स्थित हरियाणा भवन है। संघ ने हरियाणा को पूर्णराज्य का दर्जा दिलवाने हेतु अथक प्रयास किया था। राष्ट्रीय विपत्तियों एवं प्राकृतिक आपदाओं के समय इसने सदैव आर्थिक सहयोग दिया है। वर्त्तमान में इसका अपना एक पुस्तकालय एवं बर्तन और वास्तु भण्डार है।

महिला परिषद—कलकत्ता मारवाड़ी समाज की प्रबुद्ध महिलाओं द्वारा स्थापित यह संस्था वर्तमान में बच्चों के लिए १५ बलराम दे स्ट्रीट स्थित माण्टेसरी स्कूल का संचालन कर रही है। जनहितार्थ कार्यों के अलावा इस संस्था द्वारा समय-समय पर राष्ट्रीय विपदाओं के समय आर्थिक सहयोग भी दिया जाता रहा है।

लेडिज स्टडी ग्रुप—इस संस्था की स्थापना चेम्बर आफ कॉमर्स के तत्वावधान में हुई। विभिन्न राष्ट्रीय विपत्तियों एवं दैवी प्रकोपों के समय इसकी सदस्याओं ने धन एकत्र कर पीड़ितों एवं जरुरतमंद लोगों को आर्थिक सहायता प्रदान की। सैनिकों के कल्याणार्थ इसका विशेष आर्थिक सहयोग उल्लेखनीय है।

माहेश्वरी महिला समिति—इस संस्था की स्थापना श्री माहेश्वरी सभा के अन्तर्गत १९६३ ई० में की गई। इसका उद्देश्य महिलाओं में परस्पर सहयोग स्थापित करना एवं गृहस्थी सम्बन्धी तरह-तरह के कार्यों में समाज की लड़कियों को प्रशिक्षण देना इत्यादि है। इसके द्वारा शिल्प शिक्षण केन्द्र, गृह उद्योग विभाग, ललित कला विभाग, शिशु विहार, माण्टेसरी स्कूल आदि का संचालन किया जा रहा है एवं सांस्कृतिक समारोह तथा प्रदर्शनियों के आयोजन भी किए जाते हैं।

परिवार मिलन—इस संस्था की स्थापना लगभग दस वर्ष पूर्व हुई। इसका कार्यालय १३/१ कलाकार स्ट्रीट में है। प्रतिवर्ष राष्ट्रीय गीतों की अन्तर्विद्यालयीय प्रतियोगिता एवं विभिन्न कार्यक्रमों द्वारा सामाजिक एवं राष्ट्रीय चेतना जागृत करना ही इसका प्रमुख उद्देश्य है। इसके संस्थापक द्वारकाप्रसाद गनेरीवाल हैं एवं स्थानीय शिक्षाविद्, साहित्यकारों एवं शिल्पियों का भी योगदान है। सम्प्रति द्वारकाप्रसाद गनेरीवाल इसके अध्यक्ष एवं श्रीराम थिरानी मंत्री है।

सारस्वत खत्री संस्कृति परिषद—सारस्वत एवं खत्री समाज के सम्मिलित प्रयासों से जन्मी इस संस्था की स्थापना आज से कोई ४ वर्ष पूर्व हुई। राजनीति से अलग हटकर संस्कृति पुनरोत्थान का कार्य करना परिषद का लक्ष्य है। साथ ही स्त्री-शिक्षा प्रसार, निर्धन बालकों की शिक्षा व्यवस्था, छात्रवृतियाँ, पुस्तकालय, नि:शुल्क नेत्र शल्ययन शिविर, एवं जनकल्याणकारी कार्य करना भी परिषद का अपना उद्देश्य है। इसके संस्थापकगण हैं कृष्णकान्त शास्त्री, बाबूराम कपूर, अमरकुमार झिंगन, किशनचन्द टण्डन, स्वामीदयाल सेठ, ज्योतिलाल खत्री एवं रूपनारायण खत्री। सम्प्रति बाबूराम कपूर इसके अध्यक्ष एवं अमरकुमार झिंगन मंत्री हैं। वर्तमान में इसका कार्यालय २, तनसुख लेन में है।

मिथिला सांस्कृतिक परिषद—यह संस्था मैथिली संस्कृति, भाषा एवं साहित्य की उन्नति के लिए कलकत्ता महानगर में कार्यरत है। समय-समय पर राहत कार्यों में भी भाग लेती है। साहित्य अकादमी में मैथिली को स्थान प्राप्त कराने, विद्यापति की डाक टिकट प्रकाशित कराने, बिहार लोक सेवा आयोग में मैथिली-भाषा को स्थान दिलाने, मिथिला क्षेत्र में मैथिली भाषा को ही शिक्षा का माध्यम बनाने आदि कार्यों में इस संस्था का उल्लेखनीय योगदान रहा है। इसके द्वारा उच्चकोटि की दस से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। अपने प्रत्येक वार्षिकोत्सव पर संस्था द्वारा एक पुस्तक एवं स्मारिका प्रकाशित करने की परम्परा है। परिषद द्वारा प्रकाशित पुस्तक 'नैका बनजारा' के लेखक मणिपद्म को १९७४ ई० में साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका है साथ ही परिषद को साहित्य अकादमी द्वारा साहित्य संस्थान भी घोषित किया जा चुका है। परिषद द्वारा प्रतिमाह मैथिली बुलेटिन प्रकाशित किया जाता है। इसका अपना कार्यालय ६ बी, कैलाश साहा लेन में है।

धार्मिक एवं सेवा संस्थाएं

मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी—२ मार्च १९१३ ई० को कॉटन स्ट्रीट स्थित जोड़ा कोठी की एक बैठक में ओंकारमल सराफ, जुगलकिशोर बिड़ला, हरखचंद मोहता आदि समाजसेवियों के सामुहिक प्रयास से इस संस्था की स्थापना 'मारवाड़ी सहायता समिति' के नाम से की गई। कालान्तर में इसका नामकरण 'मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी' कर दिया गया। इसके प्रथम सभापति जुगलकिशोर बिड़ला एवं प्रथम मन्त्री ओंकारमल सराफ मनोनीत हुए। सर्वसाधारण की सेवा ही इसका मुख्य लक्ष्य है। प्रारम्भ में इसके अन्तर्गत ४४/२ बांसतल्ला में केवल एलोपैथिक एवं आयुर्वेदिक चिकित्सा विभाग ही खोले गए। धीरे-धीरे कार्य प्रगति के साथ-साथ बंगाल में रानीगंज तथा बंगाल के बाहर राँची और रतनगढ़ में भी इसकी शाखाएँ खोली गई। १९३८ ई० में रजत जयन्ती मनायी गई, तब इसके कैलाशचन्द्र बोस अध्यक्ष एवं घनश्यामदास बिड़ला मन्त्री थे। ७ मई १९३८ ई० को नेताजी सुभाषचन्द्र बोस ने अपने करकमलों से इसके वर्तमान निजी भवन २२६ रवीन्द्र सरणी का उद्घाटन किया। बर्दवान में आयी भीषण बाढ़ के दौरान तो इसके प्राय: सभी पदाधिकारियों ने दिन-रात एक कर राहत कार्य किया था। १९६३ ई० में इसकी स्वर्ण जयन्ती मनायी गई। वर्तमान में इसके अन्तर्गत एलोपैथिक, सर्जिकल, आयुर्वेदिक, होम्योपैथिक एवं प्राकृतिक

चिकित्सा की सेवाएँ एवं इनके आऊटडोर, इन्वार्ड एवं इमरजेंसी विभाग की सुविधाएँ भी उपलब्ध हैं जहाँ प्रतिवर्ष लाखों व्यक्ति उपचार पाकर लाभान्वित होते हैं। विभिन्न सेवा कार्यों के अतिरिक्त इसके द्वारा सस्ते एवं उचित मूल्य में शुद्ध घी का निर्मित आहार सर्वसाधारण को प्रतिदिन उपलब्ध करवाना उल्लेखनीय एवं प्रशंसनीय है। सम्प्रति इसके अध्यक्ष किशोरीलाल ढांढनिया एवं मन्त्री चिरंजीलाल केजड़ीवाल हैं।

पंजाब सेवा समिति—१९१४ ई० में पंजाबी समाज द्वारा इस संस्था की स्थापना एक दातव्य औषधालय के रूप में की गई। किन्तु आज यह एक वट-वृक्ष का रूप धारण कर चुकी है। मानवीय सेवाभाव ही इसका लक्ष्य है। १९७० ई० में निर्मित संस्था का निजी बहुमंजिला भवन ११२ रवीन्द्र सरणी विवाह एवं धार्मिक अनुष्ठानों के उपयोग में आता है। १ हनुमानजी लेन में इसका चिकित्सा विभाग है जहाँ एलोपैथिक, होम्योपैथिक तथा आयुर्वेदिक चिकित्सा उपलब्ध हैं। १९५२ ई० में इसके अन्तर्गत हड्डी विभाग की स्थापना की गई एवं यह विभाग आज अपनी पूर्ण लोकप्रियता प्राप्त कर चुका है। प्रति वर्ष हजारों व्यक्ति इसकी सेवाओं से लाभान्वित होते हैं।

हिन्दू सत्कार समिति—इस सेवा संस्था की स्थापना १९२६ ई० में की गई। हिन्दू लावारिश लाशों को शमशान घाट ले जाकर हिन्दू पद्धति के अनुसार अन्तिम संस्कार करना ही इसका प्रमुख लक्ष्य है। इसका निजी भवन कॉलेज स्ट्रीट एवं महात्मा गाँधी रोड के मोड़ पर है। इस समिति के संस्थापकों में कलकत्ता के भूतपूर्व मेयर नवकुमार राय चौधरी, जस्टिस रमाप्रसाद मुखर्जी, हरिशंकर पाल, जस्टिस चारुचन्द्र विश्वास एव प्रभुदयाल हिम्मतसिंहका हैं। इसका निजी ट्रस्ट भी है जिसके ट्रस्टीगणों में प्रभुदयाल हिम्मतसिंहका, पूर्णेन्दुशेखर वसु, नन्ददुलाल श्रीमानी एवं जस्टिस सलिलकुमार राय चौधरी हैं। १९४६ ई० में इसकी एक अन्य शाखा हावड़ा में भी खोली गई।

महिला सेवा समिति—१९४७ ई० में राजस्थानी एवं बंगाली समाज की प्रबुद्ध महिलाओं—लावण्यप्रभा सेन, अशोका गुप्ता, सुशीला सिंघी एवं प्रतिभा अग्रवाल आदि के सामुहिक प्रयास से इस संस्था की स्थापना हुई। इसका मुख्य लक्ष्य शिक्षा एवं जीविकोपार्जन सम्बन्धी साधन उपलब्ध कराना है। इसका कार्यालय राजभवन के उत्तर की ओर है, जहाँ महिलाएँ गृह उद्योग अन्तर्गत मसाले की कुटाई एवं हैण्डलूम के कपड़े इत्यादि तैयार कर जीविकोपार्जन करती हैं। श्रीमती खेतान, अनसूया कानोड़िया एवं कुलराज लाठ आदि की मदद भी प्रशंसनीय है। इसके अन्तर्गत बैकुण्ठपुर में 'चिल्ड्रन पार्क' एवं गाजीपुर (उ० प्र०) में माण्टेसरी स्कूल की स्थापना की गई। इसकी एक शाखा चौहाटी-राजपुर (२४ परगना) में है एवं वहाँ इसका निजी भवन भी है।

पुष्टिकर सेवा समिति—पुष्करणा ब्राह्मण समाज की इस संस्था की स्थापना १९४९ ई० की शिवरात्रि को ओंकारमल अचरज, रतनलाल व्यास, सूरजकरण पुरोहित, तुलसीदास एवं शिवगोपाल रंगा इत्यादि महानुभावों ने की। इसका कार्यालय २०३/१ महात्मागांधी रोड स्थित जीरा कोठी में है। धार्मिक सेवा एवं अपने समाज में परस्पर सौहार्द भाव जगाना ही इसका प्रमुख लक्ष्य है। इसके अन्तर्गत लघु पुस्तकालय, वास्तु भण्डार, भैरू जी का मन्दिर इत्यादि की व्यवस्था है।

आदर्श युवक मण्डल—इस सेवा संस्था की स्थापना १९५० ई० की शिवरात्रि को भारत-मित्र के भूतपूर्व सम्पादक रामकृष्ण शर्मा, किशोरीलाल खेतान, डा० सुधांशु सेठ, मधुसूदन बर्म्मन इत्यादि समाजसेवियों ने स्वयंसेवक दल के रूप में की। स्वयंसेवी कार्यों के अतिरिक्त यह संस्था गंगासागर तीर्थ यात्रियों की सेवाश्रुषा हेतु काकद्वीप एवं नामखाना में मेडिकल शिविर भी लगाती है। इसके संरक्षकों में पुरुषोत्तमदास बांगड़, बिहारीलाल बांगड़, सीताराम रूंगटा, श्रीकिशन सुरेका इत्यादि प्रमुख हैं।

जनकल्याण समिति—इस सेवा समिति की स्थापना १९५१ ई० में १ रामबगान लेन में की गई। इसके संस्थापकों में प्रमुख हैं—कन्हाईलाल माइती, कालीचरण मुखर्जी, अपरेश भट्टाचार्य, जीवनकृष्ण मानिक एवं श्रीमती लावण्यप्रभा दत्त आदि। यह समिति रामबगान स्थित बस्ती अंचल-वासियों के लिए कल्याणमूलक कार्य करती है। इसके अतिरिक्त सिविल डिफेन्स के स्वयंसेवक तैयार करती है एवं राज्य में प्राकृतिक आपदाओं के समय राहत कार्य में भी योगदान करती है। इसके अन्तर्गत अद्वैत मल्लिक लेन में मुफ्त होम्योपैथिक दातव्य औषधालय एवं उसी भवन में लघु पुस्तकालय का भी संचालन किया जा रहा है। कलकत्ता के भूतपूर्व मेयर गोविन्दचन्द्र दे इसके जन्म-काल से ही विशेष सहयोगी हैं।

श्री शिवशक्ति सेवा समिति—१९५०-५१ ई० में इस संस्था की स्थापना बद्रीप्रसाद खेतान एवं अन्य समाजसेवियों के प्रयास से मदन चटर्जी लेन में हुई। वर्तमान में इसका कार्यालय १९ शीतला गली में है। इसका मुख्य उद्देश्य प्रसिद्ध 'मदन दहन शिव मन्दिर' का जीर्णोद्धार करना था परन्तु कालक्रम में इसने अन्य सेवाकार्य भी करने शुरु कर दिए। इसके अन्तर्गत किए गए प्रमुख कार्यों में १९६१ में बिहार में बाढ़ पीड़ितों को आर्थिक सहयोग, १९६३-६४ ई० में मदनचटर्जी लेन में ही जल पिलाने हेतु गुमटी की स्थापना, १९६५ ई० में होम्योपैथिक औषधालय की स्थापना, तारकेश्वर के निकट बागबाड़ी में 'शिवशक्ति विश्रामगृह' की स्थापना आदि हैं। यह संस्था शिवरात्रि के अवसर पर 'शिवयात्रा' का भी आयोजन करती है।

भारत सेवक समाज—कांग्रेस की प्रेरणा एवं चेष्टा से बंगाली समाज द्वारा इस सेवा संस्था की स्थापना १९५२ ई० में की गई। ग्रामोत्थान एवं ग्रामसेवा कार्य ही इसके प्रमुख लक्ष्य हैं। इस हेतु इसके स्वयंसेवक गाँव-गाँव निरन्तर घूमते भी रहते हैं।

पश्चिम बंग समाज सेवा समिति—१९५६ ई० में बंगाली समाज द्वारा इस संस्था की स्थापना की गई। मानवीय सेवाकार्य इसका प्रमुख लक्ष्य है। १९६३ ई० में श्री गोपीकृष्ण चेरिटी ट्रस्ट द्वारा इसको १९१ चितरंजन एवेन्यू स्थित भवन जनसेवार्थ दिया गया, जहाँ इसके अन्तर्गत एक्सरे सहित आऊटडोर अस्पताल, पुस्तकालय, वाचनालय, शिशु कल्याण केन्द्र (विद्यालय), लेडी ब्रेबोर्न एण्ड डिप्लोमा क्लास इत्यादि की व्यवस्था है। इसकी अन्य शाखाएँ बारानगर, पहाड़पुर (गार्डेन रीच) एवं नदिया में भी है।

श्री विशुद्धानन्द सरस्वती दातव्य औषधालय—इस सेवा संस्थान की स्थापना १९१५ ई० में परमहंस दण्डीस्वामी श्री विशुद्धानन्द सरस्वती की लोकोपकारी भावना को मूर्त्तरूप प्रदान करने हेतु उनके ही नाम पर की गई। इसके संस्थापक सदस्य थे—केशोराम पोद्दार, हरिराम गोयनका, चिमनलाल गनेड़ीवाल, जुहारमल खेमका, मन्नालाल चमड़िया प्रभृति जबकि प्रेरणाश्रोत रहे शिवप्रसाद झुनझुनवाला, जयदयाल केडिया, दौलतराम चोखानी, रामजीदास बाजोरिया, तोलाराम गोयनका, हजारीमल दूधवेवाला, प्रहलादराय डालमिया प्रभृति। औषधालय का श्रीगणेश १८१, हरिसन रोड में ऐलोपैथिक विभाग से हुआ किन्तु स्थानाभाव के कारण फिर इसे १३, नारायणप्रसाद लेन में ले जाया गया और बाद में मगनीराम रामकुमार बाँगड़ द्वारा निर्मित भवन ३७, बड़तल्ला स्ट्रीट में लाया गया। १९७७-७८ ई० में औषधालय के तत्कालीन सभापति रामकुमार भुवालका के प्रयत्न से ३५ बड़तल्ला स्ट्रीट का मकान भी प्राप्त हो गया। ११ मई १९८० ई० को नये भवन का उद्घाटन लक्ष्मीनिवास बिड़ला के हाथों सम्पन्न हुआ। सेवा के लिए इस संस्था का सुनाम है।

वर्तमान में इसके सभापति पन्नालाल डागा, मन्त्री पुष्करलाल केडिया एवं कोषाध्यक्ष भूधरमल सराफ हैं। १ जनवरी १९७६ ई० से इसका नाम 'श्री विशुद्धानन्द हॉस्पीटल' कर दिया गया।

माहेश्वरी सेवा समिति—इसकी स्थापना २२ दिसम्बर १९२१ ई० को माहेश्वरी सभा के कार्यकर्त्ताओं द्वारा की गई। दैवी प्रकोप से पीड़ित मानवता की सेवा-सुश्रुषा इस संस्था का प्रमुख कार्य रहा है। संस्था के प्रथम सभापति ठाकुरदास मूँदड़ा एवं मन्त्री हरिकृष्ण बिहानी थे। अप्रैल १९५६ ई० एवं अप्रैल १९७१ ई० में इस संस्था द्वारा क्रमश: अपने रजत जयन्ती एवं स्वर्ण जयन्ती उत्सवों का आयोजन किया गया।

बंगाल रिलीफ सोसाइटी—इस संस्था की स्थापना डॉ० रास बिहारी मुखर्जी एवं माखनलाल दास द्वारा १९४२ ई० में की गई जिसका उद्देश्य गरीब एवं दुखी लोगों की यथोपलब्ध साधनों से सेवा करना था। गरीबों को वस्त्र वितरण इस संस्था का प्रमुख कार्य रहा है। १९४२ में नोआखाली, मेदिनीपुर एवं चटगांव में इसने बाढ़ पीड़ितों की सहायतार्थ राहत केन्द्र खोले, १९४६ में साम्प्रदायिक दंगों के दौरान प्रशंसनीय कार्य किए, द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान आतंकित होकर यहाँ से भागने वालों के लिए गोयालंद घाट पर नि:शुल्क भोजन वितरण का कार्य किया, मई १९७१ में बंगला देश की लड़ाई के अवसर पर फाँसीदेवा, सिलीगुड़ी, दार्जिलिंग और ठाकुरनगर में आये बंगला देश के शरणार्थियों की सेवा की। इसका कार्यक्षेत्र पं० बंगाल तक ही सीमित है।

काशी विश्वनाथ सेवा समिति—इस संस्था की स्थापना १९३९ ई० में की गई। सेवा के व्यापक अर्थों को दृष्टिगत रखकर ही इस संस्था ने कार्यारम्भ किया। महानगर की फुटपाथों पर जल क्षेत्रों के संचालन से लेकर विशाल समारोहों और देश के किसी भी कोने में आई दैवी आपदाओं के समय निष्कपट भाव से मानव-सेवा ही इसका लक्ष्य रहा है। प्रति वर्ष श्रावण मास में तारकेश्वर के पदयात्रियों (कावड़ियों) की सुविधार्थ यह स्थान-स्थान पर कैम्प लगाकर उचित मूल्य पर सात्विक भोजन, चाय, नीबू का शर्बत आदि उपलब्ध कराती है। तारकेश्वर के निकट हामड़ागाछी में इसका आधुनिक सुविधायुक्त एक भव्य विश्राम गृह है जिसका निर्माण १९५३ ई० में सम्पन्न हुआ था। संस्था के प्रमुख संस्थापकों में देवकीनन्दन मानसिंहका का नाम अग्रणी है। इसके अन्तर्गत 'काशी विश्वनाथ' नाम से एक पाक्षिक पत्रिका भी प्रकाशित होती है।

सोसाइटी बेनिफिट सर्किल—१९५९ ईस्वी में स्थापित इस संस्था का मुख्य उद्देश्य सर्वसाधारण को नि:शुल्क नेत्र चिकित्सा एवं ऑपरेशन शिविर लगाकर सेवा कार्य करना है। इसका मुख्य कार्यालय ५ए कलाकार स्ट्रीट में है जहाँ इसके अन्तर्गत एक नेत्र चिकित्सालय का भी संचालन किया जाता है।

नागरिक स्वास्थ्य संघ—२६ जनवरी १९५१ ई० को इस सेवाभावी संस्था की स्थापना पण्डित ललिताप्रसाद तिवारी की प्रेरणा से रामेश्वरलाल नोपानी, पुष्करलाल केडिया आदि स्काउटों ने की। इसके कार्यालय के लिए नोपानी परिवार ने ८, शोभाराम बैशाख स्ट्रीट अपने निजी भवन का कुछ अंश अवदान स्वरूप इसे दिया। सर्वसाधारण को नागरिक ज्ञान से परिचित कराना एवं नि:सहाय लोगों की सेवा करना ही इसका सर्वोपरि ध्येय है। आरम्भ में संघ ने 'लेनटर्न स्लाइडों' के माध्यम से शिक्षाप्रद प्रदर्शनियों का आयोजन, व्याख्यान एवं पुस्तिका वितरण द्वारा जनसाधारण में ज्ञान प्रचार तथा 'नागरिक स्वास्थ्य संघ बालचर मण्डल' के अन्तर्गत प्रशिक्षण इत्यादि कार्य शुरु किए थे। इसके अन्तर्गत प्रारम्भ किए गए अन्य सेवाकार्यों में उल्लेखनीय हैं—१९५२ ई० से बड़ाबाजार सफाई अभियान, १९५५ ई० से मुफ्त आँख ऑपरेशन एवं इलाज केम्प, १९६६ ई० से युवा विकास योजना एवं विद्यालय स्वास्थ्य सेवा योजना, १९७५ ई० से एम्बुलेंस एवं रात्रिकालीन डाक्टरी सेवा, १९७६ ई० में महिला संस्था 'संघ श्री' की स्थापना, १९७९ ई० से नि:शुल्क औषधि वितरण हेतु 'ड्रग बैंक' तथा आक्सीजन सिलेण्डर सेवा की व्यवस्था, १९८१ ई० में 'आई क्लीनिक'

की स्थापना इत्यादि। अब तो यह संस्था बड़ाबाजार ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण पश्चिम बंगाल के लिए ही एक 'आवश्यक संस्था' के रूप में चर्चित है। १९७२ ई० में अपनी विविध सेवा कार्य हेतु इसने २१७ रवीन्द्र सरणी स्थित निजी भवन का निर्माण कर लिया जहाँ से वर्तमान में कई सेवा कार्य भी सम्पादित हो रहे हैं। सम्प्रति इसके अध्यक्ष शिवप्रसाद नोपानी एवं मन्त्री गिरधरदास दुजारी हैं।

बाबा कालीकमलीवाला पंचायत क्षेत्र, ऋषिकेश—इस संस्था की स्थापना स्वामी श्री विशुद्धानन्दजी महाराज द्वारा बड़ाबाजार के कतिपय समाजसेवियों के सहयोग से विक्रमाब्द १९३७ (१८८१ ई०) में की गई। उत्तराखंड के यात्रियों की सुविधार्थ इस संस्था द्वारा स्थान-स्थान पर धर्मशालाओं का निर्माण कराया गया। इसके अलावा निःशुल्क अन्नक्षेत्र सदावर्त, प्याऊ, गोशाला, संस्कृत पाठशाला, औषधालय, आत्मविज्ञान-भवन, सत्संग भवन, पुस्तकालय, वाचनालय आदि विभिन्न सस्थाएं इस संस्था के अन्तर्गत कार्यशील हैं। रामनगर में संस्था का कृषिफार्म एवं बगीचा है। इस संस्था के संरक्षकों में घनश्यामदास बिड़ला, गोविन्दलाल बाँगड़, गिरिधारीलाल मोहता ईश्वरी प्रसाद गोयनका एवं भगवती प्रसाद खेतान हैं। वर्तमान पदाधिकारियों में उप-सभापति राधाकृष्ण चमड़िया, सत्यनारायण टाँटिया, मोहनलाल नोपानी, शुभकरण राजगढ़िया एवं अभिमन्यु भुवालका तथा प्रधान मंत्री परमेश्वरलाल केड़िया हैं। सभापति स्व० मोहनलाल जालान थे।

कलकत्ता पिंजरापोल सोसाइटी—कलकत्ता पिंजरापोल सोसाइटी की स्थापना १८८५ ई० में की गई। इसके संस्थापक सदस्य रामचन्द्र गोयनका, सूरजमल झुनझुनवाला, जुगलकिशोर रुइया, बद्रीदास मुकीम, राजा शिवबक्स राय बागला आदि थे। इस धार्मिक संस्था की स्थापना का उद्देश्य गौ माता की सेवा के साथ-साथ समाज को शुद्ध दूध उपलब्ध कराना है। भारत की यह सबसे बड़ी गौशाला है।

संस्था की अन्य शाखाएं सोदपुर, लिलुआ, कँचरापाड़ा, चाकुलिया, हजारीबाग, वारिया एवं रानीगंज में हैं। इनके अलावा होमियोपेथिक अस्पताल का संचालन भी इस संस्था के माध्यम से किया जाता है, साथ ही दैवी-प्रकोप के समय पीड़ितों की सहायता भी की जाती है। प्रतिवर्ष गोपाष्टमी पर सोदपुर एवं लिलुआ में सस्था द्वारा मेलों का आयोजन किया जाता है। इसके वर्तमान सभापति राधाकृष्ण कानोडिया एव प्रधान मंत्री शिवभगवान बगड़िया हैं। घनश्याम दास बेरीवाल, देवकीनन्दन पोद्दार, श्यामसुन्दर सांगानेरिया एवं शुभकरण राजगढिया इसके उपाध्यक्ष हैं।

श्रीसनातन धर्म अग्रवाल सभा—इस संस्था की स्थापना सनातन धर्म में आस्थावान मारवाड़ी अग्रवालों द्वारा विक्रम संवत् १९६३ में फूलकटरा में की गई। वर्तमान में यह संस्था यद्यपि बहुत सक्रिय नहीं है तथापि धार्मिक बैठकें एवं सत्संग के कार्यक्रम इस संस्था के माध्यम से आयोजित किये जाते हैं। इसका अपना एक पुस्तकालय भी है जिसमें विभिन्न विषयों के करीब ५००० ग्रंथ संग्रहीत हैं। पठन-पाठन के लिए एक वाचनालय भी है। श्री पुरुषोत्तम कानोड़िया के प्रयत्नों से प्रति रविवार को सभा-कार्यालय में भगवत् संकीर्त्तन एवं सत्संग का आयोजन होता है।

आर्यसमाज कलकत्ता—कलकत्ता आर्यसमाज की स्थापना सन् १८८५ ई० में हुई। इसका निजी भवन १९, विधान सरणी में आर्यसमाज मंदिर नाम से विख्यात है। महर्षि दयानन्द सरस्वती के कल्याणकारी कार्यों एवं विचारों का हिन्दू समाज में प्रचार एवं प्रसार ही इस संस्था का उद्देश्य है। सत्संग भवन एवं अतिथि शाला की संगमरमरी दीवारों पर महर्षि दयानन्द की आलोकमय एवं उत्प्रेरक जीवनी के सजीव चित्रांकन के कारण कलकत्ता आर्यसमाज भवन स्वयं में एक दर्शनीय स्थान है। समय-समय पर यहाँ धार्मिक गोष्ठियों का आयोजन होता रहता है तथा साप्ताहिक सत्संग भी होते हैं। इसकी शाखाएं खिदिरपुर, भवानीपुर, मुंशी सदरुद्दीन लेन एवं अन्य कई स्थानों

पर है। इसके अन्तर्गत आर्य कन्या विद्यालय (स्थापित सन् १९०२ ई०), वैदिक पुस्तकालय एवं वाचनालय, रानी बिरला आर्य अतिथिशाला, दातव्य औषधालय, रघुमल आर्य विद्यालय (स्थापित सन् १९३६ ई०) आदि संस्थाएं कार्यरत हैं।

संस्था की मासिक पत्रिका 'आर्य संसार' का प्रकाशन सन् १९५८ से निरंतर हो रहा है। श्री ओमप्रकाश त्यागी की प्रेरणा से सन् १९७१ में सार्वदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के अंतर्गत आर्यसमाज रिलीफ सोसाइटी की स्थापना की गई जिसका संचालन आर्यसमाज कलकत्ता द्वारा ही किया जाता है। रिलीफ सोसाइटी के प्रथम सभापति चुने गये थे बनारसीदास अरोड़ा एवं मंत्री मोहनलाल अग्रवाल। इसके माध्यम से राहत कार्य किये जाते हैं। इसके संचालकों चिरंजीलाल वानप्रस्थी, उमाकान्त उपाध्याय, दीनबन्धु शास्त्री, मिहिर धीमान, श्रीकृष्णलाल खट्टर, रोशनलाल खट्टर एवं रघुनन्दनलाल के प्रयास प्रशंसनीय हैं।

शुद्ध खादी भण्डार—कांग्रेस द्वारा विदेशी वस्त्रों के बहिष्कार के आह्वान पर बड़ाबाजार के जनसाधारण में स्वदेशी वस्त्रों के प्रति लगाव होना स्वाभाविक हो गया था। ऐसे अवसर पर सीताराम सेकसरिया, महावीर प्रसाद पोद्दार, घनश्यामदास बिड़ला एवं प्रभुदयाल हिम्मतसिंहका आदि के अथक प्रयास द्वारा प्रतिष्ठित एवं स्वयं गाँधीजी द्वारा उद्घाटित इस संस्था की स्थापना १९२९ ई० में हुई। इसका वर्तमान कार्यालय महात्मागांधी रोड पर अवस्थित है। जनसाधारण में स्वदेशी वस्त्र का लगाव एवं बेरोजगार भारतीयों को चर्खे के माध्यम से जीविकोपार्जन का साधन जुटाना ही इसका प्रमुख उद्देश्य था। आज भी यह संस्था निरन्तर सस्ते भावों में सर्वसाधारण को शुद्ध खादी वस्त्र उपलब्ध करा रही है।

राजनैतिक हलचल

पिछले पृष्ठों में हमने देखा है कि बड़ाबाजार का अंचल किस प्रकार व्यवसाय के साथ-साथ साहित्यिक, शैक्षणिक, सामाजिक जागरण एवं जनसेवा के कार्यों में द्रुतगति से आगे बढ़ रहा था। इसके साथ ही साथ इतिहास इस बात का साक्षी है कि राजनैतिक स्तर पर स्वाधीनता के संघर्ष में भी इस क्षेत्र का अवदान किसी से कम नहीं रहा। हिन्दी पत्र हिन्दी भाषियों के मध्य इस अग्नि को बराबर तेज करते रहे। प्रथम हिन्दी पत्र 'उदन्त मार्तण्ड' का १८२६ ई० में ही बड़ाबाजार के अमरतल्ला से प्रकाशन हो चुका था। बैरकपुर से १८५७ ई० के स्वातन्त्र्य संग्राम का मंगल पाण्डेय द्वारा प्रथम स्फुरण इसी प्रज्वलित अग्नि का परिचायक है। बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में बंगाल में क्रान्तिकारी गतिविधियां बड़े जोर पर थी। लार्ड कर्जन ने इसी आग को दबाने हेतु १९०५ ई० में बंगभंग की योजना बनाई परन्तु आग बुझने की अपेक्षा बढ़ती ही गई और सारे देश के साथ बड़ाबाजार भी स्वदेश प्रेम की अग्नि से धधकने लगा। अंग्रेजी के पत्र 'स्टेट्समेन' ने इस आन्दोलन में आयोजित एक सभा पर समीक्षा करते हुए १८ अगस्त १९०५ ई० के अंक में लिखा था— "....... Large number of Marwaris were visible among the packed masses......".

१९१३ ई० में बड़ाबाजार में दो महत्वपूर्ण संस्थाओं का जन्म हुआ। पहली थी "मारवाड़ी सहायक समिति" एवं दूसरी "हिन्दी नाट्य परिषद"। वैसे तो पहली सेवा संस्था थी और दूसरी सांस्कृतिक परन्तु ये दोनों ही भिन्न-भिन्न माध्यमों से राष्ट्र जागरण के कार्य में ही जुटी हुई थी। १९१६ ई० में प्रसिद्ध 'रोड़ा काण्ड' के माउजर पिस्तौल और कारतूसों को जिन्हें क्रान्तिकारियों ने उड़ा दिया था, छिपाने एवं वितरित करने का काम इसी मारवाड़ी सहायक समिति के चार सदस्यों

हनुमान प्रसाद पोद्दार (कल्याण के सम्पादक), प्रभुदयाल हिम्मतसिंहका, ओंकार मल सराफ, एवं कन्हैयालाल चितलांगिया ने किया। स्वाभाविक ही यह संस्था अंग्रेजों के आँख की किरकिरी बन गई। अतः सर कैलाशचन्द्र बोस के सभापतित्व में 'मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी' के नये नाम से यह पुनः अस्तित्व में आई। हिन्दी नाट्य परिषद के माध्यम से भी राष्ट्र भक्ति से ओतप्रोत नाटकों द्वारा राष्ट्रीय एवं सामाजिक भावों को जगाया जाने लगा। इसके सभापति श्री पद्मराज जैन एवं क्रान्तिकारी कवि पंडित माधव प्रसाद शुक्ल इस संस्था के प्राण थे। ये देश को गुलामी के बन्धन से छुड़ाने के लिए प्राणपण से जुटे हुए थे। पंडित माधव प्रसाद शुक्ल का तो एक पैर जेल में ही रहता था। वे जेल में कविताएं लिखते रहते एवं बाहर आने पर सार्वजनिक मंच से उन्हें सुनाते एवं फिर गिरफ्तार होते। इस समय बाबू बालमुकुन्द गुप्त 'भारत-मित्र' के सम्पादक थे और अपने सम्पादकीय लेखों से वे हिन्दी भाषी जनता में निरन्तर जोश भरते थे। उनके शब्द बड़े पैने होते थे। लार्ड कर्जन स्वयं इससे क्षुब्ध था। कहना नहीं होगा कि बड़ाबाजार अंचल में जो लोग उस समय 'सर' और 'रायबहादुरी' का खिताब पाने के लिए अंग्रेजों के पिठ्ठू बने हुए थे, उनमें भी गुप्तजी के कड़े प्रहारों से नवीन चेतना प्रारम्भ होने लगी।

बालगंगाधर तिलक १९१६ ई० में कलकत्ता आए थे। उस समय कांग्रेस में नरम और गरम दल बन चुके थे। तिलकजी गरम दल के थे एवं देश में तेजस्वी प्रकृति का निर्माण चाहते थे। पर वे अधिक दिन तक जीवित नहीं रह सके और १९२० ई० में ही उनका निधन हो गया। उनके निधन पर हिन्दी नाट्य परिषद ने उनकी अर्थी निकाली और उसे गंगाघाट तक ले गए जिसमें हजारों लोग शामिल हुए और जुलूस के नेता पद्मराज जैन का जोशिला भाषण हुआ। एक तरह से यह बड़ाबाजार के अंचल में बढ़ती हुई राजनैतिक चेतना का प्रबल परिचायक थी।

१९२१ ई० में स्वयं महात्मा गांधी द्वारा बड़ाबाजार जिला कांग्रेस कमेटी की स्थापना की गई एवं इसका प्रथम कार्यालय सेठ जमनालाल बजाज की कैनिंग स्ट्रीट स्थित गद्दी में बनाया गया। इसके प्रथम सभापति अम्बिका प्रसाद वाजपेयी एवं मन्त्री पद्मराज जैन निर्वाचित हुए। यह गांधीजी का दूसरी बार कलकत्ता आगमन था। उत्साही युवक राधाकृष्ण नेवटिया द्वारा अपने निवास ५२ जकरिया स्ट्रीट में महिलाओं की एक सभा आयोजित की गई जिसमें दो हजार महिलाएं उपस्थित थीं। गांधीजी के आह्वान पर देश कार्य के लिए महिलाओं ने अपने गहने एवं नकद रुपये उनकी झोली में डाल दिए एवं विदेशी वस्त्र फेंक दिए जिनकी होली-डे पार्क (सम्प्रति मुहम्मदअली पार्क) में होली जलाई गई। महिलाओं ने पर्दा प्रथा अन्त करने का बिगुल बजाकर घूंघट हटा दिए। बाहर विशाल भीड़ खड़ी थी जिसमें से कुछ लोगों को यह सहन नहीं हुआ कि उनके घरों की महिलाएं गांधीजी के आह्वान पर घूंघट उतार फेंके, अतः सभा के दौरान उतारे गए चित्रों को नष्ट करने हेतु उन लोगों ने कैमरा छिन कर उसके रील खत्म कर दिए। राधाकृष्ण नेवटिया की धर्मपत्नि श्रीमती जमुना नेवटिया भी नियमित रूप से चर्खा कातने लगी एवं महिला संगठन में जुट पड़ी।

गांधीजी ने एक लाख स्वयंसेवक एवं एक करोड़ रुपये की मांग पूरी होने पर एक वर्ष में स्वराज्य दिलाने का आश्वासन दिया था, उसी के लिए 'तिलक स्वराज्य फंड' की स्थापना की गई। बड़ाबाजार अंचल ने इस हेतु करीब १० लाख रुपये एकत्र किए। आज जहाँ मुखराम कानोड़िया स्कूल अवस्थित है, उस समय वहाँ ठाकुर अर्जुनसिंह की व्यायाम शाला थी, उसी में गांधीजी के हाथों विदेशी वस्त्रों की होली जलाने का कार्यक्रम हुआ। १९२१ ई० के अन्तिम दिनों में अहमदाबाद कांग्रेस हुई थी तब असहयोग आन्दोलन पूर्ण यौवन पर था, बड़ाबाजार के भी अनेक नेता गिरफ्तार हो चुके थे पर कुछ भूमिगत रह कर आन्दोलन चला रहे थे। उसी में से श्री

बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय के तत्कालीन मन्त्री राधाकृष्ण नेवटिया एवं सदस्य पन्नालाल सिंघई, हीरालाल सराफ एवं बद्रीप्रसाद अग्रवाल बड़ाबाजार के प्रतिनिधि चुनकर अहमदाबाद भेजे गए। १९२२ ई० में गोरखपुर में 'चौराचोरी' काण्ड के कारण गांधीजी ने आन्दोलन स्थगित कर दिया जिससे लोगों का उत्साह ठण्डा पड़ने लगा परन्तु बड़ाबाजार के नेताओं ने इस जागरण को कायम रखने हेतु 'ब्लेकहॉल आन्दोलन' चलाया ताकि अंग्रेजों के द्वारा भ्रमपूर्ण फैलायी गई ब्लेकहॉल की असत्य घटना का जिसके द्वारा अंग्रेजों ने यह अपप्रचार किया था कि नबाव सिराजुद्दौला ने एक छोटी सी कोठरी में अनेक अंग्रेजों को भरकर दम घोट कर मार दिया, पर्दाफाश हो सके। कार्यकर्त्ता उसके स्मृति स्तम्भ को नष्ट कर देना चाहते थे, सत्याग्रह चल पड़ा, गिरफ्तारियाँ होने लगी। कड़े पहरे के बावजूद एक दिन चतुराई से स्वयं सेवक वहाँ पहुँच गए एवं स्मृति स्तम्भ को हथौड़ी मार-मार कर विकृत कर दिया। इसकी चर्चा ब्रिटिश संसद तक पहुँची। अन्त में श्यामसुन्दर चक्रवर्ती के बीच-बचाव से आन्दोलन स्थगित हुआ और स्तम्भ को सदा के लिए नष्ट कर दिया गया। १९२४ ई० में सरदार पटेल ने नागपुर में झण्डा सत्याग्रह छेड़ा। नागपुर की सिविल लाइन्स में कांग्रेसी झण्डा लेकर चलने की अनुमति नहीं थी। झण्डा लेकर चलने वालों को गिरफ्तार कर लिया जाता। इसकी प्रतिक्रियास्वरूप सारे देश भर से स्वयंसेवकों के जत्थे पहुँचने लगे, बड़ाबाजार से भी अनेक स्वयंसेवक वहाँ गए एवं गिरफ्तारी दी।

साइमन कमीशन जिस दिन कलकत्ता पहुँचा, बड़ाबाजार ने पूर्ण हड़ताल करके अपना विरोध प्रकट किया। साइमन हावड़ा स्टेशन पर उतरने वाले थे, पुलिस का जबरदस्त प्रबन्ध था पर ठाकुर अर्जुनसिंह कुली का वेष बनाकर प्लेटफार्म पर पहुँच गए एवं 'साइमन लौट जाओ' का नारा लगाकर गिरफ्तार हो गए। साइमन बहिष्कार के जुलूस का नेतृत्व नलिनि सेनगुप्त एवं सुभाष बोस ने किया।

१९३० ई० के नमक सत्याग्रह में भी करीब १४०० व्यक्ति बड़ाबाजार से जेल गए जिनमें मधुसूदन दास बर्मन, मदनलाल मिश्र, सूर्यवंश सिंह, रामकुमार भुवालका, सीताराम सेकसरिया, जमुनाप्रसाद पाण्डेय, रामचन्द्र भरतिया, महाबीरप्रसाद पोद्दार एवं सतीश दासगुप्त आदि थे। २४ परगना के 'महेश बथान' को केन्द्र बनाया गया। धड़-पकड़ के समय जमुनाप्रसाद पाण्डेय नमक की गरम कड़ाही के साथ ही पोखर में कूदकर फरार हो गए।

१९३६ ई० में आज के प्रभात सिनेमा की जगह एक मैदान था। उसमें पुलिस अत्याचारों के मॉडलों की एक प्रदर्शनी का आयोजन बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय के मन्त्री राधाकृष्ण नेवटिया ने किया और सुभाष बाबू ने उसका उद्घाटन किया। इसी में राधाकृष्ण नेवटिया को जेल भुगतनी पड़ी। १९४० ई० की गांधीजी की व्यक्तिगत सत्याग्रह की योजना में भी बड़ाबाजार का सराहनीय योगदान रहा। बड़ाबाजार कांग्रेस कमेटी की ओर से एक जत्था दिल्ली के लिए पैदल ही रवाना हुआ पर कानपुर में उसे गिरफ्तार कर लिया गया। १९४२ ई० के 'करो या मरो' आन्दोलन के समय अरुणा आसफअली एवं बिहार के सियारामशरण सिंह प्रभृति नेताओं ने राधाकृष्ण नेवटिया के घर एवं प्रेस पर ही छिपे रहकर भूमिगत आन्दोलन चलाए रखा। उसी समय कॉलेज स्ट्रीट से 'डू और डाई, प्रपत्र निकलता था। उसका हिन्दी अनुवाद "करो या मरो" बड़ाबाजार से श्री भालचन्द्र शर्मा और राधाकृष्ण नेवटिया के सम्पादन में निकलता था जिसे गोविन्द गोयनका छापते थे एवं रामेश्वर नोपानी इसकी आर्थिक व्यवस्था देखते थे। कई दिन चलने के बाद प्रेस का पता पुलिस को लग गया एवं गोविन्द गोयनका बन्दी बना लिए गए। आन्दोलन के पक्ष में जोर शोर से जुलूस निकाले गए, सरकारी सम्पत्ति नष्ट की गई। पुलिस दमन भी जोरों पर

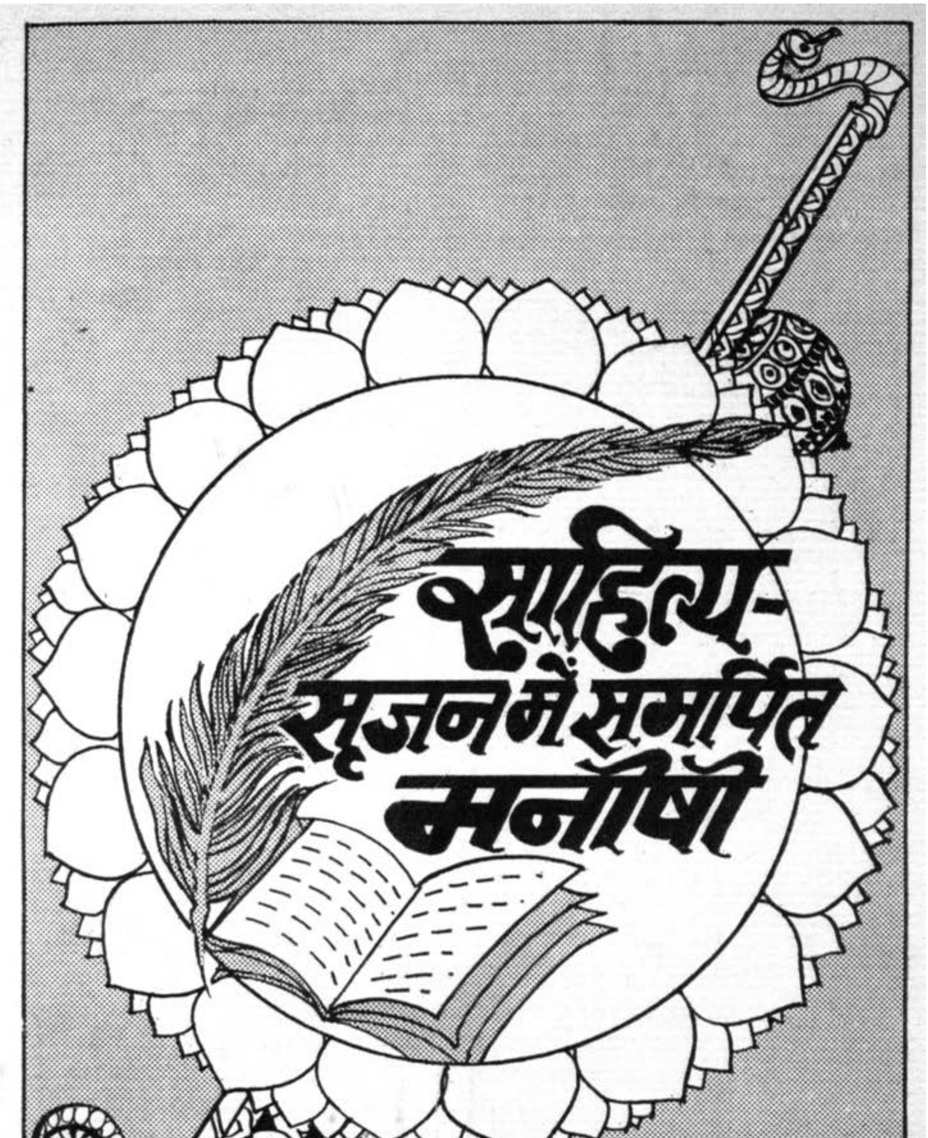
था। एक जुलूस पर पुलिस ने कार्नवालिस स्ट्रीट स्थित आर्यसमाज मन्दिर के सामने गोली चलाई, जिसमें बड़ाबाजार के रामदीन कहार एवं शम्भुनाथ गोली के शिकार हुए, बड़ी संख्या में कार्यकर्त्ता जेल गए। आन्दोलन की समाप्ति पर १९४५ ई० में जवाहरलाल नेहरू कलकत्ता आए, बड़ाबाजार कांग्रेस कमेटी द्वारा उनके स्वागत में खेंगरा पट्टी और ब्रेबार्न रोड के मोड़ पर विशाल जनसभा का आयोजन किया गया जिसमें लाखों लोग शामिल थे। आजादी के पूर्व बंगाल में सुहरावर्दी की सरकार ने खुल्लम खुल्ला साम्प्रदायिक दंगे भड़काए, जगह जगह लाशें बिछने लगी। इस समय भी बड़ाबाजार के कांग्रेस कर्मियों ने अपनी जान जोखिम में डालकर भी हिन्दुओं की प्राण रक्षा की एवं उन्हें सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाया। इसमें स्वामी विश्वानन्द एवं योगानन्द पुरी का सहयोग अविस्मरणीय रहेगा।

आजादी के बाद सत्ता कांग्रेस के हाथ आ गई तो धीरे-धीरे तपस्वी कार्यकर्त्ता कम होते गए। फिर भी बड़ाबाजार कांग्रेस का गढ़ बना रहा। २५ जून १९७५ ई० को सारे देश में आपातकाल की घोषणा कर दी गई एवं प्रेस पर सेन्सरसिप एवं व्यक्तिगत स्वतंत्रता पर पाबन्दी लगा दी गई। इस समय भी बड़ाबाजार चुप नहीं बैठा रहा। लोकनायक जयप्रकाशजी के आह्वान पर चलाए गए आन्दोलन में सैकड़ों कार्यकर्त्ताओं ने सत्याग्रह कर कारावरण किया जिसमें राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ एवं तत्कालीन जनसंघ के लोग प्रमुख रूप से थे। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के बड़ाबाजार के संघचालक वैद्य गोवर्धन शास्त्री ने भी सत्याग्रही जत्थे का नेतृत्व किया। कुमारसभा पुस्तकालय ने राष्ट्रजागरण की अपनी पुरानी परम्परा को नए परिवेश में भी कायम रखा एवं हल्दीघाटी चतु:शती के कार्यक्रम के माध्यम से जनता को निर्भय होकर सरकारी दमन का विरोध करने का आह्वान किया। इसके द्वारा आयोजित दो दिवसीय कार्यक्रमों में जिसका संचालन प्राध्यापक विष्णुकान्त शास्त्री ने किया, जनता उमड़ पड़ी। फलस्वरूप कुमारसभा के अध्यक्ष नन्दलाल जैन को पुलिस गिरफ्तार कर ले गई एवं उनके प्रेस पर ताला लगा दिया गया, इसके मंत्री जुगलकिशोर जैथलिया एवं भूतपूर्व मंत्री विमल लाठ को भूमिगत होना पड़ा एवं कार्यकारिणी के सदस्य सर्वश्री पातञ्जलि शर्मा, रामगोपाल गुप्ता, महावीरप्रसाद बजाज (वर्तमान उपमंत्री) ने सत्याग्रह कर कारावरण किया। पुस्तकालय के वर्तमान अध्यक्ष श्री विनयकृष्ण रस्तोगी ने सत्याग्रह कर एक ही दिन में करीब २० नुक्कड़ों पर भाषण दिए पर पुलिस उन्हें पकड़ नहीं सकी। ऐसे ही अनेक प्रयत्नों में से पुन: आजादी बहाल हुई, सत्ता बदली। पर यह बदल अनेक कारणों से स्थायी नहीं रह सका एवं केन्द्र में इन्दिरा कांग्रेस की पुन: स्थापना हुई।

इन पृष्ठों में हमने बड़ाबाजार में होने वाले गत दो शताब्दियों के परिवर्तनों के विभिन्न आयामों का एवं उनके सूत्रों का लेखा जोखा किया है परन्तु इन परिवर्तनों के पीछे और भी अनेक सामाजिक आन्दोलन रहे हैं यथा बाल-विवाह बन्दी, विधवा पुर्नविवाह, मृतक भोज बन्दी, स्त्री शिक्षा एवं पर्दा हटाने जैसी अनेक कुप्रथाओं को मिटाने के लिए यहाँ के कई कार्यकर्त्ताओं ने अपना जीवन खपाया एव अपमान के कड़वे घूंट स्वयं पीकर आने वाली पीढ़ियों को ऐसे अभिशापों से मुक्त किया। सांस्कृतिक स्तर पर भी गौ रक्षा आदि के लिए व्यापक स्तर पर इस अंचल में आन्दोलन हुए हैं। ऐसे प्रसंग हमने उन-उन कार्यकर्त्ताओं के जीवन-वृत में जोड़े हैं, अत: इतिवृत में उनकी विस्तार भय से ही अलग् चर्चा नहीं की, परन्तु ये सारे वृत रोंगटे खड़े करने वाले हैं, क्योंकि हर परिवर्तन की राह कष्टों की दुर्गम घाटियों के बीच से ही गुजरती है। फिर भी आज का क्रान्तिकारी परिवर्तन भी समय के साथ जब रूढ़ि बनकर खड़ा हो जाता है, तो उसकी भी वही नियति होती है। सम्यक परिवर्तन ही समाज एवं राष्ट्र के प्राण होते हैं।

बड़ाबाजार आज भी अपने सजग एवं परिश्रमी कार्यकर्त्ताओं के भरोसे "चरैवेति, चरैवेति..." के मन्त्र को मुखरित कर रहा है। इस अंचल के इतिहास की सम्यक जानकारी के साथ-साथ कार्यकर्त्ताओं के परस्पर परिचय एवं प्रेरणा के विस्तार हेतु ही इस ग्रंथ के माध्यम से हमारा यह विनम्र प्रयास आपके हाथों में है। ●

—सम्पादक मण्डल


साहित्य-
सृजन में समर्पित
मनीषी

स्व. पं. जुगलकिशोर शुक्ल

हिन्दी-पत्रकारिता के जनक पं० जुगल किशोर शुक्ल का जन्म उत्तर प्रदेश के बैसवाड़ा अंचल में हुआ था।

इनका साहित्यिक कार्यक्षेत्र कलकत्ता और श्रीरामपुर था। शुक्ल जी की सबसे बड़ी ऐतिहासिक देन सन् १८२६ ई० में हिन्दी के प्रथम पत्र 'उदन्त मार्तण्ड' का अपने प्रेस में छाप कर प्रकाशन करना है। अपनी भाषा की स्वाभाविकता से प्रेरित होकर ही इस साप्ताहिक पत्र के मुख-पृष्ठ पर इस के प्रकाशन का कारण निम्नलिखित पंक्तियों में व्यक्त होता है – 'यह उदन्त मार्तण्ड अब पहिले-पहल हिन्दुस्तानियों के हित के हेतु है जो आजतक किसी ने नहीं चलाया, पर अंग्रेजी और फारसी में जो बंगाल में समाचार का कागज छपता है, उससे उन बोलियों के जानने-पढ़नेवालों को सुख होता है। इससे ऐसा समाचार आप हिन्दुस्तानी लोग देख कर पढ़ कर समझ लेवें, पराई अपेक्षा न करें जो अपनी भाषा की उपज न होंगे।'

अपनी भाषा में पत्रकारिता की नींव डालने का साहसिक कार्य शुक्ल जी ने किया और आर्थिक कठिनाइयों को झेलते हुए साहित्य-यज्ञ के माध्यम से समाज को जागृत करने में, विशेष रूप से कलकत्ते के हिन्दी-भाषी समाज को जगाने में, जो पुनीत कार्य किया वह हिन्दी-भाषा और साहित्य के विकास का मूलाधार बना। इस महान साहित्य-सन्त के व्यक्तित्व और कृतित्व के फलस्वरूप ही कलकत्ता को हिन्दी-पत्रकारिता के विकास में अग्रगण्य होने का सौभाग्य मिला। •



स्व. पं. दुर्गाप्रसाद मिश्र

कलकत्ता से सम्वत् १८८३ में पण्डित जुगलकिशोर शुक्ल ने 'उदन्त मार्तण्ड' समाचार-पत्र निकाला। उसके ४६ वर्ष बाद सम्वत् १९२९ में श्री कार्तिक प्रसाद खत्री ने हिन्दी में 'दीप्ति प्रकाश' का प्रकाशन किया। तत्पश्चात् कलकत्ता में इस ओर कुछ प्रभावशाली व्यक्तियों का सम्मिलित प्रयास, झुकाव हुआ। ६ वर्ष बाद सम्वत् १९३४ में पण्डित दुर्गाप्रसाद मिश्र, पण्डित छोटूलाल मिश्र, पण्डित सदानन्द मिश्र और श्री जगन्नाथ खत्री के उद्योग से कलकत्ता में 'भारत मित्र' नामक समिति का गठन किया गया।

हिन्दी के पुराने लेखकों में पंडित दुर्गा प्रसाद मिश्र अपने ढंग के विलक्षण पुरुष थे। कलकत्ता में हिन्दी संवाद-पत्रों की वस्तुतः नींव डालनेवाले आप ही थे। इन्हीं के कर-कमलों से 'भारत मित्र' का प्रथम अंक प्रकाशित हुआ। 'भारत मित्र' के प्रकाशन के दस वर्ष पहिले भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने 'कवि वचन सुधा' नामक पत्र प्रकाशित किया था। आप उसके संवाददाता बन गये थे। इस कारण भारतेन्दुजी से इनका सम्बन्ध उत्तरोत्तर बढ़ता गया और दोनों मित्र बन गये। इन्होंने 'भारत मित्र' छोड़ने के बाद सर्वश्री पण्डित सदानन्द मिश्र, गोविन्दनारायण मिश्र और शम्भूनाथ मिश्र

के सहयोग से 'सार-सुधा-निधि' का सन् १८७६ में प्रकाशन किया। बाद में इन्होंने अकेले ही 'उचितवक्ता' संवत् १६३५ में प्रकाशित किया।

आप के यहाँ प्रायः ही गोष्ठियाँ होती थीं। यों कहा जा सकता है कि इनका निवास ही साहित्यिक स्थान बन गया था जिसमें भाग लेनेवालों में पण्डित-प्रवर गोविन्द नारायण मिश्र, पंडित देवीसहाय पाटनवाले, पंडित सदानंद मिश्र, पंडित जीवानन्द मिश्र, पंडित छोटूलाल मिश्र आदि बड़े-बड़े महारथी, सम्पादक-प्रवर बालमुकुन्द गुप्त एवं अम्बिका प्रसाद बाजपेयी आदि देश की राजनीतिक, धार्मिक एवं सामाजिक स्थिति की आलोचना-समालोचना किया करते थे।

बड़ाबाजार लाइब्रेरी सार्वजनिक साहित्यिक संस्था थी। इसके मकान का ऊपरवाला खण्ड खाली था। उन दिनों राजनीतिक जागरण हो रहा था। इसलिए इससे संबद्ध व्यक्तियों ने 'स्वदेश सेवक मण्डल' का गठन किया, जो राजनीतिक संस्था बनी। माण्डले जेल से रिहा होकर वापस आने पर लाला लाजपत राय का एवं बक्सर जेल से छूट कर आने पर विपिनचन्द्र पाल का स्वदेश मण्डल की ओर से तुलापट्टी-चाँदी के बाड़े में सम्मान किया गया था। दोनों सम्मान सभाओं के अध्यक्ष स्वदेश सेवक मण्डल के सभापति एवं पुराने सम्पादक पंडित दुर्गाप्रसाद मिश्र ही थे।

माघ शुक्ला पूर्णिमा शनिवार, संवत् १६५८ को आपका देहावसान हो गया। ●



स्व. पं. छोटूलाल मिश्र

पण्डित दुर्गा प्रसाद मिश्र के बाद 'भारत मित्र' पत्र के सम्पादन का दायित्व पण्डित छोटूलाल मिश्र ने ग्रहण किया।

पण्डित छोटूलाल मिश्र निर्भीक वक्ता, निःस्वार्थ सेवी तथा हिन्दी भाषा और साहित्य के अनन्य शुभचिंतक थे। 'भारत मित्र' ऐसे बहुमुखी यशस्वी व्यक्तित्व को पाकर भाषा और साहित्य की ही दिशा में ही नहीं, अपितु सामाजिक चिन्तन और राजनीतिक सन्दर्भों में हिन्दी समाज को जागृत करने लगा। इनके सम्पादन काल में 'भारत मित्र' के पाठकों की संख्या बढ़ी। पत्र फला-फूला तथा प्रगति के पथ पर अग्रसर हुआ। स्पष्ट विचारों तथा साहित्य अनुराग से प्रेरित होकर हिन्दी के तद्युगीन ख्याति-लब्ध विद्वानों ने भी इस पत्र में प्रकाशनार्थ अपने निबन्धों एवं विचारों को भेजा। बाबू भारतेन्दु हरिश्चन्द्र जैसे साहित्य साधक के समय-समय पर इसमें प्रकाशित निबन्ध इस बात के प्रमाण हैं।

पण्डित दुर्गाप्रसाद मिश्र के निवास पर साहित्य की चर्चा-परिचर्चा में पण्डित छोटू लाल जी मुक्त रूप से भाग लेते थे। इनकी साहित्यिक, राजनीतिक तथा सांस्कृतिक दृष्टियों से पूरा विद्वत समाज विशेष रूप से

प्रभावित रहता था। पण्डित जी की सबसे बड़ी विशेषता नवयुवकों को साहित्यिक यज्ञ में नियोजित करना था। पण्डित दुर्गाप्रसाद मिश्र के भतीजे पण्डित केशव प्रसाद मिश्र को सम्पादन में प्रेरित करने का सम्पूर्ण श्रेय आप को है।

बड़ाबाजार लाइब्रेरी उन दिनों कलकत्ता में साहित्यकारों एवं विद्वानों के लिए समागम तीर्थ थी। पण्डित छोटूलालजी की साहित्य-सेवा एवं तपस्या के फलस्वरूप ही इन्हें १९०५-६ ई० के लगभग इस लाइब्रेरी का सभापति बनाया गया। इनके सभापतित्व काल में लाइब्रेरी का बहुमुखी विकास हुआ, जिसका प्रमाण पुस्तकालय में सुरक्षित है।●



स्व. बाबू बालमुकुन्द गुप्त

सन् १८६५ ई० कार्तिक शुक्ला ४ को हरियाना (पंजाब) के 'गुड़ियानी' नामक कस्बे में बाबू बालमुकुन्दजी गुप्त का जन्म हुआ था। इनके पिता का नाम लाला पूरनमलजी था। जब ये विद्यार्थी थे, तभी इनके लेख उर्दू अखबारों में स्थान पा चुके थे।

गुप्तजी राष्ट्रीयता के प्रबल समर्थक, भारतीय संस्कृति के अनुयायी, कट्टर सनातन धर्मी, बड़े निर्भीक और साहसी व्यक्ति थे। कांग्रेस की स्थापना के साथ ही आप साहित्य में स्थापित हो चुके थे। यद्यपि इनका साहित्य में प्रवेश उर्दू के माध्यम से हुआ पर फिर वे विविध विधाओं से हिन्दी का अलख जगाते रहे।

पण्डित मदनमोहन मालवीय, पण्डित प्रतापनारायण मिश्र, शशिभूषण चटर्जी, अमृतलाल चक्रवर्ती गुप्तजी को बटन-होल में सजा कर रखते थे। 'अखबारे चुनार', 'कोहेनूर', 'हिन्दोस्थान', 'बंगवासी' और 'भारत मित्र' के सम्पादन के बाद गुप्तजी की धाक हिन्दी जगत में जम गयी। अंग्रेजी शासन के आसन को हिला देने के भय से इन्हें 'हिन्दोस्थान' अखबार (जिसके कभी मदनमोहन मालवीय भी सम्पादक थे) की सेवा से अलग होना पड़ा। गुप्तजी हिन्दी पत्रकारिता की नैतिकता के शिखर पर थे। देश-जाति तथा राष्ट्र को जगाने के लिए इनकी लेखनी आग उगलती थी। इनकी भाषा पर मुग्ध होकर पण्डित रामचन्द्र शुक्ल अपने 'हिन्दी साहित्य के इतिहास' में लिखते हैं— 'वे अपने विचारों को विनोदपूर्ण वर्णनों के भीतर ऐसा लपेट कर रखते थे कि उनका आभास बीच-बीच में ही मिलता था। उनके विनोदपूर्ण वर्णनात्मक विधान के भीतर विचार और भाव लुके-छिपे से रहते थे। यह उनकी लिखावट की एक बड़ी विशेषता थी।'

गुप्तजी पैदा हुए हरियाना (पंजाब) में और जवान हुए बंगाल की धरती पर। बंग-भंग के प्रश्न को लेकर देश में जागृति की जो लहर आयी थी, उसको आगे बढ़ाने में हिन्दी पत्रों में गुप्तजी का 'भारत-मित्र' ही अग्रणी था। गुप्तजी बड़ाबाजार पुस्तकालय के शुभ-चिन्तकों में से थे। १८ सितम्बर ईस्वी १९०७ भाद्र शुक्ला ११ संवत् १९६४ को गुप्तजी का दिल्ली में स्वर्गवास हुआ।●